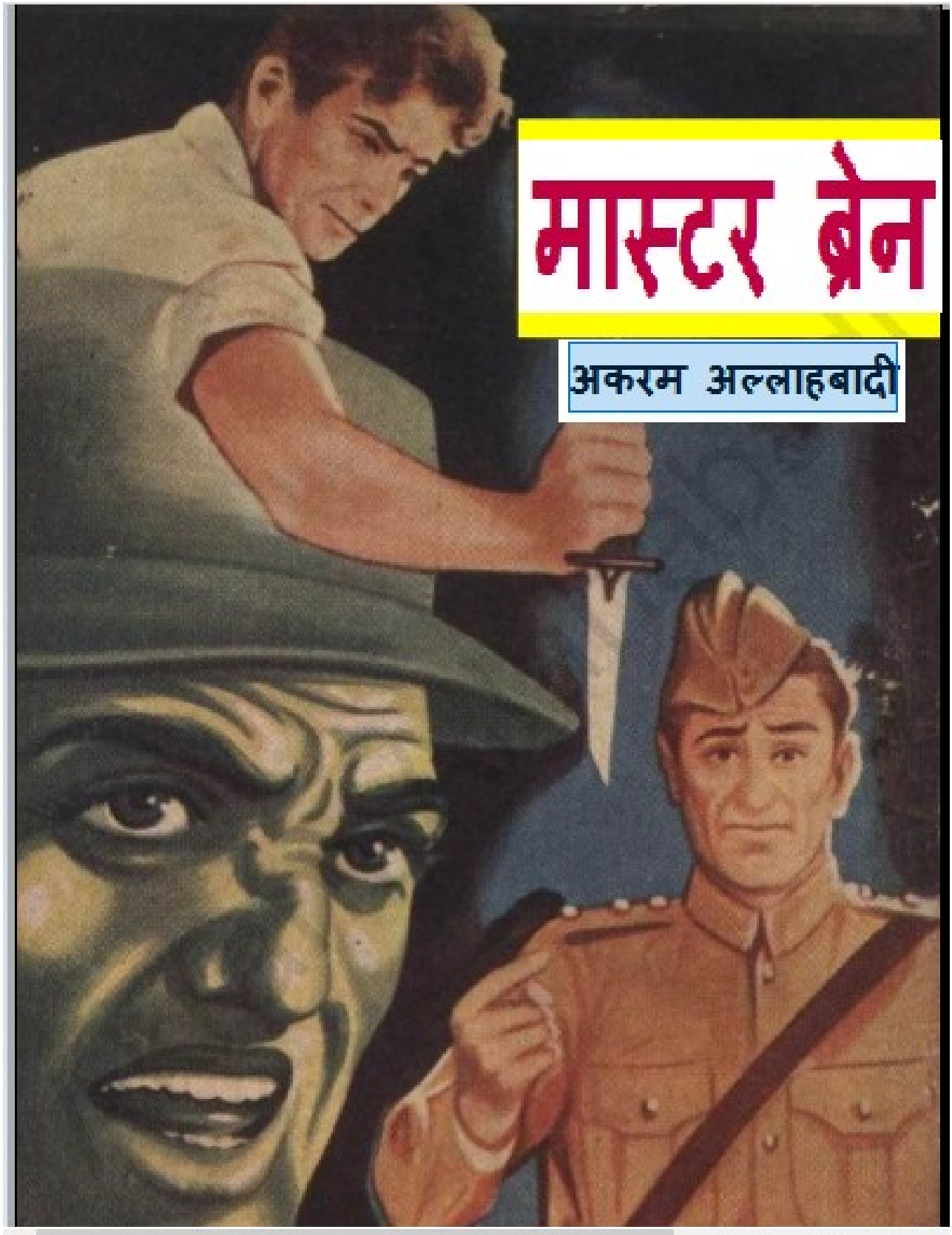
मास्टर ब्रेन
अकरम अल्लाहबादी

मास्टर ब्रेन

डिटेक्टिव सर्कल सीरीज

अकरम अल्लाहबादी

फरहत प्रकाशन मुंबई - भारत

2

मास्टर ब्रेन

सभी अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित हैं।

इस उपन्यास में वर्णित सभी घटनाएँ, स्थान और पात्र काल्पनिक हैं। इनसे किसी भी प्रकार की समानता पूर्णतः संयोगवश है। प्रकाशक, प्रकाशक और मुद्रक ऐसी किसी भी समानता के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

इस उपन्यास के पुनर्मुद्रण, अनुवाद या अन्य प्रयोजनों के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है, अन्यथा कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

प्रिंटर : ---- मुंबई भारत

3

रिहर्सल

"घड़ीघड़ी मेरा दिल धड़के ..

'हाय धड़के ...

"क्यों धड़के ...

"जाओ धड़के ...

पिया मिलन अलबेला मेरी आँख फड़के ...

"क्यों फड़के …

अबे जाओ धड़के

हाँ, जाओ धड़के , साले जाओ धड़के ...

लेकिन इससे आगे , शायद वह गीत के बोल भूल गया और उनके गले में ब्रेक लग गया ।

उस समय उसे देखने वाला अपना पेट पकड़ा लेता ।

दरवाज़े-खिड़कियाँ सब बंद थे और शौकत कमरे में अकेला था। सामने आईने वाली मेज़ पर परी बेगम की एक तस्वीर लगी थी, जिसमें वो हक़ीक़त से कुछ ज़्यादा ही खूबसूरत लग रही थीं। और शौकत दोनों हाथ सीने पर रखे अपनी बेसुरी आवाज़ में गा रहा था। आजकल फ़िल्मी प्रेम गीतों का भूत उस पर ज़ोरों से सवार था, जो किसी न किसी तरह उसके जज़्बातों को बयां कर रहे थे। जो किसी न किसी तरह निकल ही जाते थे

जब बहुत कोशिशों के बावजूद कोई नई कविता नहीं सूझी, तो उन्होंने तस्वीर पर एक हसरत भरी नज़र डाली और गले और नाक से सारंगी बजाते हुए दिलीप कुमार बन गए। शायद याददाश्त ने एक नया रिकर्ड बना दिया था।

मास्टर ब्रेन

4

"मुहब्बत करके भी देखा कि मुहब्बत में भी धोखा है। सरासर धोखा है।"

"यहाँ वफ़ाई का बदला बेवफाई के अलावा और क्या मिलता है?"

हाय , किसी से प्यार करना..

किसी पर भरोसा न करना ..

साले पे एतबार न करना..

साले प्यार की ऐसी तैसी ...

अरे, परी बेगम की भी ऐसी तैसी .. अल्लाह और देग ... ।

उस अंतिम वाक्य के साथ, उन्होंने परी बेगम की छवि को उलट दिया और एक गहरे सोच - विचार में खो गया ।

यह परी बेगम पिछले एक साल से अपने एक नग पिता के साथ शौकत के सिर पर सवार थी। उसके पिता का दावा था कि वह अपनी पिछली पीढ़ियों के हिसाब से शौकत की खानदानी विरासत मे शौकत के चचा ज़ान हैं.है। तमाम मौसियों-चाचाओं और पिछली पीढ़ियों के रिश्तों का हिसाब-किताब थोड़ा पेचीदा होता है।

हालांकि, यह सच है कि वह भोपाल के ज़मींदारों में से एक थे और जब पिछले साल वह अचानक बंबई आने के बहाने शौकत के घर आए थे, सिर्फ़ उनके रिश्ते का पता लगाने के लिए, तब से वह अपनी पूरे रोबदाब के साथ यहीं रह रहे थे। बंबई के हुस्न ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि लौटने का विचार ही छोड़ दिया था। खैर, यहाँ तक तो ठीक ही था , पर इस बदकिस्मती को क्या कहा जाए कि परी बेगम निहायत खूबसूरत औरत थीं। एक खूबसूरत जिस्म के साँचे में जिस्म ढला हुया था ।

और उसका हुस्न , क्या कहने । तेज़ तर्रार इतनी कि शौकत या तो उनके सामने बेज़ुबान सांड बन जाता या फिर खोईपडी से आऊट हो जाता, और शौकत के लिए यही मर मिटने की जगह थी।

मास्टर ब्रेन

5

जब वो फ़िल्मी पत्रिकाओं में खूबसूरत लड़कियों की तस्वीरें देखकर आहें भरता था, तो मानो ये तो जीती जागती क़यामत थी । उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी औरतें थीं, और जब औरतें क़यामत हों, तो ज़ाहिर है उसकी मनःस्थिति कैसी होगी। अपनी तमाम मेहरबानी के बावजूद, परी बेगम उसके लिए एक कुनेनी मिश्रण का घूँट साबित हुई थीं, एक ज़हर जिसे उसे मुहब्बत के बुखार को बुझाने के लिए गटकना ही था, और वो उसे गटक भी नहीं पा रहा था। जब भी शौकत कई हिंदुस्तानी फ़िल्में देखने या कई रोमांटिक उपन्यासों के प्रभावशाली संवाद याद करने के बाद उसके सामने अपने जज़्बातों का अभ्यास करने बैठता , तो वो उसका ऐसा मज़ाक उड़ाती कि शौकत डूबने के लिए पानी ढूँढने लगता। कल भी, लव मैरिज नाम की एक फ़िल्म देखने के बाद, वो दिल में एक पक्का इरादा लेकर घर लौटा, और परी बेगम को देखते ही, उसे बताने के लिए उस फ़िल्म का एक गाना गुनगुनाने लगा।

"एक नज़र में ही दिल बेचारा हो गया पीडब्ल्यूडी... ऊँ हूँ ...

एक नज़र में ही दिल बेचारा हो गया, एलएलबी नहीं... हाँ डबलिउ डबलिउ.....

और आज मैंने खेला जी , तुम्हारे साथ क्रिकेट मैच खेला... बस एक नज़र और मेरा दिल हो गया डबल डबल... हो हो हो.. डबल डबल... चों चे चो चो चो...

"आज तुम गुनगुना रहे हो ? " बड़ा अच्छा मूड बना है आज। --परी ने अपनी हंसी को नियंत्रित करते हुए और उस पर एक कातिलाना मुस्कान फेंकते हुए कहा।

"नहीं... मेरा मतलब है, यह लव मैरिज नहीं है... यह उनका गाना है।

"ओह, मैं समझी -- तुम मुझे कुछ सुना रहे थे।" परी बेगम ने बड़ी गंभीरता से कहा।

"तो कुर्सी और मेज को सुना रहा था?" शौकत ने बेबसी से कहा।

अच्छा, तो फिर सुनाईए... सुनाईए ना? वह इठला कर बोली , "मैंने ठीक से सुना नहीं, पर क्या ही खूबसूरत धुन थी। -- उसने बच्चों जैसा मुँह बनाकर कहा

, "अरे, क्या वही था साला -- एक नज़र में ही दिल बेचारा हो गया, ... हाँ डबलिउ डबलिउ..... ..."

" नहीं, बल्कि एलबीडब्लू होगा ."

"हाँ हाँ... यही तो मैंने कहा था, एलबीडब्लू"

"इसका क्या मतलब है?"

ए लो , मतलब मत पूछो , फिल्मी गीतों का भी कोई मतलब होता है भला ... ।

"तो फिर तुम मुझे क्या समझ के सुना रहे थे, कुछ समझ रहे थे?"

"अरे, वह हीरो साला हेरोइन को सुना रहा था, तो मैंने भी गुनगुनाना शुरू कर दिया। इसमें क्या हुआ?"

"तो आप मुझे नहीं सुना रहे थे?"

मैं हवा सुना रहा था , दीवार को सुना रहा था, अच्छा, चलो, मैं तुम्हें ही सुना रहा था फिर?

अच्छा, अच्छा, तो आप हीरो जैसे हो। --वह ऐसे गरम कर देने वाले अंदाज़ में हंसी कि शौकत की सीधी होती हुयी खोपड़ी फिर घूम गई।

"क्या तुम मुझे चूहा समझती हो? क्या तुम मुझे गधे का बच्चा समझती हो?" वह कुछ ज़्यादा बिगड़ गया।

"मैं आपको बिल्कुल भी कुछ नहीं समझती ," परी बेगम ने धीरे से कहा और वो सूली पर चढ़ गया ।

हाएँ , यानी कुछ भी नहीं समझती क्या? मुझे? तो आगे बढ़ो, तुम्हें भी कौन समझता है? ठेंगे से ....

उसने परी बेगम को अंगूठा दिखाया और गुस्से में बाहर चला गया। परी बेगम पीछे से उस पर हँस पड़ीं। और उसे सिर पर हथौड़ों की आवाज पड़ती हुयी सुनाई दी।

उसके बाद, परी बेगम से कुछ कहने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई। दरअसल, उनके सामने शौकत खुद को उल्लू का पट्ठा ही महसूस करने लगता था, इसलिए उसने कल से

मास्टरियन

7

उसके साथ खाने की मेज़ पर बैठना छोड़ दिया था। नवाब साहब ज़मींदार थे, लेकिन ज़मींदार की सालाना आमदनी दो हज़ार रुपए थी, लेकिन चूँकि भोपाल के ज़्यादातर ज़मींदार सरकारी वंशावली के ज़रिए किसी न किसी तरह नवाब के ख़ानदान से जुड़े हुए थे, इसलिए परी बेगम के वालिद ने भी यहाँ अपनी पहचान नवाब साहब के तौर पर बना ली थी और शौकत को भी कोई एतराज़ नहीं था क्योंकि किसी ज़मींदार का मेज़बान बनने से ज़्यादा इज़्ज़त एक नवाब साहब का मेज़बान बनना होता। शौकत के सारे नौकर भी इन बिन बुलाए मेहमानों की हुकूमत से नाख़ुश थे, लेकिन नौकरों की ज़बान पर परी बेगम, परी बुआ बन चुकी थीं। और वो सीधे या परोक्ष रूप से शौकत की खोपड़ी पर सवार थीं। इसलिए उन्हें भी सब करना ही था ।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि इंसान जितना ज़्यादा किसी ऐसी चीज़ के पीछे भागता है जो उसकी पहुँच से बाहर हो या जिसे पाना मुश्किल हो, उतना ही ज़्यादा उसके पीछे भागता है। शौकत के साथ भी यही हुआ। परी बेगम से उसकी जितनी ज़्यादा नफ़रत बढ़ती गई, वह उतनी ही ज़्यादा उसे परेशान करने लगी।

और जब वह इस टेढ़ी खीर को सीधा नहीं कर सका, तो एकांत में उसकी तस्वीर के साथ अपने प्रेम का इज़हार करने लगा। अब यह अलग बात है कि इसके लिए उसने मधुमती का एक गीत गढ़ लिया था।

सार्जेंट बाले कई दिनों से गायब थे। अगर वो होते, तो शायद शौकत की मोहब्बत को किसी और दिशा में मोड़ देते और शौकत के देवदासपना थोड़ी कम हो जाता । लेकिन बाले एक केस में इतने उलझे हुए थे कि कई दिनों से शौकत से मिले ही नहीं थे। जब शौकत से मिले, तो पता चला कि वो ऑफिस में नहीं थे, कहीं गए हुए थे।

दरवाजे पर दस्तक सुनकर उसकी आवाज गले में अटक गई।

"कौन है?" उसने जल्दी से पूछा। साथ ही, उसने परी बेगम की तस्वीर उठाकर मेज़ पर से उठा कर

दराज में रख दी ।

"मियां, मैं शम्मू हूं," बाहर से आवाज आई।

मास्टर ब्रेन

8

ओह, धत्त तेरे की , मेरे निजी कमरे में तुम्हारे बाप ने क्या गाढ़ के रखा है ... ?

“मियाँ, बाले साहब आ गए हैं,” शम्मू ने बाहर से जवाब दिया।

"क्या? अबे नहीं .... खा अलाह की कसम?" शौकत ने अंदर से चौंकते हुए पूछा।

आपके सर की कसम , मियां - परी बुया से बात कर रहे है। ---शम्मू ने बाहर से कहा।

और शौकत ने तुरंत दरवाज़ा खोल दिया।

"वे किससे बात कर रहे हैं? वे किस बारे में बात कर रहे हैं?"

परी बुया से, आपके ड्राइवींग रूम में।

अबे , अगर ड्राइग रूम बोलना नहीं आता , तो इंग्लैंड रिटर्न काहे को बनता है ।

यह कहते हुए शौकत थोड़ा जला हुया ड्राइंग रूम में पहुँचा । बाले वहीं थे। वह और परी बेगम बैठे बातें कर रहे थे। परी बेगम को उसके साथ देखकर शौकत को गुस्सा आ गया।

"और कहो, 'खान बाले भाई,'" उन्होंने हैले को संबोधित करते हुए मुंह बनाया।

"अरे आओ भाई, मैं तो बस तुम्हारा ज़िक्र कर रहा था।" बाले ने उस पर मुस्कुरा कर कहा।

" मर गए अपना ज़िक्र करने वाले ---, शौकत ने परी बेगम को तिरछी नज़रों से देखते हुये कहा

और बाले के पास सोफे पर बैठ गया।

"क्या बात है, प्यारे - तुम थोड़ी उखड़ी बात कर रहे हो ?"

" जैसे अल्लाह ने उन्हें बनाया है बिल्कुल वैसे ही दिखते हैं , तुम्हें क्या .... ?"

"क्यों, क्या आपने इसका दिल दुखाया है क्या? बाले ने परी बेगम की तरफ़ देखकर कहा,

"मैं ऐसा क्यों करने लगी, मैं इनकी कोई होती हूँ क्या ..... ? परी बेगम ने गहरी साँस ली।

मास्टर ब्रेन

9

"वो जो किसी क्या कहा..

"बस, मैं समझ गया। आप ज़रूर कोई ट्रेजड़ी " फ़िल्म देखकर आए होंगे।

हाँ... और मैंने एक प्राण भी उस में देखा था। बिल्कुल तुम्हारे जैसी एसएचकेएल थी साले की , भाई।

शौकत ने गरम स्वर में कहा।

"तो फिर उसका क्या हुआ?"

क्या होगा, यानी सच का बोल बाला और झूठ का मुंह काला । डाइरेक्टर ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया और विलेन बेटा रह गए नापते ।

"अच्छा, अच्छा, तुम्हें फिल्म दोबारा देखनी चाहिए, मेरे जैसे नहीं दिखता होगा ।"

"अरे जाओ मियाँ ख़ान, तुम पुलिसवाले जन्मजात विलेन होते हो।"

"सुना आप ने? --परी बेगम ने जलती आग में और घी डाला। --और अपनी हमदर्दी ज़ाहिर कीजिए ।-- वह बाले को संबोधित कर रही थी और शौकत की ओर इशारा कर रही थी।

"कोई बात नहीं, मेरे दोस्त दिमाग से थोड़ा पैदल है, लेकिन उसका दिल हाथी का है।"
बाले में शौकत की प्रशंसा की गई थी।

"तुम खुद होगे पैदल मियां खान। और हाथी भी और ऊंट भी ।"

:आप लोग शिकायतें करो, मैं चाय बनाकर भेजती हूँ। --यह कहकर परी बेगम मुस्कुराती हुई उठकर चली गईं और शौकत को एहसास हुआ कि अच्छा हुआ कि वह बाले के रास्ते से हट गईं।

"तुम्हें मेरी जड़ें काटते हुए शर्म नहीं आती? --शौकत अब बाले पर बरस पड़ा।

अरे, बेवकूफ़, मैं तो तुम्हारी जड़ें मज़बूत कर रहा था। बाले हँसा और बोला।

10

मास्टर ब्रेन

"मुझे मत बनाओ , मियां खान। मुझे पता है तुम्हारी राल हर जगह टपकने लगती है।"

" लो ,इसे देखो , यह कहाँ टपकती है। --बाले ने अपना मुँह खोला और ज़ुबान दिखाई ।

शौकत और बिगड़ गया -- "आप ऊपर से मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं।"

"तुम बड़े उल्लू हो। खुदा जाने कि तुम अपनी माँ के पेट से घास खाकर पैदा हुए थे या .... ।

"बस बस इतना ही, बकवास मत करो।

"मैं तो बस उनसे कह रहा था कि शौकत जैसा दिलफेंक और नेक इंसान मैंने आज तक नहीं देखा।-- बाले ने संजीदगी से कहा ।

ती=ओ क्या होता है नेक होने से ? वो राजा इंदर की बेटी तो मेरा मज़ाक उड़ा रही है ना?

"तुम्हें छेड़ती है।"

"अरे, तुम क्या जानो मियां खां, ये तो सिर सहलाओ और भेजा खाओ वाला मामला है।"

तो उसे गोली मारो, वो नहीं, और सही , और नहीं, और सही ।

शौकत ने गहरी सांस लेते हुए कहा, " और भी काँ मिल रही है ।"

"क्यों? क्या तुम प इन दिनों होटलों में जा नहीं रहे ?

"अकेले अपना दिल नहीं चाहता ,

"खैर, तुम भी क्या याद करोगे कि कोई दोस्त तुम्हारे काम आया था।"

"कहे का काम आया था? शौकत को समझ नहीं आया।

"आज मैं तुम्हें एक ऐसी लड़की से मिलवाऊंगा जिसे देखते ही तुम शहीद हो जाओगे।"

"अरे मैं...? शौकत को यकीन नहीं हुआ।

"आपके इश्क़ के जुनून की कस्म"

" कब जाएंगे?

मास्टर ब्रेन

11

मैं शाम को मोनजिनी के हाल में साढ़े पाँच बजे तुम से मिलूंगा, लेकिन शर्त यह है कि मैं

जैसा मैं कहूँ वैसे ही होना चाहिए ।"

" कहीं फंसा तो नहीं रहे ? "

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?"

" है तो , मगर पूरा नहीं है।"

"अल्लाह इसे पूरा करेगा, नेक इरादे रखो, चलो, मैं तुम्हें सब कुछ समझाता हूँ।"

"चलो --वह उठ खड़ा हो गया.

****

12

नया हमदर्द

शौकत के इन दिनों होटल मोनजिनी के मैनेजर से अच्छे संबंध थे, इसलिए जब शौकत अंदर आया, तो उसने खुद उसे इशारा किया कि सार्जेंट बाले हॉल के कोने में एक मेज पर उसका इंतज़ार कर रहे हैं। शौकत ने दूर से देखा, बाले अकेला था। उस समय हॉल में ज़्यादा भीड़ नहीं थी। कुछ मेजें भरी हुई थीं और कुछ ही मेजें खाली थीं। बाले उस समय अपने सादे कपड़ों में था और उसकी नज़र उस मेज पर थी जहाँ एक अधेड़ उम्र का आदमी सिर झुकाए बैठा ऑरेंज स्क्वैश की चुस्कियाँ ले रहा था। उसने साधारण कपड़े पहने हुए थे। वह एक मूल ईसाई लग रहा था। उसके सिर पर एक पुरानी टोपी थी और बगल में एक छड़ी पड़ी थी। बाले ने शौकत को दूर से ही इशारा किया कि वह उस आदमी के बगल वाली खाली मेज पर बैठ जाए और वह खुद ऐसे लग रहा था जैसे उसने उससे पूछा ही न हो। लेकिन शौकत की नज़रें हॉल में उस खूबसूरत लड़की को ढूँढ़ रही थीं, जिसकी उम्मीद बाले ने उसे दी थी। हॉल में कुछ मेज़ों पर कुछ औरतें और लड़कियाँ भी बैठी थीं, साथ ही कुछ पुरुष भी, लेकिन उनमें से कोई भी उस तरह की खूबसूरती नहीं थी जिसे देखकर गश आ जाए। शौकत ने एक बार अविश्वास भरी नज़रों से बाले को देखा, लेकिन बाले ने उसे धैर्य रखने का इशारा किया, और उसने धैर्य रखने की कोशिश की। उसने अपनी कलाई घड़ी देखी, तो उसमें सात बजकर पाँच मिनट हो रहे थे। और शौकत को चिंता थी कि वह खूबसूरत खिड़की कैसी दिखेगी, जिसकी बाले ने इतनी प्रशंसा की थी ।

खैर, लड़की आती हुई तो नहीं दिख रही थी, लेकिन होटल का दरबान उसके पास आकर खड़ा हो गया। "क्या हुक्म है, सर?" उसने विनम्रता से पूछा।

13

हुक्म हाकिम मुर्गे मज़ाज़ात - , शौकत को एक पुस्तक का एक अंश याद आ गया।

"सर, मैं समझ नहीं पाया।"

" क्या समझोगे , ये पढे लिखे लोगों की बातें हैं?

"साहब , ऑर्डर करें

"दो आने के भुने हुए चने ले आओ।"

"सर, यह एक होटल है।"

"तो मैं कब उसे चिड़ियाघर कह रिहा हूँ ?"

"[लेकिन साहब, यहाँ छोले नहीं मिलेंगे। किसी भड़भोंजा की दुकान पर चले जाइए।

"कहे कु जाओ, हमें सलाह देने वाले तुम कौन होते हो? चिडी के गुलाम – "शौकत को अचानक गुस्सा आ गया.

"ये रोआब किसी और को दिखाओ साहब , सूट-बूट भी किसी चोर बाज़ार का होगा । हूँ दो आने के चने -- , ब्रेयरा बड़बड़ाने लगा ।

"चोप ...यू ब्लाडी प्लास्टर, --शौकत, गुस्से में ऊँची आवाज़ में चिल्लाया। और हॉल में मौजूद सभी लोगों का ध्यान उसकी ओर चला गया।

"क्या बात है, सर?" एक आदमी ने उसके पास आकर पूछा।

"बात वात गयी तेल लेने । मैंने इस साले को दो आने चने मँगवाए तो उसने कहा कि सूट भी चोर बाज़ार से लाया है।-- शौकत ने उसे अपने गुस्से की वजह बताई।

"सही ही कहा होगा। कहीं से आवाज़ आई, पर जब शौकत ने पलट कर देखा तो सब खामोश हो गए।

"कौन है बे ? आगे आओ रुस्तम के बेटे, मेरे पीछे क्या बक रहे हो? शौकत की खोपड़ी उखाड़ गयी और वो सचमुच नियंत्रण से बाहर हो गया।

"लेकिन साहब, यह तो होटल है। सोचने वाली बात है, यहाँ छोले कैसे मिलेंगे?" पास आए आदमी ने धीरे से समझाया।

तो मैनेजर ने ये बोर्ड क्यों लगाया है, मतलब जो चाहिए वो मिलेगा? शौकत ने बोर्ड की तरफ इशारा किया और वो लोग भी उस तरफ देखने लगे।

इस बीच, मोनजिनी का मेनेजर खुद आ पहुँचा। बाले ने उसे इशारा कर दिया था। वह गुस्से में दिख रहा था।

"शौकत साहब, आज फिरआप ने गड़बड़ मचाई होटल में ?" आते ही बोला।

"ए लो आए हिमायती अपने सगे के ।"

"पर इसने गलती क्या की ?

"मुझे छोले चाहिए। बस। बस छोले ले आओ। अगर नहीं आए तो ये बोर्ड उल्टा लटका दो ।" शौकत अकड़ गया

"देखिए, साहब, यह होटल है, अगर आप यहाँ इज्जत से बैठना चाहते हैं, तो यहीं बैठिए, वरना वो रास्ता है," मैनेजर ने सख्त लहजे में कहा। बाकी लोग चुपचाप इस दिलचस्प भिड़ंत को देख रहे थे।

"तुम मुझे रास्ता दिखाओगे, मैं खुद तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा, हज़ार बार दिखा सकता हूँ। तुम्हारे इस होटल का कितना दाम है?" शौकत ने जेब में हाथ डालते हुए कहा, मानो अभी पूरी कीमत चुका देगा।

"आपने पहले भी कई बार ऐसी ही बात कही है, मगर कुछ हुआ नहीं," मैनेजर ने उसे और भी अधिक उत्तेजित कर दिया।

क्या? तो तुम मुझे शेख़ चिल्ली समझते हो?" उसने शेखीखोर की बजाय शेख़ चिल्ली बोल गया और तुरंत एक मेज़ से जवाब आया ।

किसी ने कहा था।-- शक्ल से ही कुछ ऐसी ही है।

"मैं पूछ रहा हूँ, इस होटल की कीमत क्या है?"

"केवल दो लाख," मैनेजर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"बास ... इसी पे इत्ते एंठ रहे थे ? मियां खान," शौकत ने तिरस्कार भरी नज़रों से उसे देखते हुए जवाब दिया, अपनी चेकबुक निकाली और तुरंत मेज़ पर बैठ कर दो लाख का चेक काट दिया।

"इसे लो, रास्ता नापो और अभी, अभी, इसी वक्त । -- उसने चेक उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा। लोग उसकी इस हरकत पर हैरानी से उसे देखने लगे। उन्होंने उसे कभी इतना इज्जतदार आदमी नहीं समझा था, लेकिन आम तौर पर लोग उसे पागल समझते थे। मैनेजर भी हैरान रह गया। शायद बाले ने उसे यह नहीं बताया था कि अगर शौकत पागल हो गया , तो बात यहाँ तक पहुँच सकती है।

तू... .. मगर साहब - मैं मालिक नहीं हूँ, यानी हॉटक का मालिक नहीं हूँ । मैनेजर ने चौंक कर कहा

"ई लो , इतने सारे शरीफ़ लोगों के सामने अपनी बात बादल कर तुम धोखेबाज़ी कर रहे हो।" शौकत ने दूसरों की तरफ़ इशारा किया।

"हाँ, हाँ, साहब, अब यह होटल असूलन उनका हो गया है। शौकत के लिए कुछ आवाज़ें उठीं ।

"लेकिन मुझे नहीं पता था कि आप इसे खरीद लेंगे।"

शौकत ने गर्व से कहा, "किसी ने कहा है कि घमंड का सिर नीचा होता है, मैंने तुम्हारा सिर नीचे और टांगें ऊपर कर दीं ।"

"हालांकि, मुझे खेद है कि मेरे पास इसे बेचने या न बेचने का अधिकार नहीं है। अगर आपको इसे खरीदना ही है, तो इसके मालिकों से मिलिए।"

"हे भगवान, मैं उन से क्यों मिलूँ? बस ये दो लाख रुपए ले लो और दफा हो जाओ।" शौकत बोला।

मास्टर ब्रेन

16

बाले दूर से तमाशा देखकर मुस्कुरा रहा था।

"लेकिन सुनिए तो , साहब... एक आदमी ने शौकत को मैनेजर के पक्ष में समझाने की कोशिश करना शुरू कर दिया

"काहे को सुनू ? मैं किसी की नहीं सुनता।" शौकत ने अकड़ दिखाई ।

"हाँ, हाँ, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, आप सही कह रहे हैं। --अचानक, पास की मेज़ पर बैठा वही अधेड़ उम्र का आदमी तेज़ी से उठा और उसके पास आकर, समर्थन में बोला।
और नहीं तो ..., ऐसी ईमानदारी की बात होनी चाहिए।

"ठीक है, मुझे थोड़ा समय दीजिए ताकि मैं मालिकों को फोन कर सकूं और उनसे पूछ सकूं " मैनेजर ने विनम्र स्वर में कहा।

"ठीक है, पूछो, ज़रा सोच-समझकर पूछो, लेकिन मैं होटल खरीदकर रहूँगा ।" यह कहकर शौकत उसी कुर्सी पर बैठ गया। वह अधेड़ उम्र का आदमी उसके सामने खड़ा था। वह बड़ा ही विनम्र लग रहा था.

"बैठो, बैठो। तुम ही तो इन सबके बीच एक अच्छे आदमी निकले हो। ---शौकत ने उसकी तारीफ़ की और वो उसके सामने बैठ गया।

मैनेजर वापस लौट आया और चुपचाप ऑफिस में जाने में ही ब हलाई समझी , लेकिन बेयरा अभी भी वहीं खड़ा था । उसे अपनी नौकरी की चिंता हो रही थी। अगर मालिक बदल गया तो क्या होगा?

"मियां... माफ़ करना मियां - मुझे क्या मलूम था आप इतने बड़े आदमी हो। "हुजूर, दो आने क्यों ? मैं तो एक पैसे में भी चने लाने को तैयार हूँ।" वह चापलूसी भरे लहजे में माफ़ी मांगने लगा।

"अबे, क्या तू भी भोपाली हैं?" शौकत ने चौंकते हुए पूछा।

"जी मियां, मेरे तो सात पुश्तें भोपाली हैं। और आप तो भोपाल के कोई नवाब ही होंगे । "

17

मास्टर ब्रेन

माफ़ कीजिएगा। नवाबों की यही शान है कि रियासत उजड़ जाए, मगर मूंछें नीची न हों।" उस ने शौकत की ऐसी तारीफ़ की कि बैठे-बैठे उसका वज़न दो पौंड बढ़ गया।

“साले भोपाली भी कहीं छिपते हैं ” शौकत हंसने लगा ।

नहीं मियां, नहीं छिपते हैं , वो अपने नवाब साहब एक बार लंदन में महारानी विक्टोरिया से मिलने उसके दरबार में गए थे। महारानी विक्टोरिया ने पूछा, "बताइए मियां कैसे हैं?" उन्होंने कहा, " आपकी दवा (दुआ) मेरे पास है, बस जी रहा हूँ।" बस मियां, महारानी विक्टोरिया ने तुरंत उनकी ज़बान पकड़ ली कि आप भोपाल के नवाब के अलावा कुछ नहीं हो सकते। --------बेयरे ने भोपाल से अपना नाता दिखाने के लिए कहानियों का दफ़्तर खोल दिया । मगर फिर खुद ही पूछने लगा -।

"लेकिन, मियां, बम्बई में वे अपनी घोड़ागाड़ी को विक्टोरिया क्यों कहते हैं?"

"और लो ... इत्ता भी मालूम नहीं , -- शौकत ने अपनी समझदारी दिखाई। "हाँ, जब जब रानी यहां आईं तो उन्होंने इस गाड़ी में सवारी की, जिसके कारण इस गाड़ी का नाम उनके नाम पर रखा गया।

"ओह ऐसे... ? ... भला, श्रीमान, मैं एक अज्ञानी आदमी इतनी बड़ी बातें कैसे जान सकता हूँ?"

"ठीक है, जाओ मेरे लिए एक संतरा ले आओ और इनके लिए .... ? , उसने अधेड़ उम्र के आदमी को अपनी आँखों से देखा।

" नहीं नहीं, इस झंझट की क्या ज़रूरत है, हजूर ? --अधेड़ उम्र के आदमी ने खुशामद करते हुए कहा।

“ ए लो , , झंझट बंझट कहे का ? । आपको कुछ पीना ही पफड़ेगा ---- यानि की जो किसी शायर ने कहा,----

ए ज़ाक, तकलीफ में तकल्लुफ है सरासर,

"तो जो आप पिएंगे, वही मैं पी लूंगा।"

"ठीक है, तो ख़ान, दो ले आओ," शौकत ने बेयरा से कहा। और उसने

तत्परता दिखाते हुए, अपना सिर झुकाया और तुरंत चले गया ।

"आपने मैनेजर के मुँह पर ऐसा तमाचा मारा है कि वह ज़िंदगी भर याद रखेगा।" वह आदमी शौकत को बाँस पर और आगे धकेलने लगा।

"अरे, ये क्या है, मैं ऐसे एक दर्जन होटल खरीद सकता हूँ। साला मेनेजर मुझे पट्टी पढ़ा रिहा था ।

"आप बहुत नेक मिज़ाज हैं। --वहउस की तारीफ़ करने लगा और शौकत इस तरह हँस पड़ा जैसे उसके दिल की बात कह दी गई हो।

"मुझे ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व बहुत पसंद हैं। मेरा नाम फाल्कन है। मैं यहाँ आयात-निर्यात का व्यापार करता हूँ। क्या आप मेरा निमंत्रण स्वीकार करेंगे? कल रात आठ बजे।"

"अरे नहीं... तुम तो शर्मिंदा कर रहे हो यानि की --। शौकत ने अपनी नैतिकता दिखा दी।

"नहीं , मेरा दिल मत तोड़ो आप ।" वह पीछे हट गया और साथ ही जेब से कार्ड निकालकर शौकत की तरफ़ बढ़ा दिया।

उन्होंने कहा, "हम बेचैनी से आपका इंतजार करेंगे।"

शौकत को "हम" शब्द सुनकर झटका ज़रूर लगा, पर उसके चेहरे पर इसका कोई असर नहीं दिखा। बाले की संगत में उसने अभिनय का इतना कुछ तो सीखा ही था।

"ठीक है, ठीक है, मैं कोशिश करूंगा।

"कोई कोशिश नहीं, वादा करिए।"

"मैं आऊंगा, ठीक है?"

इसी बीच बेयरा संतरा जूस ले आया और वे दोनों उसे पीने लगे।

****

मास्टर ब्रेन

19

तावीज़त हिन्द

मोनजिनी से आते समय बाले भी शौकत की कार में बैठे थे।

"काँ मर गयी आपकी सुन्दर भाभी ?"

" सब्र करो बेटा, सब्र का फल मीठा होता है।

“ कए का सब्र मबर , मैं अब कभी तुम्हारी बात में नहीं आऊँगा । वो मैंनेजर डर गया साला ।

नहीं तो दो लाख रुपये भी फंस गए थे मेरे ।"

"क्या इस आदमी ने तुम्हें डावात दी अहै ?" बाले ने उसकी बात सुनने के बाद पूछा।

"हाँ, लेकिन तुम्हें कैसे पता चला?"

"मैंने उसे अपना कार्ड देते हुए देखा।"

हाँ, दी है.

"बस तो वहां आपको दर्शन होंगे।"

"किसके ?"

"यह खूबसूरत चौखटे के "

"तो फिर कोई चक्कर चला रहे हो तुम ?

' खुद ही देख लेना "

अरे, तुम कहीं फंसा तो नहीं रहे मुझे ?

"चिंता मत करो, बेटा। जब तक मैं यहाँ हूँ, तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है।"

हैं , डर किसको है? कोई वो समझा है.... यानि की यानि .... कुछ नहीं ।

"तो, मैं कल 8 बजे पहुँच जाना ।"

"तुम कए कु नहीं चलते मेरे साथ में ? "

"गधे हो पूरे "

"तुम खुदा होगे मियां खां, ज़रा अपनी ज़बान संभालो।

"बुरा नहीं मानते , डियर सुख्ट। अगर मैं चला गया, तो तुम्हारा सारा खेल बिगड़ जाएगा। लेकिन तुम निश्चिंत रहो, तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा।"

"खैर, अल्लाह मालिक है। शौकत ने हैरानी से कहा।

"लेकिन ये चक्कर क्या है, बाले भाई? --उसके मन में फिर सवाल उठा।

" अभी तो मुझे भी पूरा पता नहीं, पर कल पता चल जाएगा। खैर, -- बाले बने उत्तर दिया

शौकत ने बाले को हिदायत दी, "परी बेगम से उस लड़की का ज़िक्र मत करना।"

"क्यों? क्या तुम उससे डरते हो?"

"डर काये कु , लेकिन वह नाराज़ हो जाएगी।

"तो क्या वह तुमसे प्यार करती है?"

"नहीं करती थी, तो क्या हुआ? मुझे तो अब भी पसंद है ।

"तो फिर तुम ऑक्टोपस की तरह हर जगह अपने हाथ-पैर क्यों फैलाते रहते हो?उसके नाम का वज़ीफ़ा क्यों नहीं पढ़ते ? "

"ए लो , मेरी बात मानो मियाँ, ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है। अल्लाह ने दुनिया बनाई कए के लिए है ? "

"इस समय तो तुम पूरे दार्शनिक मालूम होते हैं।

" मेरा तो येही फ़लसफ़ा है, मियाँ ख़ान। किसी शायर ने क्या खूब कहा है:---

ऐश करले दुनिया में गाफिल ज़िंदगी कहाँ मिलती है ,

और नौ जवानी फिर काँ मिलती है

मास्टर ब्रेन

21

"वाह, वाह, क्या खूब कहा है ! ---बाले ने उसकी शायरी का मज़ाक उड़ाया। --कोई दिलवाला शायर मालूम होता है ।

"केवल दिलवाले वाले ही शायर हुया करते हैं।

"अरे नहीं, सब नहीं होते । कुत्ते तो साले रोते ही रहते हैं। एक ग़ज़ल में दस जगह मौतें होंगी, जनाज़ा भी उठेगा, और फिर वहीं बैठ हैं , बेशर्म बनकर। ---शौकत ने अपने अंदाज़ में शायरों को लताड़ दिया ।

"कुछ काम के भी हैं.

“ लो काए के काम के, लेकिन बुलबुल बन गए, कुछ लोग प्रियतम के आलिंगन में घुस गए... यानी विरह में कुछ लोग एक ही नजर में मारे गए, और कुछ लोग शहीद होकर कब्र में दफन हो गए लेकिन अंदर से अब भी बोल रहे है।"

"अब तुझ जैसे गधे से कौन बहस करे ?" बाले ने बुरा सा चेहरा बनाते हुए कहा।

"मियां खान, ये शेर शायरी है, कोई ताबीज़ात ए हिन्द नहीं है जो तुम्हारे काम आएंगे।

शौकत ने उसे अपनी तरफ से सबसे तगड़ा जवाब दिया, लेकिन बदकिस्मती से उसने अभी तक किसी किताब में भारतीय दंड संहिता नहीं पढ़ी थी, और कुछ ऐसा ही सुना था। बाले ने अब तक संयम से काम लिया था, लेकिन इस ताबीज़ात ए हिन्द पर वह हँसे बिना नहीं रह सका।

"अरे, अब तुम शर्मिंदगी मिटाने के लिए हंस रहे हो।" शौकत ने उसकी हंसी का मतलब अलग अंदाज़ में समझते हुए कहा।

" खैर गाड़ी रोको, मैं यहीं उतरता हूँ। --बाले ने एक खुले मैदान में रुकने का इशारा किया।

" लो , -- शौकत ने ज़ोर से ब्रेक लगाए और गाड़ी रुक गई। बाले गाड़ी से बाहर निकला।

" और देखो, परी बेगम के सामने ज़्यादा छिड़ी के गुलाम बनाए की कोशिश मत करना की ज़्यादा गुलामी मत करना।---बाले ने चलते हुए उसे समझाया।

मास्टर ब्रेन

22

क्या मतलब है तुम्हारा? शौकत ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

"बेटा, ज़रूरत से जियादा नखरे उठाने से औरत का दिमाग खराब हो जाता है।--उसने पास आकर कहा.

"अरे, लेकिन वह तो अभी लड़की है, वो औरत काँ से बन गई ।

"खुदा की कसम, तुम बेवकूफ ही नहीं उल्लू भी हो। --यह कहकर बाले उसको हक्के-बक्के छोड़ चला गया। उसने सुना भी नहीं कि शौकत कार स्टार्ट करते हुए उसकी कई पुश्तों को उल्लू बना चुका था । वैसे, शौकत के दिमाग में एक नया ख्याल आया, शायद बाले को भी इससे कोई मतलब नहीं था। मसलन, वह उसे ऐसे ही भड़का सकता था, पर नहीं, कोई बात नहीं, दोस्त है, ऐसा नहीं कर सकता। यह सोचकर उसने इस भ्रम को मन से निकाल दिया और अपनी कार के साथ एक अनजान, खूबसूरत लड़की की सोच में डूब गया।

****

"आपका आदेश पूरा हो गया है, महाराज। बाले ने अपनी टोपी उतार कर रखी और कहा ।

और खान के सामने बैठ गया ।

"लेकिन कहीं वो गधा घबरा न जाये? ?" खान ने एक पल सोचा और कहा।

बाले ने जवाब दिया, "वह अब इतना गधा भी नहीं रहा।"

"अब तुम केवल इन लोगों की निगरानी करेंगे।"

"आप ऐसे बात कर रहे हैं जैसे मैं उन्हें जानता हूं।

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, आप सिर्फ शौकत का पीछा करें और आपको सब कुछ पता चल जाएगा।

मास्टर ब्रेन

23

"इसकी भी क्या ज़रूरत है? इस आदमी ने शौकत को जो कार्ड दिया था, उसकी कॉपी मैंने अपनी नोटबुक में रख ली है। ये रहा उसका पता। बाले ने जेब से नोटबुक निकालकर उसके सामने रख दी।

खान ने उसे देखा, उस पर लिखा था: फाल्कन डी'क्रूज़ थर्ड फ्लोर 24 शेफर्ड रोड -

"तो उनके पते भी हर बार बदलते रहते हैं। --खान ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"दूसरी बात, अब तो मुझे यह बताईए कि यह चक्र क्या है?"

"बात छोटी सी लगती है, पर है बहुत बड़ी। जल्दी मत करो, सब खुद ही समझ जाओगे।

खान ने उसे इस अंदाज में बताया कि उसे समझ आया की अब कोई सवाल करना बेकार है। वह इस समय कुछ नहीं बताएगा।

"अगर मुझे इजाजत हो तो क्या मैं आज इस पते की जांच कर सकता हूँ?"

"आज कुछ नहीं मिलेगा और कल शौकत को दिए गए वक़्त से पहले कुछ नहीं करना चाहिए, वरना सारा खेल बिगड़ जाएगा। वो बहुत चालाक हैं और उनके तरीके भी उतने ही अजीब और रहस्यमय हैं।

"क्या हमने शौकत को कहीं सूली पर तो नहीं चढ़ाया?"

" नहीं, वो इस हद तक भी ख़तरनाक नहीं हैं, बल्कि हैं, असल में, वो कानून की हद तक भी ख़तरनाक नहीं हैं, इसीलिए मुझे ये तरीक़ा अपनाना पड़ा। वो जो चाहे करते हैं, लेकिन अगर पुलिस उन्हें पूरी तरह से पकड भी ले, तो भी क़ानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। कानून की पूरी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँच सकती है, ---खान ने कहा।

क्या आपका मतलब है कि इस बार आपका सामना ऐसे लोगों से हुआ है जो कानून तोड़ने वाले नहीं हैं?

' हाँ यही सोचो।"

"तब तो फिर टेढ़ी खीर है, कुछ ऐसे मामले जो कानून के दायरे में नहीं आते, हम उनका क्या कर सकते हैं?" बाले ने निराशा से कहा।

"इसीलिए ये नाटक खेला जा रहा है। हालाँकि उन पर हाथ डालने के लिए काफ़ी पापड़ बेलने पड़ेंगे ,

"हम क्यों? क्या यह गुलाम रसूल, खानसामां नहीं है?"

"क्यों?" खान चौंक गया।

"पापड़ बेलने को ? और फिर पापड़ खाना कोई अच्छा शौक भी नहीं है।"

"खोपड़ी उलट गयी है तुम्हारी .

"मैं इन दिनों सचमुच कम बात करना शुरू कर रहा हूँ।"

"लेकिन मैंने भी शॉर्टहैंड का इस्तेमाल शुरू कर दिया है।" खान ने अपना हाथ उठाया।

"समझ गया, मैं बिलकुल समझ गया। --यह कहकर वह सोफे से उछलकर दूर खड़ा हो गया।

खान ने गंभीरता से कहा, "जाओ, अपने कपड़े बदल लो, हमें कहीं चलना पड़ेगा।"

"मैं बहुत भूखा हूँ और आप जानते हैं कि भूखा आदमी...

"सरकार, मैंने आपको खाने से मना नहीं किया है, जाओ और जल्दी करो। क्या हुआ, क्या देख रेह हो ? जाओ ---और जल्दी करो?

"मुझे खाना चबा कर खाने की आदत है, इसलिए मैं प्रत्येक भोजन में कम से कम हर निवाला को पांच मिनट लगेगा और आपको इंतजार करना होगा.

"तुम जा रहे हो या नहीं, सुअर काही के ?"

मास्टर ब्रेन

25

लटकती लाश

लगभग एक घंटे बाद, खान की निजी कार आधी रात को टर्नर रोड पर जा रही थी। खान और बाले दोनों, कार में आगे की सीटों पर बैठे थे। खान अपनी कार खुद चला रहे थे।

"जब हत्या के मामलों से फुर्सत मिली, तो आप ने ये नया चक्कर शुरू कर दिया। --बाले बड़बड़ाने लगा ।

"व्यस्त रहना ज़िंदगी की निशानी है।"

"आपको पुलिस की नौकरी छोड़ देनी चाहिए और चुनाव लड़ना शुरू कर देना चाहिए।"

"क्यों?

"ये राजनीतिक विचार ऐसे लोगों को पसंद आते हैं।

"ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी चीज़ है, बाले साहब।

"ये सोचना आपका काम है, मेरी किस्मत में तो असिस्टेंटी ही लिखी है ।

"हमारे कानून में ऐसे कई छेद हैं जो लोगों को बच निकलने का रास्ता देते हैं।

"मैं आपकी बात समझ नहीं पाया।

"कुछ प्रकार के अपराध ऐसे हैं जो कानून की पहुंच से बाहर हैं।"

"लेकिन क्या उनका हमारी शाखा से कोई संबंध है?"

"यहां होने वाले हर अवैध अपराध का संबंध हमारी शाखा से हो सकता है।"

लेकिन आप उन अपराधों को अवैध क्यों कहते हैं जो कानून की पकड़ में नहीं आते?

"उनको ही तो पकड़ में लाना है ।"

"यानि यह जबरन की ठेकेदारी है।"

"आप यह समझ सकते हैं, लेकिन एक रहस्यमय समूह ने शहर में बड़ी अशांति फैला दी है।"

"हा.. तो अब आप इसे भी समझाइए।"

"मैंने कहा, 'सब कुछ अपने आप आपके सामने आ जाएगा।'"

"फिर गोल कर गए ।-- बाले ने धीमी आवाज़ में कुछ कहा, लेकिन ख़ान ने कोई जवाब नहीं दिया।

उनकी कार ऑस्टिन गैराज से कुछ दूरी पर एक शानदार इमारत के परिसर के प्रवेश द्वार से कुछ दूरी पर रुकी।

"आइये, मैं तुम को एक आदमी से मिलवाता हूँ जिसे शायद पहचान जाओ ।"--खान ने कार से उतरते हुए कहा, "चलो।"

"यह तो रतन चंद का घर है, जो पागल हो गया था।

"क्या तुम उसे जानते हो?"

"जाहिर है, कम से कम पुलिस एक प्रसिद्ध धनी नागरिक से परिचित होगी।

"खैर, आम जनता को इसकी ज़्यादा जानकारी नहीं है। पुलिस पिछले कुछ दिनों से ऐसा कर रही है।

"हम इस मामले से उसके पागलपन के बारे में जानना शुरू कर रहे हैं।"

"लेकिन मैं उसे उसकी शानदार कार की वजह से जानता था। पागलपन का क्या मामला है ?

"उस समय हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं था। बस इस इलाके में एक छोटी-सी घटना हुई थी। पुलिस स्टेशन ने ने ही निपट लिया था, लेकिन कल मुझे इसके बारे में सोचना पड़ा।

"अपने पल्ले कुछ नहीं आ रहा । .

रतन चंद ने अपनी एक मिल पर कई लोगों से लाखों रुपये उधार लिये थे।

मास्टर ब्रेन

27

और ये बात नोट करने वाली है कि जहां रेशमी कपड़ों का उत्पादन होता है उस मिल की कुल कीमत दो लाख से अधिक नहीं है।

"तो अक़्ल के अंधों ने उसे लाखों रुपये कैसे उधर दिये?"

" बताया ना कि उसने अलग-अलग पार्टियों से उधार लिया था, और उनमें से प्रत्येक को इस तथ्य की जानकारी नहीं थी कि किसी और ने भी उसको उधार दिया हुआ था।

"लेकिन रत्नचंद खुद भी बड़े रुतबे वाले आदमी थे। ये आलीशान कोठी, ये 22,000 की गाड़ी।--बाले ने आश्चर्य व्यक्त किया.

"दिलचस्प बात ये है बाले साहब, ये घर असल में एक ऐसे आदमी का है जो रतन चंद के नाम पर अपना घर कराकर पाकिस्तान चला गया था। क्योंकि रतन चंद ने अपना पाकिस्तानी घर उसके नाम करा दिया था। हालाँकि, बाद में पता चला कि वो धोखेबाज़ था। रतन चंद सिंधी था और शरणार्थियों के साथ कराची से समुद्री रास्ते से यहाँ पहुँचा था। शुरुआत में वो यहाँ सबको दुहाई देता था कि पाकिस्तान में न सिर्फ़ उसका एक बहुत बड़ा और आलीशान घर है, बल्कि वो उसमें एक तिजोरी भी छोड़ गया है, जिसमें एक लाख रुपये से ज़्यादा की नकदी है। उसने झटपट उसे पाकिस्तान पुलिस को सौंप दिया था ताकि जायदाद बदल सके, लेकिन यहाँ इस करोड़पति को भिखारियों की तरह जीना पड़ रहा है। उसने रेशम मिल के मालिक हशमतुल्लाह को ऐसे दस्तावेज़ भी दिखाए जिनसे उसकी बात पुख्ता हो गई। रतन चंद भी हशमतुल्लाह के कर्मचारी बन गए और जल्द ही उन्हें उनसे लगाव हो गया - हशमतुल्लाह के रिश्तेदार पाकिस्तान गए हुए थे और उन्हीं दिनों यहाँ सांप्रदायिक दंगा भड़क

उठा, जिससे घबराकर हशमतुल्लाह ने इस घर और रेशम मिल की रजिस्ट्री रतन चंद के नाम पर कर दी और इसके बदले में कराची स्थित उनके घर के कागज़ात और संपत्ति हस्तांतरण का एग्रीमेंट लेकर पाकिस्तान चले गए। तब से लेकर आज तक, 9 साल बाद भी यह घर रतन चंद का ही माना जाता है।

मास्टर ब्रेन

28

और उन्हें रतन चंद सिल्क मिल के नाम से जाना जाता है, और हाल ही में उनकी कर्जदारी का खुलासा तब हुआ जब उन्हें एक पागल कुत्ते ने काट लिया और परिणामस्वरूप वे पागल हो गए।

"शायद अगर ऐसा नहीं हुआ होता, तो मुझे नहीं पता कि कितने जहाज डूब गए होते।"

"नहीं, बाले साहब की इस पागलपन के पीछे कोई और ही चाल थी। इस तरह उन्होंने अपना मुफ़्त का मकान और रेशम मिल गँवा दिया, और लाखों रुपए गँवा दिए। उन्होंने ऐसा किया है। क्योंकि उनके पागलपन की खबर सुनकर सारे कर्ज़दार टूट गए और ज़ाहिर है कि अगर धोखाधड़ी साबित भी हो जाए, तो पुलिस पागल आदमी पर क्या कार्रवाई करेगी, सिवाय इसके कि उसे डॉक्टरी जाँच के बाद पागलखाने भेज दिया जाए।"

"तो क्या वह पागलखाने में है?

"हाँ

"लेकिन आपको इन सब परिस्थितियों के बारे में कैसे पता चला?"

"अधीक्षक कोर्डे ने धोखाधड़ी की जांच की और इस संबंध में,वे परिस्थितियाँ ज्ञात हो गईं। उन्होंने मुझे बताया।"

"तो आज अचानक इस मामले में कौन से रहस्य आपके दिमाग में आये?"

"रतन चंद पागलखाने से भाग निकला है।

"फिर क्या हुआ? वह पागल हो गया होगा और भाग गया होगा।"

"नहीं साहब, पागल लोग किसी अंगरक्षक को रिश्वत नहीं देते, और वह रिश्वत देकर वहां से निकलने में कामयाब रहा।"

"तो क्या पागलखाने में उसके पास पैसे थे?" बाले ने पूछा।

"अब तुमने कुछ बुद्धिमानी से काम किया है।"

मास्टर ब्रेन

29

"हालाँकि पागलखाने में ऐसा करना नामुमकिन है, लेकिन किसी ने ज़रूर बाहर से ये पैसे उसके पास पहुँचाए होंगे। और इस तरह उसके होश ठीक हैं ये साबित हो गया।"

"बिल्कुल। --खान ने उन्हें बोलना जारी रखने का अवसर दिया।

"तब सवाल उठता है: वह कौन था जिसने उसे पैसे पहुंचाए, और इसका उत्तर केवल वह व्यक्ति ही दे सकता है जिसने रिश्वत ली थी।"

खान ने कहा, "फिर भटक गये।"

अब वे परिसर की दीवार तक पहुँच चुके थे। उन्होंने देखा कि परिसर के दरवाज़े पर कोर्ट रिसीवर की आधिकारिक मुहर भी लगी हुई थी। यह मुहर एक बड़े तले पर उसको सील करने के लिए लगाई गई थी।

"आओ, इस दीवार के पार चलें," खान ने आगे बढ़ते हुए अंधेरे में रुकते हुए कहा।

"हम अब एक गैरकानूनी काम कर रहे हैं," बाले ने कहा। "आखिर, इसके लिए अनुमति भी तो ली जा सकती थी?"

"जब कुछ समझ न आए, तो चुप रहो।-- खान का स्वर तीखा था।
दीवार ज़्यादा ऊँची नहीं थी। जब उसका हाथ उस पर पहुँचा, तो वह आसानी से ऊपर उठ गए।

वे दीवार के पार पहुँचे और अगले ही पल वे उस अहाते के अंदर थे जहाँ हर तरफ़ अँधेरा था। कोर्ट रिसीवर के कब्ज़े के बाद, यहाँ सब कुछ सरकारी रंगों से रंग दिया गया था और रतन चंद के कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया गया था।

परिसर में फूलों की क्यारियाँ थीं, जो उसे कई रास्तों में बाँट रही थीं। खान आगे-आगे चल रहा था और बाले उसके पीछे-पीछे। इमारत का बरामदा भी अँधेरा था, बल्कि पूरी इमारत अँधेरी थी, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो खान पहले भी यहाँ आ चुका हो, या इसी इमारत में आया हो।

30

वह बिना रुके पोर्टिको के पास से गुज़रा और बरामदे में दाखिल हुआ। वहाँ पहुँचकर उसने कुछ देर तक चुपचाप साँस रोके रखी, लेकिन घास में लगे किनारों की चरमराहट के अलावा उसे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दी।

यहाँ भी प्रवेश द्वार बंद था और उस पर सरकारी मुहर लगी थी। खान ने अपनी जेब से टॉर्च निकाली और उसकी सीमित रोशनी में देखने लगा।

"हैं , , यह रास्ता नहीं हो सकता," उसने हल्के स्वर में बुदबुदाया।

"तो फिर क्या आसमान से सीढ़ियाँ उतरी होंगी? बाले उकताए स्वर में बोला ।

"एँ...?" खान चौंका -- हाँ, ये भी मुमकिन है। ठीक है, तुम यहीं रहो, लेकिन परिसर पर नज़र रखना। अगर वो लोग अभी तक यहाँ नहीं पहुँचे हैं, तो अभी आ जाएँगे।" खान ने बाले को रुकने का आदेश दिया।

"और यदि वे आ जाएं तो मुझे क्या करना चाहिए?

"नाक पर अपनी उंगली रखना और नाच करना ।मरदूद कहीं के --, 'अब मैं तुम्हें इतनी सी बात भी बताऊं? '" खान नाराज हो कर बोला ।

 "मेरा मतलब है, इस वक़्त में क्या मुझे एक्शन की आज़ादी होगी , तो मेरा मतलब यही है?"

"कैसा एक्शन? हमें देखना होगा कि वे यहाँ क्यों आते हैं।

"और उनका यहाँ आना क्या ज़रूरी है?"

"यह बिल्कुल ज़रूरी है। मैं कल रात भी यहीं फँसा था, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि वे शायद बाहर से रात का हाल-चाल ही देख रहे होंगे और कोठी को बाहर से पूरी तरह खाली पाकर शायद आज उसमें घुसने की कोशिश करेंगे।

31

लेकिन आप किसकी बात कर रहे हैं?

"रतन चंदा और उनके साथियों की।"

"रत्नचंद यहाँ क्यों आने लगा?"

"वह यहां जरूर आएंगे.

"लेकिन कारण?

"अरे, ज़्यादा बहस मत करो। किसी वजह से मुझे हवा में तीर चलाने की आदत नहीं है।

" बेहतर है। मैं तो सिर्फ़ हुक्म का गुलाम हूँ। बाले का स्वर उदास हो गया।

"तू तो पूरा गधा है। अच्छा, पहले मैं आसमान से इसका रास्ता देखता हूँ, फिर मैं तुम्हें तैयार रहने को कहूँगा। वाह!

यह कहकर खान बरामदे से नीचे उतरा और अँधेरे में गायब हो गया। बाले बरामदे में आया और घर के चारों ओर फैले अँधेरे को घूरने लगा।

एक मिनट बाद, खान इमारत के दाहिने हिस्से से पाइप का सहारा लेकर ऊपर चढ़ रहा था। इस तरफ़ घना अँधेरा था, और अगर परिसर से रोशनी भी आती, तो यह जगह नही दिखती । पाइप पर चढ़ते हुए उसने कोई आवाज़ भी नहीं की। उसके जूते उसकी जेबों में थे और उसके कान चारों तरफ़ से आ रही आवाज़ें सुन पा रहे थे।

आख़िरकार वह छत पर पहुँच गया। यहाँ, थोड़ी-थोड़ी दूरी पर, तीन रोशनदान थे, जो शायद तीन अलग-अलग कमरों के रहे होंगे। वह एक रोशनदान की ओर दौड़ा, जिसके शीशे पर नीचे से एक मंद रोशनी पड़ रही थी। शीशा गंदा था और उसमें से झाँकना मुश्किल था। ऐसे मौकों पर, ऐसी ख़ास ज़रूरतों के लिए, उसके पर्स की जेब में पड़ा हीरे का पेन काम आया। वह अक्सर काम आता था। उसके ज़रिए,

मास्टर ब्रेन

32

उसने कांच का एक टुकड़ा काटा और उसमें से झांकने लगा।

लेकिन जैसे ही उसने अंदर देखा तो वह दंग रह गया।

आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित एक कमरे के अंदर, छत पर लगे हुक से एक शव लटका हुआ था।

उसने चौकोर रोशनदान के एक तरफ़ का पूरा कच तोड़ दिया। अब वह आसानी से रोशनदान में घुस सकता था और उसके पार कमरे में झाँक सकता था, और उसने यही किया।

उसका शक सही निकला। यह लाश चंद की थी। लग रहा था कि उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। तभी उसकी नज़र करीब लुड़की हुयी मेज़ के पास पड़ी ।एक तह किया हुया कागज़ नज़र आया , उसने उसे उठाया। रतन चंद की लाश भयानक लग रही थी और शरीर इतना भद्दा लग रहा था कि उसे देखना नामुमकिन था। फांसी की वजह से उसकी जीभ गले तक आ गई थी और आँखें बाहर निकल आई थीं। उसके पैर बिल्कुल ढीले होकर लटक रहे थे। उस समय उसने एक साधारण पीले रंग का कपड़ा पहना हुआ था।

अगर कोई और होता, तो इस अंधेरी रात में इस सुनसान इमारत में इस लाश को देखकर उसके रोंगटे खड़े हो जाते, लेकिन खान के लिए यह कोई नया संयोग नहीं था। उसने पहले भी ऐसे मामले देखे थे। अब उसने कागज़ खोला और कमरे की मंद रोशनी में उसे पढ़ना शुरू किया। कुछ शब्द, कुछ विराम, जिनमें उसने अपनी आत्महत्या की बात कबूल की थी:--

मुझे होश आ गया है और मैं इस अपमान की बजाय मौत को पहल देता हूँ, इसलिए मैं आत्महत्या कर रहा हूँ। मेरी सारी संपत्ति मेरे लेनदारों में बाँट दी जाए। --- रतन चंद।

ख़त पढ़ने के बाद ख़ान ने एक बार शव की तरफ़ देखा। फिर अचानक उसका ध्यान उस

पलटी हुई मेज़ की ओर चला गया। अगर वह ज़्यादा भारी नहीं थी, तो ज़्यादा हल्की भी नहीं लग रही थी।

उसने उसे दोनों हाथों से उठाकर सीधा करने की कोशिश की, लेकिन इसमें बहुत ताकत लगानी पड़ी। उसने मेज़ को उसी तरह पीछे झुका दिया जैसे वह पड़ी थी। अब वह कमरे का मुआयना करने लगा, जिसमें दो बंद खिड़कियाँ और दो दरवाज़े थे, जिनमें से एक अंदर से बंद लग रहा था, लेकिन दूसरा अंदर से खुला और बाहर से बंद लग रहा था। वह किसी सोच में पड़ गया। फिर उसने अंदर से बंद दरवाज़े की कुंडी खोली और उसे धक्का दिया, तो वह अँधेरे में खुल गया। खान ने टॉर्च जलाई और आगे

बढ़ने लगा। यह एक गलियारा था जो एक दालान जैसे इलाके में खत्म होता था। यहाँ से सीढ़ियाँ नीचे जाती थीं। वह सीढ़ियों से नीचे उतरता रहा, लेकिन उसे कमरे के बाहर से इस दिशा से इस दरवाज़े तक जाने वाला कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया। नीचे वह एक दालान में आकर खड़ा हो गया। उसे यहाँ कोई नहीं मिला। घर सुनसान था, लेकिन अब तक उसने जितने भी हिस्से देखे थे, उनमें उसे किसी तरह की अव्यवस्था नहीं दिखी थी। फर्नीचर हर जगह ज़रूरत के हिसाब से और सही तरीके से रखा हुआ था। जब वह इस हॉल के एक दरवाजे से गुजरा, तो उसने उस कमरे में एक टूटी हुई खिड़की देखी, और वह उस पर कूद गया और फिर खिड़की खुल गई। अब वह एक छोटे, संकीर्ण, अंधेरे कमरे में खड़ा था जहाँ हर जगह टूटी हुई चीजें थीं। उसने इस कमरे में एक खिड़की भी देखी, जिस पर उसे कोई बल प्रयोग नहीं करना पड़ा, क्योंकि धक्का देते ही यह खुल गई। और जिस जगह से वह अंदर गया वह दीवार के बाहर की जमीन थी जो लैंडिंग के अंत में शुरू होती थी। उसने खिड़की को ध्यान से देखा और महसूस किया कि इसमें दोहरे कब्जे थे जो एक साथ काम करते थे, जो अंदर और बाहर दोनों तरफ से खुलते और बंद होते थे। जैसे ही वह बाहर आने वाला था, एक परछाई तीर की तरह उसकी ओर दौड़ती हुई आई और बेखबर खान पर टूट पड़ी । खान इस अप्रत्याशित हमले के लिए तैयार नहीं था,

34

मास्टर ब्रेन

इसलिए वह खुद को संभाल नहीं पाया और साया उसकी छाती पर आ गिरा। खान ने अचानक एक हाथ से उसकी नाक पर मुक्का मारना चाहा, लेकिन उसका हाथ अचानक रुक गया।

"अरे मूर्ख, ये मैं हूँ, ये मैं हूँ। --उसके ऐसा कहने पर गुस्से की बजाय हँसी आ गई और वो परछाई उछलकर दूर चली गई। -

"इसका मतलब है, यह आप थे," बाले के गले से एक दबी हुई आवाज निकली।

"और क्या तुम्हें लगा कि तुमने शेर को मार दिया है?" खान ने उठते हुए और अपने कपड़े झाड़ते हुए कहा।

"अँधेरे में मैं क्या समझता ? " मैंने सोचा। "मैं अचानक उसे ऐसे पकड़ लूँगा कि आवाज़ भी न सुनाई दे। मुझे गोली चलाने की ज़रूरत भी न पड़े ,"

"वाह, शुक्र है तुमने पहले गोली चलाने की नहीं सोची।"

"लेकिन आप आसमान से ज़मीन पर कैसे पहुँचे? जाओ।

"हमारे प्रयास व्यर्थ थे, बेटा, मेरा अनुमान सही था, लेकिन उसने हमसे पहले ही अपना 'काम कर लिया ।"

आपका क्या मतलब है?"

"अंदर रत्नचंद का शव एक कमरे में छत से लटका हुआ है। ज़ाहिर है, सभी परिस्थितियाँ ऐसी लग रही हैं कि उन्होंने आत्महत्या की है, लेकिन मेरा मानना है कि उन्हें नोट लिखवाने के बाद फांसी पर लटका दिया गया।"

"कमाल है, यहाँ भी एक मर्डर केस सामने आया है। अरे, चलो इसे सुसाइड ही मान लेते हैं, ठीक है? लो, एक आदमी आया। अरे, चलो इसे सुसाइड ही मान लेते हैं। कौन सा वह अच्छा आदमी था.

"क्या आपका फर्ज़ आपको यही सिखाता है?"

" यह सिखाता है कि आपको मासिक वेतन मिलना चाहिए और विलासितापूर्ण जीवन जीना चाहिए, लेकिन अपनी ऐसी किस्मत कहाँ?

मास्टर ब्रेन

35

"बको मत , मेरे साथ आओ।"

"कहाँ ? वापसी ? "

"हाँ

"और उसकी लाश ऐसे ही लटकी रहेगी? मेरा मतलब है, कोई कार्रवाई नहीं होगी?"

"यहां की स्थानीय पुलिस सुबह स्वयं ही इस मामले से निपट लेगी।

"लेकिन वे इसे आत्महत्या घोषित कर देंगे?"

"मैं भी यही चाहता हूँ।"

"मैं भी यही चाह रहा था :’

"अंतर केवल इरादे का है।"

"इसका मतलब है कि काम जारी रहेगा।

"बिल्कुल"

"अल्लाह उस विभाग की हालत पर रहम करे जिसके आप इंचार्ज हैं। "

और इसी तरह वे परिसर से निकलकर अपनी कार में बैठ गए और ख़ान ने कार स्टार्ट कर दी।

"आप मेरे एक सवाल का जवाब दीजिए, फिर मैं --और फिर कुछ नहीं पूछूँगा। --बाले ने कार में बैठते हुए उससे कहा।

"कहो?" खान ने अनुमति दी।

आपको कैसे पता चला कि रत्नचंद और उसके साथी यहां आएंगे, या

"क्या यहां कुछ होने वाला है?" बाले ने पूछा।

"जब से रतन चंद पागलखाने गए हैं, तब से एक आदमी किसी मोटे लेकिन बेवकूफ़ आदमी की तलाश में है जो इस हवेली को सरकारी नीलामी में किसी भी कीमत पर खरीद ले।"

मास्टर ब्रेन

"

36

"वो कौन है?

खान ने कहा, "वह रतन चंद के मैनेजर हैं, वही फाल्कन जिनके लिए शौकत का नाटक खेला जा रहा है, लेकिन यह उनका नाम बिल्कुल नहीं है। मुझे लगता है कि यह तीसरा नाम है जो उन्होंने बदला है।"

"आप आदमी नहीं, जिन्न है, हाथ हर जगह फैले हुए हैं।

"मैं अपने दिमाग कभी भी छुट्टी नहीं देता।"

"लेकिन आपको कैसे पता चला कि फाल्कन इस फेर में था?"

"जब मैंने रजिस्ट्रार को रतन चंद के अतीत से जुड़ी सारी बातें बता दीं, उसी समय यह आदमी उनसे मिलने उनके दफ्तर आया और उसने खुद को रतन चंद का मैनेजर बताया और अनुरोध किया कि जब तक अदालत रतन चंद के खिलाफ लेनदारों के दावों का फैसला नहीं कर देती, तब तक उसे इस घर में रहने दिया जाए ताकि वह उनके कामों और संपत्ति की देखरेख कर सके। लेकिन श्री कोर्डे ने इस संबंध में यह कहकर अपनी असमर्थता जताई कि अनुमति देना उनके अधिकार में नहीं है, केवल कोर्ट रिसीवर ही अनुमति दे सकता है और कोर्ट रिसीवर ने मना कर दिया। क्योंकि मैंने उन्हें तुरंत बाद फोन किया था। मुझे इस आदमी पर शक हो गया। दरअसल, वहीं से मैंने इस मामले में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया, हालाँकि यह मामला अभी आधिकारिक तौर पर हमारी सूची में नहीं है।"

"तो आप ने अपना पैर जबरदस्ती दरार में डाल लिया है।"

"बस यूं ही समझो

"लेकिन आपको फाल्कन के इरादों के बारे में कैसे पता चला?"

"उस दिन से ही मेरे आदमी उसके पीछे लगे हुए थे और उन्हीं से मुझे यह समाचार मिला।"

मास्टर ब्रेन

37

"शौकत को बलि का बकरा क्यों बनाया गया? अगर आपको इस इमारत के बारे में कोई शक था, तो आप इसकी तलाशी ले सकते थे?"

"मैंने आपको बताया था कि आधिकारिक तौर पर यह मामला मेरे हाथ में नहीं है।"

"तो अब क्या?

"कल से यह मामला मेरे हाथ में होगा, क्योंकि मैं आईजी के सामने इस मर्डर केस के बारे में अपना शक व्यक्त करूंगा ।"

"तो क्या फाल्कन अभी उस के लिए काम कर रहा है?

"नहीं, वह असल में रतन चंद का मेनेजर नहीं है, लेकिन दोनों के बीच ज़रूर कोई गहरा रिश्ता रहा होगा और वह इन बातों का पता लगाने की कोशिश कर रहा है। मसलन, वह किसी भी क़ीमत पर इस इमारत को क्यों हासिल करना चाहता है और वे लोग कौन थे जिन्होंने रतन चंद को पागलखाने से

भागने में मदद की थी? इस इमारत से ज़रूर कोई न कोई ऐसी बात जुड़ी होगी जिसके लिए रतन चंद को पागलखाने से भागना पड़ा। शायद फाल्कन या उसके साथियों के प्रयासों की ख़बर उस तक पहुँच गई होगी।"

"तो फिर यहाँ उसकी लाश ?"

"ऐसा लगता है कि यह उसके साथियों की हरकत है। वे उससे कुछ जानना या पाना चाहते होंगे, और इसी हताशा में वे क्रोधित होकर इसकी कहानी खत्म कर बैठे होंगे।"

"खैर, वह मर चुका है, और हम उसके हत्यारों का पता लगा रहे हैं।"

"रतन चंद का भी किसी अपराध से संबंध था? बाले ने पूछा।

"परिस्थितियां बताती हैं कि वह बहुत चालाक धोखेबाज था।"

"लेकिन उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए तरीके दीवानी मामलों से भी जुड़े हो सकते हैं।

"हमारे लिए, ये एन सी के मामले हैं जिनमें पुलिस हस्तक्षेप नहीं कर सकती और कानून

 भी, ऐसे लोगों को तब तक कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि अदालत उनके खिलाफ कोई फैसला न सुना दे। आम तौर पर, ऐसे मामलों में, जिनमें अच्छी स्थिति वाले लोग शामिल होते हैं, समझौता हो जाता है। या डिग्री ले लेते हैं?

"अर्थात्, वकीलों का काम है।"

"बेशक "

"अब , पगलखाने से उसके भागने और यहां उसकी लाश को देखते हुए, यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि वह व्यक्ति किसी गंभीर अपराध या समूह में शामिल था।"---बाले ने राय दी.

"हाँ, कुछ ऐसा ही कहा जा सकता है, "

अरे, फिर से पैर चक्कर में फँस गया ना ।"

"क्यों?

"भगवान न करे कि आप किसी मामले में दिलचस्पी लें, कि वह कोई मामला ना बन जाए, आपके कर्मों के आशीर्वाद से कम से कम एक हत्या अवश्य हो ही जाएगी।"

" बाले साहब। अगर हम अपराधियों पर ऐसी नज़र नहीं रखेंगे, तो पता नहीं कितने मर्डर रोज़ हो जाएँ --।

"बेचारी आपके नज़र के तीरों से घायल हो जाएंगे बेचारे ।"

ओह, तुम पूरे गधे हो - , खान हँसा।

****

मास्टर ब्रेन

39

हत्या का मामला

अगली सुबह, किसी अनजान व्यक्ति ने स्थानीय पुलिस स्टेशन को फ़ोन करके बताया कि उसने रात में घर में एक साया घुसते देखा है। पुलिस तुरंत मौके पर पहुँची और घर की दाहिनी दीवार पर लगी खुली खिड़की से इसका सबूत मिला। बहरहाल, पुलिस रत्नचंद के शव तक पहुँच गई और शाम के अख़बारों में जब इसकी ख़बर छपी, तो पुलिस ने यही राय ज़ाहिर की थी कि रत्नचंद ने मानसिक विक्षिप्तता की हालत में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है।

रतन चंद की आत्महत्या की खबर के साथ ही रतन चंद से जुड़े सभी मामले ठंडे पड़ गए और अब जो कुछ बचा था वह सिर्फ खान के दिमाग में था।

शाम पांच बजे जब वह डीआईजी के सामने बैठे थे और जी डिवीजन के अधीक्षक कोर्डे डीआईजी को इस आत्महत्या मामले का विवरण बता रहे थे, तभी खान ने अपने शब्दों से डीआईजी को चौंका दिया।

"लेकिन सर, मैं साबित कर सकता हूँ कि ये आत्महत्या का नहीं, बल्कि हत्या का मामला है।

"कैसे ?" डीआईजी और सुपरिंटेंडेंट कोर्डे दोनों चौंक गए। "क्या तुम्हें भी इस केस में दिलचस्पी है?"

"मैंने खुद इस जगह का मुआयना किया है और इसीलिए मैं यह दावा कर रहा हूँ।

लेकिन इसका सबब ?" कोर्डे ने बिना किसी नाराज़गी के गंभीरता से पूछा।

जवाब में खान ने उन्हें घटना बताई, जिस पर डीआईजी मुस्कुराए,

लेकिन अधीक्षक कोर्डे का मुंह थोड़ा खुला रह गया।

खान ने कहा, "श्री कोर्डे, निश्चिंत रहें, यह मामला आपका है, लेकिन इसके ज़रिए इन अज्ञात व्यक्तियों का पता लगाने के लिए, मैं चाहता हूँ कि इसे आईडी में स्थानांतरित कर दिया जाए। यह इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि मुझे शक है कि वे ख़तरनाक लोग कुछ और करेंगे।"

डीआईजी ने पूछा, "वे और क्या करेंगे?"

"मैं कल इस पर प्रकाश डाल पाऊँगा, अपने बताए कारणों के आधार पर, कि उसे मेरे विभाग में स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए।" यह कहते हुए खान ने कोर्डे की ओर देखा।

"मुझे क्या आपत्ति हो सकती है, डीआईजी साहब जो भी हुक्म दें?" उसने डीआईजी की तरफ़ देखा। डीआईजी ने कुछ देर सोचा, फिर सिर उठाकर ख़ान की तरफ़ देखा।

"ठीक है," उसने कहा.

खान ने कहा, "लेकिन बेहतर होगा कि यह मामला इसी कमरे तक सीमित रहे।"

"हाँ, हाँ, ऐसा ही होगा ।" डीआईजी ने सिर हिलाया और सुपरिंटेंडेंट कोर्डे भी कुछ नहीं बोले। वे खान को अपना दोस्त मानते थे और यह सच भी था - खान ने कई मामलों में उनका साथ दिया था, इसलिए उनके दिल में खान के लिए कोई ईर्ष्या या प्रतिद्वंद्विता नहीं थी।

डीआईजी कार्यालय से बाहर आते हुए खान ने कोर्डे की पीठ पर हाथ रखा और मुस्कुराये।
और कहा --
"आप ही हैं जिन्होंने मेरा ध्यान इस मामले की ओर आकर्षित किया। मैं इसे आपके लिए हल कर दूंगा।"

अधीक्षक कॉर्डे ने हंसते हुए कहा, "मैं कोई लोमड़ी नहीं हूं जो शेर का जूठा खा जाऊं।"

मास्टर ब्रेन

41

" फिर शायद दोनों एक ही शिकार पर झपटेंगे ," खान ने मुस्कुराते हुए गलियारे में चलते हुए कहा।

अपने कार्यालय पहुंचकर उन्होंने सबसे पहले आवश्यक चीजों पर नजर डाली और फिर फोन उठाया।

रिंग करना शुरू किया।

कमरे के दूसरी ओर से इंस्पेक्टर राज की आवाज सुनाई दी।

खान ने पूछा, “उसका क्या हुआ?”

"अभी तक कोई नहीं आया है, दरवाज़ा बंद है।"

"ठीक है। आप रौफ़ को वहीं छोड़ सकते हैं।

"बहुत अच्छा, सर --उधर से उत्तर आया और खान ने कॉल काट दिया।

फिर उसने घंटी बजाई और अर्दली आ गया।

"श्री डिसूजा को नमस्ते कहिए।

"ठीक है, सर," अर्दली ने पीछे मुड़कर कहा।

डिसूजा को आने में दो मिनट भी नहीं लगे। वह खान के सामने थे।

उसके हाथ में एक लिफाफा था।

"येस सर

"क्या प्रिंट निकला?

"येस सर, यह रहा।" उसने लिफाफा खान के सामने रख दिया।

"सर , इस आत्महत्या स्वीकारोक्ति पत्र में रत्नचंद को छोड़कर एक या दो अंगूठे के निशान तो हैं,--- डिसूजा ने कहा, " लेकिन एक ही व्यक्ति के। और ये निशान इसी मेज़ से लिए गए हैं। इसे शायद बगल से उठाकर धकेला गया होगा।"

मास्टर ब्रेन

42

"क्या आपने पुलिस रिकॉर्ड में इन उंगलियों के निशानों का पता लगाया है?"

डिसूजा ने कहा, "हां, मैं पूरी दोपहर यही काम कर रहा था, लेकिन हमारे रिकॉर्ड में दर्ज ऐसे किसी भी अपराधी की जानकारी नहीं है।"

"खैर, एहतियात के तौर पर इनकी फोटो की एक कॉपी कलकत्ता और दिल्ली पुलिस को भी भेज दो, हो सकता है वहाँ कुछ सुराग मिल जाए। ऐसे अपराधी तो भारत के बड़े शहरों में ही मिलते हैं। उसने उसे हिदायत दी।

"ठीक है," डिसूजा ने लिफाफा उठाते हुए जवाब दिया।

"हाँ, उस लछमन वाले मामले का क्या हुया ? " खान ने पूछा।

"मैंने हर कोण से इसकी जांच की है, लेकिन यह एक एनसी मामला है, महोदय।"डिसूजा ने उत्तर दिया.

लछमन का कहना है कि उन्होंने निगम का कार्यकारी अभियंता समझकर एक लाख रुपए केस डिपॉजिट के तौर पर दिए थे, जबकि कांतिलाल का कहना है कि यह आरोप झूठा है। --डिसूजा ने कहा,

"लेकिन लछमन दास कितना झूठ बोल रहा होगा कि उसने ज़मानत के पैसे दिए थे, उसने रिश्वत में पैसे दिए होंगे, यह सोचकर कि वह कार्यकारी अभियंता है, वरना वह उधार देता और वेरांडा रसीद माँगता। खान मुस्कुराया।

डिसूजा ने कहा कि अगर इसे सच मान भी लिया जाए तो पुलिस इस संबंध में क्या कर सकती है, जबकि कांतिलाल ने स्पष्ट रूप से फमनदास के बयान को झूठ और बदनामी बताया है और इसे फमनदास को दिया है और इसका कोई सबूत नहीं है।

"क्या इन दोनों के बीच पहले भी किसी तरह का रिश्ता रहा है?"

43

मास्टर ब्रेन

लछमन दास का कहना है कि उनकी पहली मुलाकात कांतिलाल से रात में उनके फ्लैट पर हुई थी, दलाल के कहने पर, जिसने कार्यकारी अधिकारी से अनुबंध दिलाने का वादा किया था।

और वह दलाल?"

"इसका कोई पता नहीं । मैं उनसे पहली बार निगम भवन में मिला था। उन्होंने खुद को नगरपालिका कर्मचारी बताया था," डिसूजा ने कहा।

खान ने पूछा, "और लछमन वहां शाही निविदा भरने गया होगा।"

"हां, यह उपनगरों में एक अस्पताल के निर्माण के लिए निविदा का मुद्दा था।"

"खैर, तुम्हें इस कांतिलाल पर चुपके से नज़र रखनी होगी। क़ानूनन, हम इसके बारे में कानून से कुछ नहीं कर सकते हैं।

"और लक्ष्मण दास के लिए?"

"उसे बताइए कि अगर सबूत नहीं है तो पुलिस उसकी मदद नहीं कर सकती। और फिर रिश्वत से काम लेने वालों को भी इसी तरह सज़ा मिलनी चाहिए।"

"ओके सर

"यह कांति लाल क्या कर रहा है?" उन्होंने डिसूजा को रोकते हुए पूछा।

"उनका कहना है कि वह आयात-निर्यात के कारोबार में हैं और उनके पास लाइसेंस भी है।

उसने कहा था कि लक्ष्मण ने उनसे मुलाकात के दौरान उनका अपमान किया था।वह बदला लेने के लिए उस पर झूठा आरोप लगा रहा है।"

खान ने झिझकते हुए कहा, "ईश्वर जानता है कि कौन झूठ बोल रहा है और कौन सच बोल रहा है।"

खान ने पहले कहा था, "वैसे भी, हमारे पास इन व्यापारियों के झगड़ों में पड़ने का समय नहीं है। शायद यह सच हो। आप इस मामले को यूँ ही छोड़ दीजिए।"

मास्टर ब्रेन

44

"यह बेहतर है।" डिसूजा ने विनम्रता से सिर हिलाया और पीछे हटने लगे।

"इन उंगलियों के निशानों पर ज़्यादा ध्यान दो, हमें इस आदमी को जल्द से जल्द ढूँढ़ना होगा, वरना और भी मामले सामने आ सकते हैं। ---खान ने जाते हुए उसे निर्देश दिया।

डिसूज़ा ने सिर हिलाया और बाहर चला गया, जबकि खान अपनी कलाई घड़ी पर समय देखने लगा। 6 बजने में कुछ मिनट बाकी थे। उसके ऑफिस का समय खत्म हो चुका था।

वह उठा, अपनी टोपी खूँटी से उतारी और छत पर लगे बिजली के पंखे को बंद करने निर्देश देते हुए बाहर चला गया।

****

मास्टर ब्रेन

45

हसीन औरत

शायद शौकत इस अनजान खूबसूरत हसी औरत को देखने के लिए बेचैन था, इसलिए दस बजे वह अपनी गाड़ी लेकर निकल पड़ा। उस समय वह बहुत खुश था। एक तो कल का दो लाख रुपए का त्याग अभी बाकी था, दूसरे उसके व्यक्तित्व ने लोगों को इतना प्रभावित किया था कि लोग उससे प्रभावित होकर उसे अपने घर बुलाने लगे थे।
घर पर उसने सुबह से ही शामू को फ़ोन करके परी बेगम के सामने कई बार हिदायत दी थी कि आज उसके खाने का इंतज़ार न करे, वह एक बड़ी पार्टी में जा रहा है, जो उसके लिए दी गई है । शाम तक,

जब उसने एक घंटा पहले ही तैयारी शुरू कर दी थी और काला डिनर सूट पहन लिया था और उसके सिर तक लीनो की खुशबू फैल रही थी, उसने नवाब साहब को उसके साथ जाने का शौक चर्राने लगा ।

शौकत ने आज एक ही जवाब में सारे दिनों का बदला ले लिया।--

"बिना बुलाए कहीं जाना सभ्यता की निशानी नहीं है --- उसने नवाब से कहा, उनकी उम्र की परवाह किए बिना।

"ओह, ए लो , मैं तुम्हारे साथ इसलिए जा रहा था क्योंकि तुम अकेले हो । और न ही शक्ति। मैं कोई दावतों का भूखा हूँ? " नवाब ने गुस्से से कहा।

"और मैं तो कोई दूध पीती बच्ची हूँ, जिसकी तुम्हें इतनी चिंता है।" शौकत ने तीखे स्वर में कहा। और नवाब साहब अवाक होकर चुप हो गए।

शौकत जब गाड़ी में बैठने लगा, तो शामू की तैयारियों पर उसकी नज़र पड़ी। उसने डरते हुए कहा, "मैं एक बात कहूँ ?"

हाँ, बोलो"

मास्टर ब्रेन

46

"मियां, आज तो आप पूरे गुलफाम नज़र आ रहे हो , कहाँ मुंह दिखाई को तो नहीं जा रहे हो?"

"चलो बे , इतनि अक्लमंदी मत दिखा ," शौकत ने कहा और कार स्टार्ट कर दी, लेकिन तब भी उसका मूड ऐसा था जैसे वह अपने होने वाले ससुराल वालों से मिलने जा रहा हो।

टर्नर रोड एक लोकप्रिय इलाका था, इसलिए वहाँ पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा, हालाँकि उसे 23 नंबर वाली इमारत ढूँढ़ने में थोड़ी मुश्किल ज़रूर हुई। यह एक साधारण, लेकिन आधुनिक, चार मंज़िला इमारत थी, जिसके दरवाज़े पर "कैसर लॉज" लिखा था। उसने अभी अपनी कार पार्क ही की थी कि उसने दो आदमियों को इमारत से बाहर आते देखा। उनमें से एक वही फ़ॉल्कन था, जो उसकी कार देखकर तेज़ी से चलता हुआ आया था।

"तुम बिलकुल समय पर आ गए," उसने स्वागत भरे लहजे में कहा।

"तुम बहुत समय के पाबंद लग रहे हो।" दूसरे ने भी चापलूसी भरे लहजे में बात की।

" इसी आदत की वजह से अंग्रेज़ों ने दुनिया में इतनी तरक्की की थी।-- फाल्कन ने उसकी कार का दरवाज़ा खोला और कहा। उसने शौकत का स्वागत किया और उसे अपने साथ लेकर इमारत में दाखिल हुआ।

जब वे लिफ्ट से तीसरी मंजिल पर पहुँचे, तो उस ने देखा कि कुछ फ्लैटों के दरवाज़े बंद थे, कुछ खुले। फ़ॉल्कन उन्हें रास्ता दिखा रहा था। वे आखिरी फ्लैट के दरवाज़े पर रुके। जब उन्होंने बाहर से घंटी का बटन दबाया, तो बंद दरवाज़ा खुल गया और एक लंबी , खूबसूरत शक्ल ने मेहमान का स्वागत किया । उसने उन्हें रास्ता दिया और पीछे हट गई । शौकत उसे देखता रहा । वाकई, बाले सही था । स्कर्ट में उसका गोरा बदन और खुल रहा था। उसके चेहरे के नैन-नक्श बेहद खूबसूरत और आकर्षक थे। उम्र के लिहाज़ से वो कोई 18-19 साल की जवान लड़की लग रही थी। शौकत ने उसे देखा तो उसकी धड़कनें तेज़ हो गईं।

मास्टर ब्रेन

47

उसे एक सुसज्जित कमरे में ले जाया गया, जहां एक लंबा, अधेड़ उम्र का लम्बे चेहरे वाला आदमी बैठा था।

वह आदमी पहले से ही वहाँ मौजूद था। शौकत को देखकर वह भी अदब से खड़ा हो गया।

दावत शुरू होने से पहले, वे उसी कमरे में बैठकर बातें करने लगे। फाल्कन ने शौकत से उस खूबसूरत लड़की का परिचय कराया और कहा, --

ये मेरी भतीजी वेरा डी क्रूज़ हैं, ये मेरे आदरणीय मित्र सर अमरनाथ हैं, शहर के रहीसों में से एक।" उन्होंने लड़की के पीछे खड़े लंबे चेहरे वाले आदमी की ओर इशारा किया। शायद उन्होंने तीसरे आदमी का परिचय देना ज़रूरी नहीं समझा, या फिर वह कोई मामूली आदमी रहा होगा।

"और ये मेरे नए दोस्त हैं, शौकत साहब, बहुत बड़े खानदान से, सिर्फ़ रुतबे से ही नहीं, दिल से भी। उन्होंने इन लोगों को शौकत के बारे में बताया।

" अरे नहीं... शौकत शर्मा गया

"आपकी शक्ल-सूरत से तो आप किसी शाही परिवार के सदस्य जैसे लगते हैं," फाल्कन के साथी ने तारीफ़ में इज़ाफ़ा करते हुए कहा। और शौकत का दिल बैठ गया।

सर अमर हथ ने उनसे हाथ मिलाते हुए कहा, "मुझे आप जैसे व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त करके बहुत खुशी हुई।"

"शुक्रिया," शौकत ने कुछ झेंपी मुस्कान के साथ कहा। लेकिन शौकत को लड़की की तरफ हाथ बढ़ाने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुयी ।

"रात को चाचा तुम्हारी खूब तारीफ़ कर रहे थे। कहते थे कि तुमने हातिम ताई का दिल पाया है। लड़की ने उन्हें बाँस पर चढ़ाने का बचा हुआ काम पूरा कर दिया।

"मैं किस लायक हूँ। मेरा मतलब है आप सभी का हुसने ज़िन है

"जो जिस काबिल होता है, वही माना जाता है। लड़की ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया,

मास्टर ब्रेन

48

शौकत इस मुस्कान पर खुद को बलिदान कर देना चाह रहा था , लेकिन पहली मुलाकात में केवल शर्मा कर रह गया ।

" ठीक है, मुझे पार्टी की तैयारियों का जायज़ा लेने के लिए कुछ मिनट दीजिए। --फ़ल्कन ने शौकत को कहा। उसे ऐसे मौकों के लिए औपचारिक शब्द भी याद नहीं थे। उसने बस "अलविदा" कहा और फ़ल्कन अपने साथी के साथ कमरे से बाहर चला गया। अब यहाँ सिर्फ़ वो लड़की , अमर नाथ और शौकत ही बचे थे।

"मिस्टर फाल्कन आपकी बहुत तारीफ़ कर रहे थे, इसलिए मैं भी आपसे मिलने के लिए उत्सुक था।" अमर नाथ ने उनसे बातचीत शुरू की।

शौकत ने रूखेपन से कहा, "मुझे भी आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई है।"

"क्या आपका यहां कोई बिजिनेस है?" उसने स्पष्ट रूप से पूछा।

"जी हां, मैं यूनही कुछ आवागमन का कारोबार करता हूं।

" आवागमन का?"

अर्थात् इम्पोर्ट एक्सपोर्ट वगेयरा , ।

वे बातें ही कर रहे थे कि दूसरे कमरे में फ़ोन की घंटी बजी, और उसी वक़्त एक नौकर ने आकर सर अमरनाथ को बताया कि उसका फ़ोन आया है। उसने शौकत से माफ़ी मांगी और उठकर चला गया।

शौकत अब वेरा डी के साथ अकेला रह गया था। ऐसे मौके उसके लिए बहुत मुश्किल होते थे, पराएपन के एहसास से। उसका मन भटक जाता था। और यही हुआ जब वेरा ने खुद बड़े ही प्यार भरे अंदाज़ में उससे कहा कि यूँ चुपचाप बैठने के बजाय थोड़ी बातें कर ले।

"क्या आप लोग सांता क्रूज़ के रहने वाले हैं?" उसने मुँह खोला,और कुछ ऊटपटाँग निकल गया

"नहीं तो , मगर ये ख्याल आपको क्यों आया?" वेरा ने पलकें झपकाईं।और पूछा

"वही, जिसके नाम के साथ क्रूज़ लगा हुया है," शौकत ने समझाया।

"ओह, वह हँस पड़ी।" "आप सचमुच खुले दिल वाले और दिलचस्प इंसान हैं," उसने कहा।

दिलचस्प... और वो भी एक लड़की के मुँह से। शौकत के लिए, यह एक ऐसी तारीफ़ थी जिसके हक़दार सिर्फ़ खुशकिस्मत लोग ही होते हैं। क्योंकि लड़कियाँ अक्सर बाले की तारीफ़ ऐसे ही शब्दों में करती हैं। उसने भी उसे और प्रभावित करने के लिए उसी अंदाज़ में हँस दिया।

"तुम्हारी शादी हो गई होगी?" वेरा ने गंभीरता से पूछा।

"अभी तो नहीं।" वह मुस्कराते हुए बोला।

"अरे वाह, क्या आप भी ब्रहमचारी हैं ?"

"मैं, मैं तो मुसलमान हूँ, ब्रहमचारी नहीं हूँ।"

"बहुत खूब खूब है," वह फिर हँसने लगी।

क्या शौकत का गला फिर से फुल स्टॉप में अटक गया, उसकी खोपड़ी काम नहीं कर रही थी, की क्या बोले , हालाँकि, उसकी धड़कन ज़रूर कह रही थी।-- तुम तो भूत खबसूरत हो, हसीना।- मगर बोल नहीं पा रहा था ।

"आप कभी-कभी आओगे न?" वेरा ने पूछा।

दिल तो कहना चाहता था, 'ठीक है, तुम मुझे बुलाओ और मैं नहीं आऊँ, ये कैसे हो सकता है --,' लेकिन मुँह से निकल गया।--

'जियान जियान, अगर मुझे मौका मिला, तो मैं ज़रूर आऊँगा।'"

इतनी देर में अमरनाथ वापस आया और नौकर ने भी आकर उसे अगले कमरे में चलने को कहा.

मास्टर ब्रेन

50

खाने के दौरान, फाल्कन सर अमरनाथ से शौकत की तारीफ़ करता रहा। लेकिन शौकत की नज़रें ज़्यादातर वेरा के चेहरे पर ही टिकी रहीं। अगर वह उससे किसी होटल में अचानक किसी सोसाइटी गर्ल की तरह मिलता, तो शायद ज़्यादा खुलकर बात करता, शायद बेतकल्लुफ़ी भी बरतता, लेकिन यहाँ तो वह एक ख़ास मेहमान था, इसलिए उसे खुद पर बहुत काबू रखना पड़ा। हालाँकि, इस दौरान वेरा उससे काफ़ी खुलकर बात कर चुकी थी।

भोजन समाप्त करने के बाद, पहले वाले कमरे में चले आए ।

"अंकल , मुझे लगता है शौकत साहब आप लोगों की ज़रूर मदद करेंगे। मैंने उन्हें बहुत उदार पाया है," उसने फाल्कन से ऊँची आवाज़ में कहा ताकि शौकत भी सुन सके

"हाँ, हाँ, क्यों, क्या बात है?" शौकत ने चौंक कर पूछा।

"अरे नहीं बेबी, इतनी सी बात पर शौकत साहब को क्यों तकलीफ दी जाए ? सर अमर हथ ने अपनी चिंता व्यक्त की।

"तो बताओ तो सही आप , क्या बात है?" शौकत ने ज़ोर देकर पूछा।

"कुछ नहीं, ये बस हमारे सर अमरनाथ की ग़लतफ़हमी है। जैसे तुम्हें बाग़ी मिज़ाज मिला है, वैसे ही उसका भी है। बस उसके दिमाग़ में कोई धुन बैठ जाए दिमाग में तो -- ।" फ़ल्कन ने शौकत को संबोधित किया और सर अमरनाथ की तरफ़ इशारा करके कहा।

"अरे भाई, मुझे क्यों बदनाम कर रहे हो? --सर अमर हाथ ने मज़ाकिया लहजे में कहा।

"नहीं, तुम कुछ भी कहो, मैं शौकत साहब अभी बता दूँगा। अब वो हमारे लिए अजनबी नहीं रहे," फ़ल्कन ने ज़िद की ।

51

मास्टर ब्रेन

"हाँ, हाँ, अंकल, शौकत साहब से क्या छिपाना ? --वेरा ने भी इसका समर्थन किया और इस खूबसूरत समर्थन ने शौकत को पालतू सांड की तरह गिरा दिया।

"दरअसल, सर अमर नाथ एक ज़िद पर अड़ गए हैं । और मज़े की बात तो ये है कि वो आगे आना भी नहीं चाहते। --फ़ल्कन ने कुछ अकड़कर शौकत से कहना शुरू किया।

"काए की ज़िद?" शौकत ने मासूमियत से पूछा।

"उनका एक दोस्त था, सेठ रत्नचंद, जो पागल हो गया था और उसने आत्महत्या कर ली थी।

"अरे हाँ, मैंने भी अखबार में पढ़ा था। शौकत बीच में ही बोल पड़ा ।

"जी हाँ , वही और अब कल उनकी कोठी नीलाम हो रही है। सर अमरनाथ तो यही चाहते हैं, उनके दिवंगत दोस्त की इज़्ज़त किसी तरह नीलाम न हो । वो ख़ुद इसे खरीद लें ।

"तो इसमें ग़लत क्या है? आप इसे ख़रीद सकते हैं।-- शौकत को इसका मतलब समझ नहीं आया

"लेकिन वो ख़ुद सामने नहीं आना चाहता। हक़ीक़त ये है कि ज़िंदगी में उसकी और रतन चंद की किसी बात पर दुश्मनी थी और अब अगर वो सामने आकर उनका घर ख़रीद ले, तो लोग कहेंगे कि सर अमर मरने के बाद भी रतन चंद की रूह को तड़पाने के लिए अक्सर अपने हाथ दिखाता रहता है। ---फ़ल्कन

ने ऐसे लहज़े में कहा कि शौकत के फ़रिश्तों को भी उस पर यक़ीन करना पड़ा, क्योंकि उसने देखा कि सर अमर भी इस ज़िक्र पर आँखों पर रूमाल रखकर रोने लगा था।

" देखिए इनको , फिर दुखी हो गए। "--फल्कन शौकत को छोड़कर सर अमरनाथ को समझाने चला गया। ---- अगर दूसरों को नहीं पता, मगर कम से कम मुझे तो पता है कि लड़ाई के बावजूद तुम रत्नचंद से कितना प्यार करते थे। यूं रोते रहीगे , सर अमरनाथ, तो रत्नचंद की आत्मा दुखी होगी।"

"जियान, सर अमरनाथ, इस तरह रोने से क्या फ़ायदा?" शौकत ने भी समझाना शुरू किया। और उसके समझाने पर सर अमरनाथ शांत हो गए।

मास्टर ब्रेन

52

"शौकत साहब, अगर आप चाहें तो चाचा की ये चिंता दूर हो सकती है।" वेरा ने शौकत को संबोधित किया।

"हाँ, हाँ, कए को नईं , ठीक है। बताओ मुझे क्या करना है?"

" सर अमर हथ चाहते हैं कि आप कल नीलामी में उनकी तरफ से सबसे ऊंची और सबसे उदारता से बोली लगाएं और इस मकान को खरीद लें - दरअसल सर अमर हथ इसकी कीमत चुकाएंगे, लेकिन जाहिर है कि यह कीमत वैसी ही होगी जैसी शौकत साहब ने इसे खरीदी होती।"

"तो फिर क्या मतलब है? मैं इसे अपने नाम से खरीद लूँगा, शौकत ने झट से जवाब दिया।

"तो लीजिए , इस खाली चेक को अपने पास रख लो, जितनी भी रकम में कोठी खरीदो, उसमें उतनी रकम भरकर बैंक से निकाल लो। -----सर अमर हाथ ने जल्दी से अपनी जेब से चेकबुक निकाली और एक चेक फाड़ दिया, जिस पर सिर्फ़ उनके हस्ताक्षर थे। तारीख, पैसे निकालने वाले का नाम और रकम कुछ भी नहीं लिखी थी।

नईं नईं , मैं दे दूँगा, इसकी क्या ज़रूरत है, मैं बाद में ले लूँगा। --शौकत ने तकल्लुफ करना शुरू कर दिया

"हाँ, साहब, लेन-देन साफ़ होना चाहिए। और क्या पता कि हवेली की खूबसूरती, देखकर "शौकत" साहब की नीयत बदल सकती है?" अमर नाथ ने मज़ाकिया लहजे में कहा, मगर शौकत को बुरा लगा।

"साहब, मैंखुद ऐसी दर्जन से ज़्यादा कोठी बना सकता हूँ।" वह अपनी अकड़ पर उतर आया ।

"साहब, अमर नाथ जी मज़ाक कर रहे हैं, आप क्यों बुरा मान गए ?" फाल्कन उठकर जल्दी से बोला।

"हाँ, शौकत साहब, अंकल को ऐसे मज़ाक की आदत है। वेरा ने भी वकालत की

."मुझे खेद है, शौकत साहब, मेरा इरादा आपको ठेस पहुँचाने का नहीं था," सर अमर हाथ ने भी क्षमा याचना भरे स्वर में कहा।

'मैं नाराज़ वाराज़ नहीं हूँ, यूँही मैंने कहा था।' शौकत यह कहकर हँस पड़ा । वेरा की बात जो थी ।

"तो फिर अप ये चेक रख लो।" ये कहते हुए सर अमर हाथ ने ज़बरदस्ती चेक शौकत की जेब में ठूंस दिया।

"मैं मिस्टर फाल्कन से यह काम ले सकता था, लेकिन अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो इनकम टैक्स वाले उनकी हैसियत पर शक करने लगते।" सर अमर हथ ने शौकत के शक को दूर करने के लिए उन्हें एक और स्पष्टीकरण दिया।

"क्या मैं तुम लोगों के सामने क्या हूँ ? कहाँ पहाड़ ? कहाँ चूहा ?" फाल्कन ने उन दोनों की तरफ़ देखते हुए विनम्रता से कहा, और शौकत इस अद्‌भुत तुलना पर दिल ही दिल में ख़ुश हुए बिना न रह सका।

"यह लो, ये रहा पता । लेकिन पहले मुझसे वादा करो," सर अमरनाथ ने उसे एक कागज़ देते हुए कहा।

"क्या?" शौकत ने पूछा।

"अर्थात्, आप किसी को यह नहीं बताएंगे कि हवेली वास्तव में आपने नहीं, बल्कि मैंने खरीदी है," सर अमर हथ ने कहा।

"मैं इसका ज़िक्र ज़रूर करूँगा, शौकत ने वादा किया।

"नहीं, तुम भूल सकते हो, मेरी कसम खाओ," वेरा ने उसे तीखी निगाहों से घूरते हुए कहा।

मास्टर ब्रेन

54

"तुम मगर --... यानी। अच्छा , आपकी कसंम , आपके कहने से तो मैं ... , --शौकत ने शर्माते हुए कहा। उसे इस तरह के खाने में एक अजीब सी खुशी महसूस हो रही थी। वेरा के करीब होने की , अपना होने की , मानो वह सचमुच उसके लिए कुछ लगने लगी हो।

"तो तय हो गया। सर अमरनाथ ने उठते हुए कहा।

शौकत ने हाँ में सिर हिलाया। फिर फाल्कन को खड़ा देखकर वह भी खड़ा हो गया।

"अब, कृपया मुझे कुछ आवश्यक कार्य करने की अनुमति दें," उन्होंने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, और फिर उनसे हाथ मिलाकर चले गए।

कुछ देर बाद जब शौकत भी वहाँ से अपनी कार में लौट रहा था तो उस पर एक शराब की बोतल का नशा चढ़ा हुया था , क्योंकि जब उसकी कार तक वेरा अकेली छोड़ने आई था तो वेरा ने कई सेकंड तक उसकी आँखों में देखा था और उसे ऐसे देखा था जैसे उसका दिल और रूह प्यार में डूबने को मचलने लगे हों। फिर जब उससे रहा नहीं गया और उसने झुककर वीरा का सफ़ेद हाथ जो कार की खिड़की के शीशे पर रखा था, चूम लिया तो वो नाराज़ भी नहीं हुई बल्कि उसी हाथ से उसके गाल पर "बाय-बाय" कहकर हल्की सी चपत लगा कर चली गई।

****

मास्टर ब्रेन

55

ममतामयी हाथ

अगले दिन सुबह 10 बजे जब रतनचंद का मकान नीलामी के लिए रखा गया तो शौकत ने सबसे ऊंची बोली लगाकर उसे दो लाख रुपये में खरीद लिया।

दरअसल, जब शौकत की आखिरी बोली 120,000 से 200,000 तक पहुँची, तो सब उसे घूर रहे थे, क्योंकि घर की असली कीमत 100,000,000 से ज़्यादा नहीं थी। नीलामी तो शौकत के पक्ष में खत्म हुई, लेकिन उसे भीड़ में कहीं भी फाल्कन या अमरनाथ नज़र नहीं आया।

पैसे चुकाने के बाद, शौकत अपनी कार से उतरकर बैठने ही वाला था कि तभी उसकी नज़र वेरा पर पड़ी। वह बहुत उत्साहित और खुश होकर उसकी तरफ़ आ रही थी।

"मैं बहुत देर से पहुंची," उसने शौकत के पास जाकर कहा।

अनजाने में शौकत ने कार का दरवाजा खोला और वेरा उसके बगल में बैठ गई।

"बताओ, तुमने इसे कितने ह़ज़ार में खरीदा?" वेरा ने पूछा।

वह इसे मुख्य सड़क पर चला रहा था।

" ह़ज़ार में.... ? पूरे दो लाख में… शौकत ने जवाब दिया।

"दो लाख में...?" वेरा चौंककर बोली। "खैर, तब भी महँगा नहीं है।"

"मेरे विचार से इसकी कीमत डेढ़ लाख रुपये से अधिक नहीं थी, लेकिन सर अमरनाथ की वजह से मैंने उनकी बोली बढ़ा दी ताकि कोई और इसे न ले सके।"

वेरा ने कहा, "अगर यह दो या पांच हजार भी होता, तो भी दो लाख में यह महंगा नहीं होता।"

"क्यों?" शौकत ने चौंक कर कहा। ---क्या बात है? शौकत का उत्साह और भी बढ़ गया।

"यह एक राज है।"

"क्या इसका कोई रहस्य है?"

"हाँ। और मुझे यह रहस्य तुम्हारे जाने के बाद वाली रात ही पता चला।"

"तो मुझे भी बताओ.

"यहां नहीं, और अब आप इस फ्लैट में भी नहीं जाएंगे।

"तो फिर मुझे कहां जाना चाहिए?"

" मेरे साथ।"

"चलिए -

वेरा उसे रास्ता बताती रही।

"मुझे नहीं पता था कि मामला इतना गहरा है, वरना मैं तुम्हें रात में बता देती ।"

"आखिर मामला क्या है ?

"आपने यह सोचा भी नहीं होगा कि इस हवेली की सबसे ऊंची कीमत चुकाने के लिए अमरनाथ क्यों तैयार था ? ।"

"आये... ?" शौकत चौंक गया, --लेकिन वो इसके लिए क्यों तैयार था ? उसने उससे पूछना शुरू किया।

"अरे देखो, कोई हमारा पीछा कर रहा है ," उसने पीछे मुड़कर देखा। शौकत ने भी आईने में देखा, कोई सचमुच दूर से उनका पीछा कर रहा था।

शौकत ने बड़बड़ाते हुए कहा, "ये काए कु हमारा पीछा कर रहा है?"

"सर अमरनाथ या उनका कोई आदमी इस कार में होगा। हमें उनसे बचना चाहिए, वरना काम बिगड़ जाएगा ," उसने फुसफुसाते हुए कहा, हालांकि कार में कोई तीसरा व्यक्ति ना था जो वो बात सुनने से डर रही थी।

मास्टर ब्रेन

"ठीक है," शौकत ने शीशे में पीछे वाली कार को देखते हुए कहा, और जैसे ही वह एक मोड़ पर पहुँचा, उसने जल्दी से कार एक संकरी सड़क पर मोड़ दी। फिर वह आगे बढ़ा और दूसरी गली में मुड़ गया। लेकिन जब वह उस मोड़ पर पहुँचा, तो उसने देखा कि पीछे से अब भी कार आ रही थी।

" लू साला... पीछे ही पड़ गया हाथ धोके ।-- वह बड़बड़ाते हुए कार और तेज़ चलाने लगा।

"रुको।" एक जगह वेरा ने उसे रोका। उसी सड़क के दाईं ओर, रेलवे क्रॉसिंग के पार एक और छोटी सड़क थी। --अब मुड़ो: गेट खुला है।"

और शौकत ने बिना कुछ सोचे-समझे गाड़ी उस तरफ मोड़ दी। वह और शौकत, दिमाग को कुछ सोचने का मौका दिए, क्रॉसिंग पर पहुँचे, ठीक उस समय जब फाटक बंद होने वाला था। गेटमैन ने अपनी गाड़ी को जाने दिया और फिर फाटक बंद कर दिया, क्योंकि ट्रेन आ चुकी थी। पीछे आ रही गाड़ियाँ रुक गईं।

***

लगभग आधे घंटे बाद, शौकत वेरा के साथ उपनगर के एक तटीय इलाके में एस्बेस्टस शीट से बने एक साधारण से घर में बैठा था। उसके सामने समुद्र की लहरें उठ रही थीं और आसमान में हल्की धूप और बादल छाए हुए थे, जिससे हवा ठंडी और सुहावनी हो रही थी।

युवा भावनाओं को जगाने के लिए इससे बेहतर माहौल और क्या हो सकता था? इसलिए, वेरा की नज़दीकियों के साथ, शौकत की भावनाएँ भी बेकाबू होने लगीं। वे एक छोटी सी मेज़ पर आमने-सामने इस तरह बैठे थे कि उनके सिर आपस में टकरा रहे थे और हर तेज़ बारिश शौकत के शरीर में बिजली का झटका दे रही थी। वेरा ने उसे बताया था कि यह उसकी एक दोस्त का घर है और वही दोस्त है जो अभी-अभी उनके लिए मेज़ पर चाय लेकर आई है।

"हाँ, अब बताओ, वह राज़ क्या था? शौकत ने जानबूझ कर उसकी तरफ़ झुककर पूछा।

वह भी थोड़ा आगे झुक गई, जब तक कि उनकी आँखों के बीच मुश्किल से एक हाथ की चौड़ाई की दूरी नहीं रह गई।

"पहले, मुझसे वादा करो कि तुम पीछे नहीं हटोगे।"

"अरे ये भी कोई बात है .... - क्या मैं हिजड़ा हूँ? शौकत ने अपनी भाषा में बहादुरी का इज़हार किया।

"तो, दरअसल, उसी घर में कहीं रतनचंद के 20 लाख रुपए गड़े हैं, जिसके बारे में सिर्फ़ सर अमरनाथ को पता है और उन्होंने अंकल को भी इसमें शामिल कर लिया है। ---उसने गोपनीय लहजे में बताना शुरू किया।

शौकत चौंक गया, "20 लाख?" ---जो भी हो, इतनी छोटी रकम नहीं थी कि वह दिलचस्पी न दिखाए।

"हाँ। रात को तुम्हारे जाने के बाद, उन्होंने मुझे मेरे बेडरूम में भेज दिया और खुद बातें करने लगे। मुझे शक हुआ, तो मैं कमरे के दरवाज़े से पैर सटाकर खड़ी हो गई और कान लगाने लगी। सर अमर अंकल से कह रहे थे कि अगर शौकत बैंक में देर से आए, तो सुबह तुम खुद कैश लेकर चले जाना और घर के म्कगज उससे ले लेना " वो बताने लगी।

"अच्छा।" शौकत ने गिरगिट की तरह सिर हिलाया।

इस पर अंकल फाल्कन ने उससे पूछा कि क्या उसे पूरा यकीन है कि उस घर में बीस लाख रुपये हैं। तो उसने कहा, "हाँ ... मुझे तो यह भी पता है कि कहीं किसी गुप्त तहखाने में रखा है।" तो अंकल ने तय किया कि सुबह बैंक खुलते ही दो लाख रुपये निकालकर तुम्हारे पास ले जाएँगे और घर के सारे कागज़ात और कब्ज़ा ले लेंगे। वेरा ने बड़े ही सहानुभूति भरे लहजे में उसे बताया।

मास्टर ब्रेन

59

"मूर्ख समझते हैं साले मुझे , “

"अंकल फाल्कन अब भी पैसों के लिए तुम्हें ढूँढ़ रहे होंगे," उसने कहा।

"मैं उन्हें वह घर दूँगा ही नहीं ।"

" नहीं, प्यारे," उसने बड़े प्यार से उससे कहा। "वे तुम्हें दो के बदले चार लाख, आठ लाख लेने का लालच देंगे, और तुम मान गए तो ?"

"लानत ब हेजो ऐसे पैसे पर ... , मैं खुद चार-आठ लाख रुपए दे सकता हूँ।" शौकत ने उसकी बात बीच में ही काट दी। "और अगर और कोई गड़बड़ की, तो सालों को मज़ा चखा दूँगा।"

"नहीं, नहीं, ऐसा मत कहो। तुम नहीं जानते सर अमर हाथ कैसे आदमी हैं। यहाँ तो बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी और पुलिसवाले भी उनसे डरते हैं। उनका बहुत रसूख है," उसने चिंतित स्वर में कहा।

"मैं उससे ज़रा भी कम नहीं हूँ, कहो तो अभी सीआईडी के बड़े अफ़सर को फ़ोन कर के यहाँ बुला लूँ ।" शौकत भी सख्त हो गया ।

"अरे, तुम समझते क्यों नहीं? मैं कहती हूँ, अगर थोड़ा-सा भनक पुलिस या सरकारी अफसरों के पास पहुँच गई, तो सब पैसा सरकार के हाथ में चला जाएगा और तुम्हारे दो लाख भी बर्बाद हो जाएँगे। -- वह समझाने लगी।

"बर्बाद हो जाने हैं तो हो जाने दो ... अल्लाह और अधिक देगा।"

"नहीं डियर , इस बीस लाख रुपए में तो हम कितनी अच्छी ज़िंदगी जी सकते हैं। कम से कम मेरी खातिर तो ऐसा मत करना, अपने होने वाले जीवनसाथी की खातिर तो ऐसा मत करना।

यह कहते हुए उसने शौकत के दोनों हाथ अपने हाथों में लिए और इतनी ज़ोर से हिलाए कि शौकत के रोंगटे खड़े हो गए। वह काँपने लगा। वह इस अनुरोध को कैसे ठुकरा सकता था? अपनी होने वाली जीवनसाथी के शब्दों में और ऐसी स्थिति में जहाँ वह इतना...

60

खूबसूरत चेहरे के गुलाबी होंठों में ऐसा जादू था कि शौकत को अगर बकरा भी बनने को कहा जाता तो भी खुशी-खुशी बकरा बन जाता। वह उसके हाथ चूमने लगा।

"तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?" उसने उसकी आँखों में देखते हुए पूछा।

उन्होंने कहा, "मेरी सलाह है कि किसी तरह उन्हें मुनाफे में हिस्सा देकर उनके साथ समझौता किया जाए।"

"मुनाफ़ा?" शौकत सोचने लगा। "क्या, इन बीस लाख में से ?"

"हाँ। तुम तो उससे ऐसे मिले जैसे तुम्हें कुछ पता ही न हो। बस इसी बात पर अड़े रहना हैं किसी भी हालत में मकान नहीं दूँगा, चाहे बदले में मुझे दो-चार लाख का और नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े। यह मेरी इज़्ज़त का सवाल है।"

"और नहीं तो? मैं उनके बाप को भी नहीं दूँगा , चाहे कुछ भी हो जाए। उस घर में तुम्हारा नाम लिख दूँगा । शादी की बात पर शौकत खुलकर बाहर आ गया था ।

"लेकिन ख़ुदा के लिए, मैं उनके सामने कुछ भी ऐसा नहीं कहूँगी जिससे उन्हें मुझ पर शक हो, वरना वो हमारे रास्ते में दीवार बन जाएँगे। शायद मुझे जान से भी मार डालें।"

" नहीं नहीं ,, मैं बेवकूफ़ नहीं हूँ, तुम निश्चिंत रहो। शौकत ने उससे कहा।

"और देखो, वो टर्नर रोड वाली उस बिल्डिंग वाले फ्लैट में कभी नहीं जाना , वरना कोई चाल चल सकता है। तुम बेफ़िक्र घूमते रहो, वो लाखों के लालच में पागल हो रहा है, इसलिए वो ख़ुद तुमसे मिलने की कोशिश करेगा।-- वेरा ने उससे कहा।

"ये भी ठीक है। अगर गर्ज़ पड़ी तो साले सौ बार आएंगे ---- शौकत ने हाँ में सिर हिलाया।

मास्टर ब्रेन

61

उसके बाद वेरा उठ खड़ी हुई और शौकत भी। लेकिन उसी वक़्त खड़ी वेरा को शायद हवा का एक झोंका लगा और वो लड़खड़ाकर गिरने लगी। शौकत ने उसे तुरंत अपनी बाहों में भर लिया। और वो उससे इस तरह लिपट गई कि शौकत की सारी झिझक गायब हो गई। वो अब उसके सीने से चिपकी हुई थी और शौकत सोच रहा था कि जिस लड़की ने ऐसा किया है, उसकी खातिर दस लाख रुपए भी कुर्बान हो जाएँ तो कई महंगा सौदा नहीं ।

मास्टर ब्रेन

62

छलावे

क्या हुआ?

"वे सही समय पर वहां मिले और शौकत का इंतजार करने लगे, लेकिन उससे एक घंटे पहले तक फ्लैट में कोई नहीं था।"

"और शौकत के जाने के बाद वहाँ कोई नहीं रह गया होगा?

"हाँ। पड़ोसियों ने इन अजनबियों पर आपत्ति क्यों नहीं जताई?"

"सिर्फ़ एक पड़ोसी ने पूछा था, तो उसने बताया कि हम फ्लैट मालिक बृजपाल के रिश्तेदार हैं। जब हम पुणे से बम्बई आए थे, तो उन्होंने हमें अपने घर से कुछ सामान लेने आने को कहा था और इसीलिए हम यहाँ आए हैं। फिर किसी पड़ोसी ने उनसे बात नहीं की क्योंकि उनके रूप-रंग से वे बड़े और रईस लग रहे थे, खासकर जब उनके साथ कोई खूबसूरत लड़की हो।-- बाले ने कहा।

"हाँ, वो जो फाल्कन के साथ थी?

" जी हाँ , बहुत सुंदर है।"

"मैं आपसे उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ।"

"दुकान के शोरूम में प्रदर्शित अच्छी चीज़ की भी तारीफ होती है।"

"सरकार, बस काम की बात करो।"

"अरे, आप भी इसे देखोगे तो आप भी किसी काम के ना रहोगे ।"

"तुम कमीने... मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा.

"लैली के पिता भी क़ैस के साथ ऐसा ही करते थे।"

मास्टर ब्रेन

63

"सुअर कहीं के ---खान उठने लगा, लेकिन बाले तुरंत अटेन्शन हो गया और खान को गुस्सा आने के बजाय हँसी आ गयी .

"शौकत का क्या हुआ?"

"वह शहीद ए मुहब्बत हो गए । मैं भाई हराम खोर से उनकी याद में एक शोकगीत लिखवऊंगा ।"

"मैंने ने कहा ना, मैं इस समय बकवास सुनने के मूड में नहीं हूं।

" मगर मैं सचमुच बोर हो रहा हूँ, कम से कम आप ने शौकत की जगह मुझे भेज दिया होता ..... ।

"क्या इन लोगों को पहले कभी इनको वहाँ देखा था ?

"ये उनके लिए बिल्कुल नए चौखटे थे।"

"कमबख्त बहुत चालाक हैं, खाली फ्लैटों को अपने बाप का घर समझते हैं। ---खान ने कहा ।

बाले ने पूछा, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने बहुत ही खतरनाक एयारों से पाला पड़ा है, लेकिन क्या हम उनको फ्लैट में अवैध रूप से प्रवेश करने के लिए गिरफ्तार कर सकते हैं?"

"सबसे पहले तो पूरा कार्यक्रम ही बर्बाद हो जाता और हम कोठी के विषय में जो पता लगाने की कोशिश कर रहे थे, वह नहीं हो पाता। इन लोगों ने भी शायद कोई रास्ता रखा होगा वे कोई भी कानूनी पहलू अधूरा नहीं छोड़ते और अगर रत्नचंद के हत्यारे से उसके कमरे का दरवाजा बाहर से बंद करने और मेज पर सुसाइड नोट और उंगलियों के निशान छोड़ने जैसी मूर्खता नहीं की गई होती, तो हम उसे न्याय के दिन तक अपराधी के रूप में शामिल नहीं कर पाते।"

"उनके साहस की तारीफ की जानी चाहिए। --बाले की प्रशंसा की जानी चाहिए।

मास्टर ब्रेन

64

"उनके पीछे कोई खतरनाक मास्टरमाइंड काम कर रहा होगा।"

"यदि मास्टरमाइंड नहीं होगा तो ये सब चूँ चूँ का मुरब्बा बनकर रह जाएं।"

"अच्छा, तो फिर इस कोठी का क्या हुआ?"

"भाई शौकत लड़की की चालाकी से बच गए।"

"कोई बकवास नहीं,

शौकत ने दो लाख की बोली लगाकर उसे खरीद लिया। फिर जब वो बाहर आया, तो वो लड़की आ गई और उसके साथ गाड़ी में बैठ गई। मैं एक प्राइवेट टैक्सी से उसके पीछे-पीछे गया, क्योंकि शौकत को नहीं पता था कि वो उसे कहाँ ले जा रहा है। लेकिन गोल्डेव क्रॉसिंग पर बीच में ही ट्रेन आ गई और इस बार शौकत की गाड़ी नज़रों से ओझल हो गई। उस गधे को पता नहीं था कि मैं पीछे आ रहा हूँ।

"तो क्या यह भागने का प्रयास था?"

"मुझे संदेह है कि इस लड़की ने उसे डरा दिया होगा कि कोई उसका पीछा कर रहा है, इसलिए वह कार लेकर भाग गया।"

"तुमने मेऋ कार क्यों नहीं ली ? अगर उसे पता होता तो वह ऐसा कभी नहीं करता।

"आपकी कार को जुकाम की शिकायत हुई थी , गेरेज में डलवा कर आया था । ।

"ठीक है, आपको जल्द से जल्द शौकत से मिलना चाहिए और पूरी जानकारी पता करना चाहिए।"

"अब, ईश्वर ही जानता है, कि वो नरक में होगा या स्वर्ग में होगा।

"वह अवश्य लौटेगा, तुम्हें उसके घर पर जाकर देखना चाहिए।"

"अच्छा, क्या आप भी मानते हैं कि इस इमारत से जुड़ा कोई रहस्य है जिसे वे प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं?"

"पक्का तो नहीं, पर शक ज़रूर है। अरे हाँ, क्या तुम्हें उन उंगलियों के निशानों के बारे में कुछ पता चला?" खान ने पूछा।

"आप भूल गए कि आपने यह काम मिस्टर डिसूजा को सौंपा था।"

"हाँ, ठीक है जाओ

"वाह, लेकिन क्या फाल्कन और उसके लंबे चेहरे वाले साथी आपकी नज़र में हैं? ?" बाले ने चलते हुए पूछा।

खान ने जवाब दिया, "राऊफ उनके पीछे है।"

"फिर हाथ-पैर धो रखिए । वह अब्दुल रऊफ़ चाचा की कहानी सुनाता रहेगा और वे दोनों उसे कहीं नहीं मिलेंगे। --बाले ने कहा।

"वे जहाँ भी जाएँगे, शौकत से ज़रूर मिलेंगे, इसलिए शौकत पर नज़र रखना, --खान ने उसे हिदायत दी। और यह मत भूलना कि तुम्हें एक पंथ , दो काज वाला रवैया अपनाना है।

"तो अब पंथ जी के दो काज भी करने पड़ेंगे?" बाले मार खाने के मूड मे था ।

"ओह, कभी-कभी तुम बेमतलब कि सिरदर्दी खड़ी कर देते हो।" खान नाराज हो गया।

" एसप्रो कि दो टिकिया खा के गरारे पहनिये , अल्लाह ठीक कर देगा।

खान अपनी हंसी को दबाने के लिए मुंह पर हाथ रखकर उसके पीछे दौड़ा, लेकिन कुछ ही देर में वह छलावे की तरह बाहर पहुंच गया, जहां गुलाम रसूल ट्रे पर चाय लेकर अंदर आ रहा था।

"अरे, अंदर मत जाओ, मालिक को दौरा पड़ा है, जूते पड़ेंगे , बोटियाँ नोच डालेंगे "

लेकिन गुलाम रसूल ने उसके शब्दों का मतलब समझने के बजाय, अपने दांत दिखा दिए।

"ज़रूर आपकी शामत आई होगी ," उसने ट्रे संभालते हुए कहा।

" शामत के बच्चे --बाले उस पर झपटना चाहता था, लेकिन खान की शक्ल देखकर उसने खुद को रोक लिया।

मास्टर ब्रेन

66

और जल्दी से बरामदे से नीचे कूद गया

****

बिजनेस

शौकत को शम्मू के शब्द याद आ रहे थे जब वे घर से निकल रहे थे: "मियां, आज तो आप बिल्कुल गुलफाम लग रहे हो ।"

शामू सही कह रहा था। ज़रूर कुछ ऐसा ही रहा होगा, जब वीरा जैसी खूबसूरत लड़की उस पर इस कदर फ़िदा थी कि जैसे ही वो बगल में बैठी और उसने गाड़ी चलाई, शौकत को कल्पना में बड़े-बड़े फ़िल्मी हीरो सामने पानी भरते नज़र आने लगे। दिलीप कुमार के हाथ में बाल्टी थी और किशोर कुमार की पीठ पर मटका था और देव आनंद गागरी को सिर पर बिठाए गुज़र रहे थे। तभी अशोक भी नज़र आए, जो बूढ़े होने के बावजूद पीठ पर पानी की मशक लादे हुए थे। शौकत ने नशीली आँखों से वीरा को देखा, पर वह उनके बीच पानी भरते किसी हीरो को नहीं देख रही थी, उसकी आँखें शौकत की गैंडे जैसी मौजूदगी पर कुर्बान हो रही थीं। वह वीरा को ऐसी नज़रों से मुस्कुराया, मानो सिकंदर राजा पोरस से पूछ रहा हो, -बताओ जानेमन , अब तुम्हारे साथ क्या सलूक किया जाए ?

वीरा मुस्कुराया.

लेकिन जैसे ही उनकी गाड़ी शहर में दाखिल हुई, सामने से आ रही एक कार सड़क पर आकर रुक गई और उनका रास्ता रोक लिया। शौकत को ब्रेक लगाने पड़े। वह कार वाले को एक ज़ोरदार गाली देने ही वाला था कि गाड़ी से उतरते हुए उसकी नज़र अमरनाथ पर पड़ी। उसने उसकी जीभ पर भी ब्रेक लगा दिए। सर अमरनाथ गंभीर मुद्रा में उसके पास आए।

"वाह, हम तो कब से तुम्हें ढूँढ़ रहे थे। तुम कहाँ चले गए? हमने बैंक से भी पूछताछ की तो पता चला कि तुमने अभी तक चेक भी नहीं भुनाया है।" सर अमरनाथ ने आते ही पूछा।

लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, अमरनाथ की नज़र वेरा पर पड़ गई। वह उतरने की कोशिश कर रही थी।

"अरे तुम। वेरा, तुम कहाँ गायब थी ?" उसने कुछ कठोर स्वर में कहा।

फ़ॉल्कन, जो अभी भी कार में बैठा था, वेरा का नाम सुनते ही बाहर निकला। उसने वेरा की तरफ़ देखा।

वह तुरन्त गुस्से भरी निगाहों से उसे घूरने लगा।

"तुम घर से क्यों चले आई थी ?" उसने पूछा, उसका मूड खराब हो रहा था।

"अंकल, मैं तो यूँ ही मौज-मस्ती करने जा रही थी , रास्ते में शौकत साहब मिल गए, बोले, आओ मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में घुमा लाता हूँ। --वेरा ने डरे हुए लहजे में जवाब दिया और शौकत की तरफ़ पुष्टि की निगाहों से देखा। शौकत जल्दी से बोला।

"जियान जियान, मुझे यह सड़क पर पड़ी हुए मिली ... अरे, नहीं ... यानि कि मुझे यह सड़क पे खड़ी मिली थी ,--- उस ने जल्दी से कहा, "मैंने hi टहलने के लिए ले जाने की पेशकश की थी।"

"इसमें नाराज़ होने की क्या बात है, मिस्टर फाल्कन? शौकत साहब हमारे लिए कोई अजनबी नहीं हैं। ---सर मरनाथ ने फाल्कन को समझाया तो वह थोड़ा नरम पड़ गया।

"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है। लेकिन तुम्हें मुझसे पूछकर ही घर से निकलना चाहिए, और मुझे लड़कियों को बहुत ज़्यादा आज़ादी पसंद नहीं है," फाल्कन ने भौंहें चढ़ाते हुए जवाब दिया।

"भाई, अपने दिवंगत दोस्त की याद को अपने हाथों में लेने के लिए बेकरार हूँ । । आइए, यहीं एवरग्रीन होटल में बैठकर बातें करते हैं।-- सर अमरनाथ ने बातचीत को मुख्य मुद्दे पर वापस लाते हुए कहा। वेरा ने आँखों ही आँखों में शौकत को इशारा किया कि वह भी ऐसा ही करे।

हालांकि शौकत ने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई, फिर भी वे अपनी कार में बैठ गए और

दोनों कारें मुख्य सड़क से हटकर एक छोटी सड़क से होटल एवरग्रीन की ओर चल पड़ीं, जो मुश्किल से एक फर्लांग की दूरी पर था।

****

थोड़ी देर बाद, वे चारों एवरग्रीन होटल के एक कमरे में एक मेज के चारों ओर बैठ गए।

"वेरा, तुम जरा बाहर जाओ, हम कुछ कारोबार की बातें करेंगे। " -----फलकन ने वेरा से कहा और उसने झुंझलाहट दिखाते हुए शौकत का हाथ दबाया और उठकर बाहर चली गई। शौकत ने कुछ नहीं । फलकन की हरकत उसे नागवार गुज़री, पर वो चुप रहा ।

"इस सूटकेस में दो लाख रुपये नकद हैं, जो हम पिछले दो घंटों से आपके लिए ढो रहे हैं।" सर अमरनाथ ने उस छोटे सूटकेस की ओर इशारा किया जो फाल्कन कार से उतारकर अपने साथ लाया था।
"मिस्टर फाल्कन, उसे चाबी दे दीजिए ताकि वह उसे गिनकर तसल्ली कर सके," उन्होंने फाल्कन से कहा और फाल्कन अपनी जेब में हाथ डालने लगा।

"लेकिन मुझे वह मकान पसंद है, मैं उसे नहीं बेचूंगा, शौकत ने हिम्मत जुटाते हुए कहा।

"इसका क्या मतलब? -----सर अमरनाथ का चेहरा अचानक डर से लाल हो गया। --आपने वह हवेली मेरे लिए खरीदी थी, मेरी तरफ़ से खरीदी थी। --उनका स्वर कठोर हो गया।

"मैं नहीं दूँगा। मेरी खुशी, मेरी मरर्जी --। शौकत को भी वेरा की बाहर मौजूदगी का ख़याल आते ही हिम्मत दिखाई, हालाँकि दिल ही दिल में उसे डर था कि ये दोनों आदमी इस अकेले आदमी का क्या करेंगे।

"अब आपको उस कोठी के कागजात हमें सौंपने होंगे,

इसीलिए मैं आपके पैसे साथ लाया हूँ।-- सर अमर हाथ ने मेज पर मुक्का मारते हुए कहा।

"मैं नही दूँगा। नहीं दूँगा..... । मतलब नहीं ही दूँगा -मैंने उसे खरीद लिया है। --शौकत भी गुस्सा हो गया ।

"अरे, सर अमरनाथ , बहस करने से कोई फ़ायदा नहीं, शौकत साहब भी व्योपारी आदमी हैं, शायद इस काम से कुछ मुनाफ़ा चाहते होंगे।" फाल्कन ने अमरनाथ को समझाने की कोशिश की।

"चलिये मैं आपको तीन लाख दूँगा। कागज़ात लाओ और मेरे हवाले करिए , और लिख दीजिये कि अब तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं है।" सर अमरनाथ ने अपनी जेब से चेकबुक निकालते हुए कहा।

"मैं तुम्हें खुद चार लाख दे सकता हूँ, किसी को नहीं बेचूँगा। शौकत तो अकड़ ही गया ।

"मैं तुम्हें पाँच लाख दे सकता हूँ। अमरनाथ फिर बोला ।

"मैं छह लाख दे सकता हूँ। शौकत बोला और फिर चला गया।

"सात लाख --- अमर नाथ ने मेज पर मुक्का मारते हुए कहा।

"आठ लाख। शौकत ने भी उसी अंदाज़ में मुक्का मारते हुए कहा।

"नौ लाख जल्दी करो। आपको सात लाख का मुनाफ़ा हो रहा है, वो भी सात साल में।नहीं मिलेगा --

शौकत ने तुरंत जवाब दिया, "मैं तुम्हें दस लाख दे सकता हूँ ।"

सर अमरनाथ कुछ कहने ही वाले थे कि फाल्कन ने बीच में ही टोक दिया।

"सर अमरनाथ बेकार है। लगता है उन्होंने किसी तरह उस रहस्य का पता लगा लिया है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?-- सर अमर नाथ ने चौंक कर उसकी ओर देखा।

"मतलब साफ है, वरना डेढ़ लाख रुपए का यह मकान दस लाख रुपए ..... । वे ऐसा खर्च करने को तैयार नहीं होते।"

हाँ, हाँ, मैं समझ रहा हूँ कि आप बीस लाख टके के चक्कर में हैं। --शौकत बेवकूफ़ों की तरह बोला।

ओह, ---सर अमरनाथ उसे घूरने लगा। और फिर उसने अपना सिर पकड़ा और कुर्सी पर बैठ गया।

"सर अमर हाथ, क़ानूनी तौर पर वह हवेली अब उनकी संपत्ति है, बेहतर होगा कि आप सिर्फ़ दस लाख में ही समझौता कर लें। आख़िरकार, उन्हें सिर्फ़ आठ लाख का फ़ायदा ही मिलेगा, जो आपसे कम ही होगा।"

"लेकिन उसने वह घर हमारे लिए ख़रीदा था। --सर अमर हाथ ने नाराज़ होते हुए कहा।-- बस एक शर्त पर। --उन्होंने शौकत की तरफ़ देखा और कहा, "मुझे अब तुम पर भरोसा नहीं रहा। जब तुम मेरे दस लाख रुपये मुझे दे दोगे, तब मैं तुम्हें इस राज़ का पता बताऊँगा।" उन्होंने कहा।

शौकत ने जेब में हाथ डालते हुए कहा, "मैं अभी आपको चेक दे सकता हूँ।"

" नहीं, मैं चेक से इतनी बड़ी रकम नहीं लूँगा, और मैं टैक्स वालों को अपने पीछे नहीं पड़ने दूँगा।

"मैं नकद दे सकता हूँ।"

"तो आज रात आठ बजे उसी जगह, और अगर आठ बजे की जगह सवा आठ हो गए, तो मैं समझ जाऊँगा कि तुम्हारी नज़र बादल गयी हैं। मैं फ़ौरन पुलिस को इत्तला कर दूँगा कि रत्नचंद के बीस लाख रुपए उसकी हवेली के तहखाने में कहाँ रखे हैं। --सर अमरनाथ ने निर्णायक लहजे में कहा।

"मैं दो-गला नहीं हूँ, एक ही भाषा बोलता हूँ। --शौकत ने अपना सामंती गौरव प्रदर्शित किया। "तुम्हारा पैसा आठ बजे तक यहाँ पहुँच जाएगा।"

"मुझे लगता है अब हमारी असली बहस खत्म हो गई है। चूँकि मामला सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझ गया है, तो क्यों न माहौल को थोड़ा हल्का करने की कोशिश की जाए? --फाल्कन ने गंभीर माहौल को मुस्कुराहटों में बदल दिया।

मास्टर ब्रेन

72

"अब मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हालाँकि मेरे 18 लाख की जगह मुझे सिर्फ़ 8लाख ही मिल रहे हैं। यह कहते हुए सर अमर हाथ ने शौकत की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

"और मेरा क्या होगा, ? फाल्कन ने सर अमर से पूछा।

"मैं तुम्हें दो लाख दूंगा और हम आठ लाख बराबर बांट लेंगे।--आपस की बात है --सर अमर नाथ ने कहा.

"केवल दो लाख?" फाल्कन ने विरोध करते हुए कहा।

"देखिये, जो लोग निवेश करते हैं, वही सबसे अधिक लाभ कमाते हैं।"

"ठीक है, जैसी आपकी इच्छा। --फाल्कन ने कोई आपत्ति नहीं की।"

"देखो, यह रहस्य हम तीनों में से चौथे तक नहीं पहुंचेगा," सर अमर हथ ने जोर देकर कहा।

शौकत ने कहा, "मैं बच्चा नहीं हूं।"

"तो अब उठो और चलो .

जब वह उठकर बाहर आया, तो शौकत को वेरा नज़र नहीं आई। फिर भी, उसने अपनी चिंता उसके सामने ज़ाहिर नहीं की। सर अमर नाथ और फाल्कन भी होटल से निकलकर अपनी कार में बैठ गए।

"याद है शौकत साहब, यहीं 8 बजे --सर अमर हाथ ने उनसे धीमी आवाज़ में कहा था।

शौकत भी अपनी कार को दोबारा चालू किया और कार आगे बढ़ गई।

वेरा दाहिनी ओर से प्रकट हुई और उसकी ओर आई।

"क्या वो चले गए?" उसने घबराए हुए स्वर में पूछा और शौकत तुरंत उसकी ओर मुड़ा ।

वेरा गाड़ी में बैठ गई.

"हाँ, लेकिन आप कए कु घबराती हैं? मैं हूँ ना ---"

"उन्होंने खुलकर तो नहीं कहा, लेकिन उन्हें मुझ पर शक हो गया है। भगवान ही जाने वो मेरे साथ क्या सलूक करेंगे ।

अरे, इनकी ऐसी की तैसी, बड़े बदमाश बनाते हैं, पैसे का मामला है, तुम्हारा नहीं । देखता हूँ क्या करते हैं। --शौकत ने उनकी पीठ पीछे अपनी बहादुरी दिखाई।

"मुझे डर लगता है, अब मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगी।"

एम.. म म मेरे साथ,-- शौकत को तुरंत परी बेगम की याद आ गई, जिससे वह अपनी निराशा के बावजूद डरता था। किसी और मामले में नहीं, सिर्फ़ लड़कियों के मामले में। न जाने क्यों, वह परी बेगम को यह एहसास नहीं होने देना चाहता था कि उसके अलावा किसी और लड़की में उसकी दिलचस्पी हो सकती है। हालाँकि वह हर खूबसूरत लड़की की चाहत रखता था, फिर भी उसकी एक कमज़ोरी बन गई थी। वह न तो विलासी था, न ही कंजूस, वह सिर्फ़ मनोरंजन के नज़रिए का आदी था। ये भी बाले की संगत ने उसे बनाया था, फिर भी उसे अपने जीवन में एक अदद हसीना की कमी हमेशा महसूस होती रही थी। उसने परी बेगम को भी इसी हद तक चुना था, लेकिन वह बहुत कठोर निकली, इसलिए वह वेरा की ओर झुक गया।

बहरहाल, अब समस्या यह थी कि उसे कहाँ रखा जाए। उसने ले से सलाह लेने की सोची, पर खुद उसे यह उचित नहीं लगा, यह सोचकर कि अगर वेरा उसकी ओर मुड़ी, तो उसे फिर से तीन फ़ीट की मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। पर साथ ही, उसे अपने मुंशी की याद आई, जोक ई साल बिताने के के बावजूद भी अपने बॉस की नज़र में मुंशी ही था और कुछ मायने नहीं रखत था । वह बुज़ुर्ग और सीधा-सादा आदमी था। वह भी बूढ़ा था। उसने तय किया कि जब तक वह कुछ और नहीं सोच लेता, वेरा को उसके साथ रखेगा, लेकिन उसको फाल्कन का भी ख्याल आया।

"और तुम्हारे चाचा जो मुझ पर अपहरण का आरोप लगा दे तो ?"

"अपहरण क्या ?" वेरा ने पूछा।

अरे, जो ले कर भागते है, लड़के को लड़की या लड़की लड़के को? "वेरा को उसने समझाया ।

वह हंसी , लेकिन फिर गंभीर हो गई।

"मैं वालिग हूं, मुझे जहां चाहूं वहां रहने का अधिकार है।- वेरा थोड़ा कठोरता से बोली

"ठीक है, मैं इंतजाम कर दूँगा।" शौकत ने सिर हिलाया।

"क्या आप रात को आठ बजे वहाँ जायेंगे?"

"तुम्हें यह कैसे पता चला?" शौकत ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

"मैं चाबी के छेद से सब कुछ सुन रही थी। मुझे डर था कि वे तुम्हारे साथ कुछ कर देंगे," वेरा ने उसे प्यार भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"हे भगवान...? यानि इतना ख्याल है तुमको मेरा" शौकत थोड़ा हैरान हुया

कुछ न कह कर वेरा ने शरमाते हुए और सिर झुका लिया ।

"अब तुम साली परी बेगम जैसी हो गई हो।"

हाँ...? वह चौंक गयी।

"नहीं नई कुछ नई .. मेरा मतलब है, तुम हो तो किसी साली परी वरी की भी ऐसी तैसी , तुम परी से कम थोड़ी हो ।"

"डियर , मैं भी रात को तुम्हारे साथ चलूँगी। तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगी।" यह कहते हुए उसने शौकत के गले में हाथ डाला और बोली,

स्टीयरिंग व्हील हिलने लगा।

बोलो ना , ले चलेंगे ?

"हाँ, हाँ, काए को नहीं।"

"मुझसे वादा करो कि तुम मुझे अपने से दूर अलग नहीं रखोगे?"

"नहीं , लेकिन मुझे अभी थोड़ा काम करना है और फिर मुझे इन सालों के लिए पैसे का इंतज़ाम करना है। मुझे बैंक से पैसे निकालने होंगे।"

मास्टर ब्रेन

75

"तो तुम मुझे कहाँ छोड़ोगे?"

"अपने मैनेजर के घर पर , डरो मत, वह मेरा वफादार आदमी है।"

"क्यों, घर पर क्यों नहीं?"

"एक मामला है, मेरे चाचा नवाब साहब भोपाल से आये हैं और अगर वे चले गए तो यह घर पूरा तुम्हारा है।"

शौकत सेक्रेटरी के घर के दरवाज़े पर रुक गया। वह एक छोटा सा एक मंज़िला मकान था, जिसमें सेक्रेटरी नीचे वाले ब्लॉक में और एक यहूदी ऊपर वाले ब्लॉक में रहता था। वह उस समय घर पर ही था, और शौकत को देखकर घबरा गया। उसकी पत्नी दौड़कर दूध का गिलास भर लाई और लड़कियाँ घर की सफ़ाई करने लगीं। लेकिन शौकत उससे अलग से मिला और वेरा के ठहरने के बारे में बताया और वेरा से शाम को आने का वादा करके उल्टे पाँव लौट गया।

☆☆☆

मास्टर ब्रेन

76

लेने के देने

एक तरफ़ वीरा शौकत के दिमाग पर सवार हो गई थी , और दूसरी तरफ़, मुफ़्त में आठ लाख भी हाथ में या जाएँ तो क्या हर्ज़ था? उसने रत्नचंद के घर पर अपनी पकड़ मजबूत ज़रूर कर ली थी , दो नौकर रख दिए थे और बंगले की चौकीदार गोरखे को भी ताकीद कर दी थी ताकि कोई घर में पैर न रख सके। वीरा को छोड़कर लौटते ही उसने यह काम कर दिया था, और अब उसे इस बात का भी संतोष था कि बीस लाख ने खजाने पर उसने पहरा बिठा दिया था। कई बार उसके मन में आया कि बाले से मिल ले, या कम से कम उसे फ़ोन करके इस बारे में सलाह ले ले, लेकिन फिर उसे याद आया कि ख़ान या बाला किसी भी नाजायज़ तरीक़े को बर्दाश्त नहीं करते, चाहे वह उनके सबसे करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों। उसने कई बार अपने तजुर्बे अपनी आँखों से देखे थे। हालाँकि, ऐसा करना पूरी तरह से नुक़सानदेह था। सिर्फ़ मुफ़्त में आठ लाख मिलना ही नहीं! बल्कि उसका अपना पैसा दो लाख भी चक्कर में था वही दो लाख रुपये जिससे कोठी को खरीदा गया था।

लेकिन जब वह अपने कमरे में दाखिल हुआ तो बाले को देखकर हैरान रह गया।

"आप कहाँ गायब हो गए, लॉट साहब?" "हाँ, लाट साहब बोलो ?"

"क्यों? क्या तुम अकेले हो, गुलफाम?"

"तो तुम इस लौंडिया के साथ मज़ा कर रहे थे।"

"कौन सी लौंडिया ?

वही फ़ोलकन की भतीजी जिसने कल रात तुम्हें आमंत्रित किया था।

"हां तो फिर, ?"

"तुम ने रतन चंद का घर किसके लिए खरीदा?"

" अपने लिए । किसी को क्या और तुमको क्या ? यानी अब तुम मेरी खरीद-फरोख्त में भी टांग अड़ा रहे हो।"

"लेकिन तुम ने इसे इन लोगों के लिए खरीदा है, अपने लिए नहीं।"

"ठीक है, जाओ , खरीदा है फिर ?"

"वे तुम से क्या चाहते हैं?"

"कुछ नहीं, मैं इसे अपने पास ही रखूंगा।"

"वाह, बेटा हमको ही उड़ाने लगे ।

"देखो, इसमें उड़ाने का क्या मतलब है? मेरा दिल इसे चाहता था, मैंने इसे खरीदा।"

"शौकत, अगर तुमने मुझसे कुछ भी छुपाया तो तुम बड़ी मुसीबत में फँस जाओगे।"

"मैं दूध पीता बच्चा नहीं हूँ, मैं अपना लाभ-हानि खुद सोच सकता हूँ।"

"तुम जानो मेरी बला से ।"

"हाँ, हाँ, तुम्हारी बला से , तुम जल गए होगे कि वेरा मुझ से मुहब्बत क्यों करने लगी ?" शौकत ने तो फिकरा भी कस दिया ।

"भगवान की कसम, तुम एक क्लासिक गधे हो।"

"तुम खुद होंगे गधे , मियां खान बल्कि , साइकिल वाला गधा , हाथी भी ।"

"ठीक है, मैं चलता हूँ, लेकिन क्या तुम शाम को क्लब चलोगे?"

"मैं हर दिन नहीं जाता.

"अरे, तुम धर्मात्मा कब से बन गये?"

शौकत ने कर्कश स्वर में कहा, "मेरी खुशी की बात है।"

"तुम जल्द ही चीखते हुए आओगे , बेटा।"

अरे हाँ, भाऊत आए । शौकत ने मुँह बनाकर सिर हिलाया। बाले खड़ा हो गया ।

मास्टर ब्रेन

78

शौकत ने पूछा, "आप चाय वाय नहीं पीओगे ?"

"अब मैं तुम्हारे आँसुओं से ही चाय बनाऊँगा और पीऊँगा, जाने मन ।"

"अरे, जाओ मियाँ खाँ। कौवे की कोसने से ढोर नहीं मर जाते ।"

"मैं जा रहा हूँ। --यह कहते हुए बाले ने अपना पी-कैप उठाई और उसका जवाब सुने बिना ही बाहर चला गया

***

रात 8:25 बजे वे अपनी कार में बंगले से निकला । उनके पैरों के पास एक ब्रीफ़केस था जिसमें दस लाख रुपये नकद थे, कुछ तिजोरी से और कुछ बैंक से।

वेरा मुंशी के घर पर बेचैनी से उसका इंतजार कर रही थी।

"ले आए , प्यारे?" वह दौड़ी और अपनी बाहें उसके गले में डाल दीं,और पूछा

शौकत ने फुसफुसाते हुए कहा, "हाँ, मैं लाया हूँ।"

"ओह, बीस लाख, हम कितने अमीर बन जायेंगे।"

"कए के बीस लाख .. ? और जो उन्हें दस लाख रुपये देने होंगे।

"फिर भी, हम आठ लाख का क्या कुछ नहीं कर सकते ?"

"ठीक है, चलो, अब समय हो गया है।

वह कार में उसके बगल में बैठ गई ।

एवरग्रीन जब अपनी कार तक पहुँचा तो आठ बज चुके थे। उसे सर अमरनाथ का कुछ पता नहीं चला। लेकिन जब वह अंदर गया, तो उसने फाल्कन और सर अमरनाथ को एक ही कमरे में पाया। वेरा के अनुरोध पर, शौकत उसे बाहर ही छोड़ गया था। उसे देखते ही दोनों दौड़कर पास आ गए।

क्या तुम पैसे लाए हो?’ फाल्कन ने पूछा.

"हाँ, मैं ले आया। लेकिन पहले मुझे इसमें रखे लाखों रुपयों का पता बताओ।"

अरे, हर इंच का नक्शा ले लो, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। यह कहते हुए सर अमर हाथ ने अपनी जेब से एक हाथ से बनाया हुआ नक्शा निकाला, जिस पर उसी घर का एक रेखाचित्र था। फिर उसके एक कमरे से एक तहखाने का रास्ता दिखाया, जो घर के नीचे बगीचे तक पहुँचता था और पत्थर से बने उस छप्पर के नीचे खत्म होता था, जो घर के माली के रहने के लिए बनाया गया था।

"ये लो ये बीस लाख पैसे। ये उस आले के नीचे हैं जहाँ पत्थर का दीया बना है," सर अमर हाथ ने समझाया। और शौकत अपना सिर हिलाने लगा।

"अब मुझे मेरे पैसे मेरे हाथों में देखने दो।"

"क्या मैं बेईमान हूँ?" शौकत अपना आपा खोने लगा।

फिर भी, तसल्ली करने में क्या बुराई है? यह एक व्यापारिक लेन-देन है," फाल्कन ने उसे समझाया, और शौकत ने उसे सूटकेस की चाबी सौंप दी।

लेकिन जब सर अमर हाथ ने सूटकेस खोला तो वे चौंककर पीछे हट गए।

"शौकत साहब, ये कैसा मज़ाक है? आप तो इसे सादे कागज़ लपेटकर लाए हैं। ---सर अमर हाथ का स्वर गुस्से में आ गया था।

" काए के सादे कागज़? शौकत ने ब्रीफ़केस में झुककर देखा। वह सचमुच सादे कागज़ के टुकड़ों से भरा था।

उसने घबराकर कहा, "अरे, भगवान की कसम, मैंने खुद अपने हाथों से नोट भरे हैं।"

"तुम हमें बेवकूफ बना रहे हो, जबकि हमने तुम्हारे जैसे कितने लोगों को चरा चुके हैं -' यह कहते हुए सर अमरनाथ ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली।

"तो अब थोड़ा खुद चर लो।-- उसने पीछे से आवाज़ सुनी और वह उछल पड़ा।

80

मास्टर ब्रेन

वे खड़े हो गए। सुपरिंटेंडेंट खान उनके सामने खड़े थे। कमरे का एक दरवाज़ा खुला था, शायद उसी से अंदर आए होंगे। "खबरदार अमर हाथ, अगर पलटा तो गोली मार दूँगा। पिस्तौल गिरा दो।"

"आप कौन हैं?" फाल्कन हकलाया।

ख़ान साहब, क्या आप...? शौकत चौंक गई।

"आप इन धोखेबाजों से 8 लाख कमाने आए थे, अकलमंद ----खान ने शौकत की ओर देखते हुए कहा. उनकी तरफ इशारा किया

"लेकिन वे मेरे बीस लाख ..." शौकत कहना चाहता था ।

"रत्नचंद के घर में एक पैसा भी नहीं है। अगर मैंने तुम पर नज़र न रखी होती, तो वह तुम्हारे दस लाख लेकर गायब हो जाता।

"अल्लाह कसम, यह मेरी गलती नहीं है। इस लड़की ने मुझे बताया।"

"वो उनकी एक हथियार हैं। वे बहुत चालाक और शरीफ़ दिखने वाले लुटेरे हैं। और ठीक तुम जैसे ही मूर्खों पर वे हाथ साफ करते रहते हैं।

"क्यों बे साले अमरनाथ ? शौकत को सर अमरनाथ पर गुस्सा आया।

"यह जो अमरनाथ है, छटा हुया बदमाश है " एक सेवानिवृत्त, असंतुष्ट खान ने जवाब दिया।

"हमने कोई अपराध नहीं किया है। आपको हमारे प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

"क्या तुम कर सकते हो?" अमरनाथ ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। उसने पिस्तौल नीची गिरा दिया थी।

"कम से कम एक अपराध तो तुम्हारी यह पिस्तौल है।"

"ओह, यह तो एक अमेरिकी पिस्तौल है। नकली है , मेरे एक दोस्त के बच्चे ने खेलते समय इसे मेरी जेब में रख दिया था," अमरनाथ ने संतोष के साथ कहा।

"बहुत दिनों बाद तुम मेरे हाथ आए हो। तुम्हारी चालाकियाँ अब तुम्हारे किसी काम नहीं आएंगी। मुझे पता है कि तुमने इन छल-कपटों से शहर में कितनी लूट मचाई है।

मास्टर ब्रेन

81

---- खान ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"हमने कभी कोई कानूनी अपराध नहीं किया है।"

"और क्या आप यहाँ फ़ातेहा पढ़ रहे थे?"

"हम यहाँ शौकत साहब से शराफत से पूछ रहे थे कि उन्होंने फाल्कन की भतीजी का अपहरण करके उसे कहां छिपाया गया है?" उसने बड़े विश्वास के साथ पूछा।

क्या मतलब है तुम्हारा? खान चौंक गया।

"शौकत साहब से ही पूछ लो। अब फाल्कन बोला, "मेरी भतीजी सुबह से नहीं है।वह लापता है और वह इनके साथ ही गई थी ।"

"शौकत क्यों? खान शौकत की ओर मुड़ा।

हाँ, हाँ, लेकिन वह खुद ...

"अरे गधे हो तुम , कहां है वो ?

" अभी तो बाहर ही थी .

"ओह!" कहते हुए खान ने मुड़कर बाले को पुकारा और एक मिनट बाद बाले खिड़की से अंदर झुकता हुआ दिखाई दिया।

"वो लड़की जो कार से उतरी, कहाँ गई?"

"क्या वह कमरे में नहीं है?" बाले ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं, यहाँ तो नहीं हैं।

"ओह, मैं देखता हूँ --। यह कहकर बाले भाग गया।

फिर भी खान ने उन दोनों को हिरासत में ले लिया।

मास्टर ब्रेन

82

दूसरी आत्महत्या

वे एक बुरी तरह क्षत-विक्षत शव की जाँच कर रहे थे। शव एक युवती का था। जैसा कि उसके कुछ अंगों से स्पष्ट था। रेलवे पुलिस को एक लिफ़ाफ़ा मिला था जिसके अंदर एक चिट्ठी थी। उस लड़की ने ट्रेन के नीचे आकर आत्महत्या कर ली थी क्योंकि किसी ने उसका अपहरण कर उसे अपनी हवस का शिकार बनाया था। अपहरणकर्ता का नाम शौकत था, और आत्मघाती हमलावर ने अपना नाम वेरा फाल्कन लिखा था। जैसे ही सुपरिंटेंडेंट खान पहुँचे, डीसीपी ने उन्हें चिट्ठी दिखाई, खान हैरान रह गए। चिट्ठी में यह भी लिखा था कि कैसे उन्होंने उसे अगवा किया और एक उपनगरीय तटीय इलाके में एक खास जगह ले गए। उसके बाद, कैसे उन्होंने उसे अपने मैनेजर के घर में नज़रबंद रखा। और रात में, वह वहाँ से भागने में कामयाब रही, लेकिन चूँकि वह अब दुनिया को अपना चेहरा दिखाने लायक नहीं थी, इसलिए उसने आत्महत्या को ही अपनी भलाई समझा । चिट्ठी में शौकत का पता भी लिखा था।

"और आपने अपने दोस्त को बचाने के लिए लड़की के चाचा और उसके साथी को हिरासत में ले लिया। खान ने डीसीपी के अनपेक्षित शब्द अपने कानों में सुने। सीपी का गैर-एके

"लेकिन सर, मैंने इन लोगों के बारे में पहले ही बता चुका हूँ ।"

"इस कहानी पर कौन यकीन करेगा, खान साहब? क्या आपके पास सबूत है, किसी बात के ?" डीसीपी ने पूछा।

और खान, इतना अनुभवी और हाजिर जवाब होने के बावजूद, उस पल लाजवाब हो गया। स्थिति ने वाकई एक अजीब मोड़ ले लिया था। फाल्कन और अमर हथ के खिलाफ कोई अपराध सिद्ध नहीं हुआ था।

मास्टर ब्रेन

83

कम से कम इस मामले में इसे साबित करना नामुमकिन हो गया। शौकत के पास अमर हथ द्वारा दिया गया सिर्फ़ एक बैंक का चेक था, और वो भी फ़र्ज़ी निकला। अमर नाथ ने इसे सिरे से नकारते हुए कहा कि उसने शौकत साहब को कोई चेक नहीं दिया था, न ही उसका किसी बैंक में कोई खाता है। मुझे और फाल्कन को फँसाने के लिए ये मामला गढ़ा गया है, ताकि हम वेरा की तलाश करते हुए शौकत साहब के ख़िलाफ़ पुलिस में रिपोर्ट न दर्ज करा दें। जहाँ तक उन लाखों रुपयों वाले सूटकेस की बात है, तो सबसे पहले तो उसमें से कागज़ात बरामद हो चुके थे और अगर नोट बरामद होते, तो वे कह सकते थे कि शौकत उसे वेरा के बारे में चुप रहने के लिए रिश्वत दे रहा था।

बाकी तहखाने का नक्शा वगैरह बेमतलब की चीज़ें थीं और अमर हाथ ने साफ़ इनकार कर दिया कि ये उसने नहीं दिए । यह योजना शौकत के दिमाग़ की उपज रही होगी। लेकिन ख़ान ने इस बेमतलब चीज़ को अपनी जेब में ज़रूर संभाल कर रखा था।

"मुझे आज शाम तक इन सब बातों का स्पष्टीकरण चाहिए, वरना मुझे आपके खिलाफ भी कार्रवाई करने पर मजबूर होना पड़ेगा।' डीसीपी का स्वर रूखा सा था।

"जी बेहतर है। --खान ने बस इतना ही कहा।

"शौकत को गिरफ्तार करने के लिए तुरंत किसी को भेजो।" यह कहते हुए, डीसीपी, जो कि मूड में नहीं थे, भारी कदमों से दफ्तर से बाहर चले गए, जहाँ उनकी कार खड़ी थी।

****

कुछ घंटों बाद, अमरनाथ और फाल्कन्स आज़ाद हो गए। और शौकत लोहे की सलाखों के पीछे पहुँच गया था। जो हुआ था वह बिल्कुल अप्रत्याशित था और पहली बार खान को इस बात का गहरा एहसास हुआ था कि अपराधियों में भी ऐसे दिमाग होते हैं जो कानून को चकमा दे सकते हैं। और कानून सिर्फ़ सबूतों पर यकीन करता है। लेकिन उसने किसी भी परिस्थिति से निराश होना नहीं सीखा था, न ही उसका स्वभाव उसे इसकी इजाज़त देता था। हमेशा की तरह आज भी?

हमेशा की तरह आज भी वह शांत था।

मास्टर ब्रेन

84

और वह किसी गहरी सोच में खोया हुआ लग रहा था। और इस बार, बाले की खोपड़ी उन अपराधियों की दिमाग का लोहा मान गई थी, जिनसे पाला पड़ा था । दरअसल, यह बिलकुल-- तू डाल डाल मैं पात पात --वाली बात वाला मामला था। वह खुद इस बार ज़्यादा सही कदम उठाने के बारे में आश्वस्त था, लेकिन खान अभी भी एक रहस्य था, वह क्या करेगा, क्या सोच रहा है, यह न तो बाले समझ पा रहा था और न ही कोई और। शौकत का पूरी रइसी ठुस्स हो गई थी और वह लगभग पागल सा लग रहा था। क्योंकि जो अपराध उसने किया ही नहीं था, वह उस समय हर कानूनी नुकते से उस पर थोपा जा रहा था, उसको सज़ा हो सकती थी, जिसे न तो उसकी करोड़ों की दौलत रोक सकती थी और न ही उसका रुतबा। ये होने के बाद, उसने बस यही उम्मीद की थी कि खान और बाले उसके लिए कुछ करेंगे, लेकिन जब उसने डिटेंशन सेंटर के बाहर पुलिस अफसरों को

आपस में बात करते सुना और यह अफवाह उसके कानों तक पहुँची कि खान और बाले पर भी कोई आरोप लगाया जा रहा है, तो उसकी हिम्मत जवाब दे गई। वह घुटनों पर सिर रखकर बैठ गया। बस। जो भी था, उसकी अपनी मूर्खता का नतीजा था, न ही वो बाले से कोई राज़ छिपाता , न ही ये होता । अगर इन लोगों को रात के आठ बजे मीटिंग की जगह और समय पहले से पता होता, तो शायद वहाँ टेप रिकॉर्डर लगवा देते, या कोई और इंतज़ाम कर लेते।

और खान को यह भी गलतफहमी थी कि अपराधी, जो खतरनाक नहीं देखते हैं और मामूली किस्म के हैं, हिरासत में लिए जाने पर कुछ भी स्वीकार कर लेंगे। इसीलिए उसने उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, बस शौकत के कर्मचारी शमो को बुलाकर उसका ब्रीफ़केस बदलवाया और रद्दी कागज़ भरवाए। और बाद में, शौकत का पीछा ही उसे यहाँ ले आया। वह दिन में भी यहाँ पहुँच जाते , अगर शौकत बाले की निजी कार को किसी और की समझकर भाग न जाता, या बीच में कोई ट्रेन न आ जाती। खैर, संयोग थे या घटित हुए, सब कुछ उल्टा ही हो गया।

****

मास्टर ब्रेन

85

खान अपने दफ़्तर में बैठे, अपनी मेज़ पर रखे ढेर सारे फिंगरप्रिंट फ़ोटो और रजिस्टरों को लेंस से देख रहे थे, तभी फ़ोन की घंटी बजी। उन्होंने बिना सोचे-समझे रिसीवर उठाया और कान से लगा लिया।

"नमस्कार, प्यारे पुलिस ब्रेन , मैं मास्टर ब्रेन बोल रहा हूं।

उसने एक अजीब, भारी आवाज सुनी, और उस समय उसे पता नहीं था कि वह किसकी थी।

पता नहीं कैसे यह बात ध्यान में आई और खान ने अचानक अपना स्वर बदल दिया।

" आप किसको मांगता साहब ? , खान सर,को ? --- वो चपरासी जैसे अंदाज़ में बोला

"हाँ, उन्हें जल्दी से बुलाओ," दूसरी तरफ से आवाज आई।

"एक मिनट रुको ," खान ने रिसीवर मेज़ पर रखते हुए कहा, दराज़ से एक पॉकेट रिकॉर्डर सेट निकाला जो बैटरी सिस्टम से चलता था, उसे फ़ोन रिसीवर से जोड़ा और अपना चेहरा रिसीवर की तरफ़ झुका लिया। उसने अपना कान थोड़ा दूर रखा।

"हेलो, मैं सुपरिंटेंडेंट खान बोल रहा हूँ।" उन्होंने फोन पर अपनी ही आवाज़ में कहा।

"पुलिस ब्रेन, मैं मास्टर ब्रेन बोल रहा हूँ। दूसरी तरफ से आवाज़ आई,

"शौक से बोलो, क्या बात है?"

"मेरे कानूनी काम में दखल देकर तुमने मुझे अपना दुश्मन बना लिया है, हालाँकि तुम कुछ ही घटनाओं से समझ गए हो कि मैं पूरे शहर में कानून को अपनी उँगलियों पर नाचा सकता हूँ। --उधर से आवाज़ आई।

"आपका बयान टेप पर रिकॉर्ड किया जा रहा है। खान मुस्कुराए और बोले,

"मुझे पता है कि आपके विभाग का टेलीफ़ोन सिस्टम इस समय ऑटोमैटिक

रिकॉर्डिंग सिस्टम लगाने में कम से कम एक साल की देर है। खैर, आइडिया के लिए शुक्रिया, --------
उधर से आवाज़ आई।

"अच्छा , बको , क्या बक रहे थे?"

"मैं तो कह रहा था कि तुमने मेरे आदमियों को परेशान करके मुझे दस लाख रुपए का नुकसान पहुँचाया है। और यह बहुत बड़ा नुकसान है। लेकिन मेरे एक इशारे पर तुम्हारा वह बकरा खुद जेल पहुँच गया और तुम्हारी कुर्सी खतरे में पड़ गई।"

"यह कोई खास बात नहीं , मुझे पता है कि मुझे क्या करना है।"

"ये कोई खास बात नहीं है ? बस मेरी एक और तरकीब तुम दोनों को भी तुम्हारे उस दोस्त के पास पहुँचा सकती है, पर मुझे ऐसी चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं बिज़नेस करता हूँ और अगर तुम चाहो तो ये मामला बिज़नेस तरीके से भी निपट सकता है।"

" क्या मतलब ?"

"इसका मतलब यह है कि अगर मुझे वह दस लाख मिल जाए तो मैं तुम्हारा मामला साफ़ कर सकता हूँ और तुम्हारा दोस्त भी बाइज़्ज़त बरी हो सकता है।"

:वो किस तरह ?

"यह मुझ पर छोड़ दो। यह पैसा तुम्हारी जेब से तो नहीं जाएगा, इसलिए बेहतर होगा कि तुम इमेरी पेशकश सोच-समझकर स्वीकार करो।"

"खैर दोस्त, तुमने इस समय मेरी पोजीशन को सचमुच उलझन में डाल दिया है, लेकिन मैं शौकत से मिलने के बाद ही तुम्हें जवाब दे सकता हूँ।

"मैं इतनी बेवकूफ़ नहीं हूँ कि इस बहाने तुम्हें अपना फ़ोन नंबर और मिलने का समय दूँ। तुम्हें पता है कि वो तुम्हारी हर बात मान लेगा और फिर दस लाख रुपये दे देगा, उसका कुछ कम होने वाला नही है । उसके पास काफ़ी दौलत है।

"दस लाख बहुत है, मैं उसे पाँच लाख देने के लिए राजी कर सकता हूँ।"

"ठीक है, भले ही यह आपकी वजह से केवल पांच लाख नुकसान ही क्यों न हो, लेकिन मुझसे वादा करो कि भविष्य में तुम मेरे मामलों में हस्तक्षेप नहीं करोगे।"

खान ने कहा, "मैं निश्चित रूप से हस्तक्षेप करता, लेकिन आप कानून के दायरे में नहीं आते, आप एक महान वकील लगते हैं," और जवाब में उन्होंने दूसरी तरफ से एक लंबी हंसी सुनी।

"ओह, आप मेरे व्यक्तित्व का अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे हैं, हालांकि इस देश में वकील कुछ भी करके बच निकल सकते हैं।"

"अच्छा, इन पैसों को कहाँ पहुचाया जाए ? मुझे आज शाम तक अपने डिप्टी कमिश्नर के सामने अपनी स्थिति स्पष्ट करनी है।"

"राजेश्वरी पहाड़ी पर एक छोटा सा वीरान मंदिर है। सूर्यास्त के समय, बस तुम उस पैसे को लेकर इस मंदिर में आ जाना। इसके बाद, मेरा काम मिनटों में पूरा हो जाएगा, लेकिन याद रखना, चालाकी के मामले में मैं तुमसे दो कदम आगे हूँ। अगर तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की, तो तुम नुकसान में रहोगे।

खान ने जवाब दिया, "मैं अपना वादा पूरी तरह पूरा करूंगा।"

"ठीक है, तो शाम को, सूर्यास्त के समय, राजेश्वरी की पहाड़ी पर।" इतना कहकर उसने बात काट दी।

खान ने फ़ोन रख दिया, रिकॉर्ड निकाला, उसे सावधानी से लपेटा और अपनी जेब में रख लिया। अब वह सीधे डीसीपी के दफ़्तर जा रहा था।

****

"मैं कैसे यकीन कर सकता हूँ कि ये सब सही है? ---डीसीपी ने शक की नज़र से देखा

"अगर आप इस बात पर यकीन करके और शौकत को रिहा नहीं करना चाहते हैं तो कोई बात नहीं, लेकिन बेहतर होगा कि…

मास्टर ब्रेन

88

शाम को आपको भी राजेश्वरी पहाड़ी तक साथ चलना चाहिए।

"अच्छा, मैं जाऊँगा।

बाकी का इंतजाम मैं कर लूंगा।' खान ने लौटते हुए जवाब दिया और डी. सी.पी. ने बस अपना सिर हिलाया।

मास्टर ब्रेन

89

उल्टी गंगा

राजेश्वरी की पहाड़ी शहर से बाहर थी, पर ज़्यादा दूर नहीं थी । हालाँकि, वहाँ कोई बस्ती नहीं थी। उन दिनों सुरंगों के ज़रिए इसके एक हिस्से की खुदाई हो रही थी, लेकिन वो एक ठेकेदार था, जिसका काम हफ़्ते में सिर्फ़ दो-तीन दिन ही होता था और पिछले कुछ दिनों से यहाँ बिल्कुल भी आहट नहीं हो रही थी, शायद वो काम भी बंद हो गया था। इस पहाड़ी की चोटी पर एक बहुत पुराना मंदिर था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वो मुग़ल काल से भी पुराना है। शायद ये कोई कहावत है या अंदाज़ा। हालाँकि, मंदिर भी अपनी टूटी-फूटी हालत की वजह से निर्जन था और पहाड़ी भी। पहाड़ी के दोनों तरफ़ पूर्व दिशा से रास्ते गुज़रते थे जिन पर आवाजाही बहुत कम होती थी और क्योंकि अब

उपनगरीय मुख्य सड़क से बस्ती तक एक अलग पक्की सड़क बना दी गई थी, इसलिए पीछे के रास्ते बंद थे। इस बस्ती से गुज़रने के बाद या तो ठेकेदार के पत्थर वाले ट्रक पहाड़ी की तरफ़ चले जाते थे या फिर ठेकेदार ख़ुद टैक्सी वगैरह में चला जाता था। कुछ लोग सुपरिंटेंडेंट ख़ान की गाड़ी को इधर से गुज़रते देख चौंक ज़रूर गए , लेकिन किसी ने कुछ कहा नहीं।

सूरज ढल रहा था और पश्चिम में आसमान धूसर हो रहा था। खान ने पहाड़ी के नीचे अपनी कार रोकी और कार से उतरकर चारों ओर देखने लगे। डीसीपी भी अपनी कार में थे, लेकिन वे कार से बाहर नहीं निकले। उस समय पहाड़ी के आसपास सन्नाटा था। हालाँकि, दूर हवाई अड्डे के ऊपर एक प्रशिक्षण विमान मंडराता हुआ दिखाई दिया।

खान ने अपनी कलाई घड़ी देखी, सात बजने में सिर्फ़ पाँच मिनट बाकी थे और सूर्यास्त होने में बस एक मिनट। वह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। पहाड़ी ज़्यादा ऊँची नहीं थी और न ही ऊपर तक पहुँचना मुश्किल था, लेकिन उसका वह हिस्सा जहाँ सुरंगें थीं, क्षतिग्रस्त था।

क्योंकि उन्हें खोदा गया था। इस तरफ़ से पहाड़ सीधी दीवार जैसा दिख रहा था। जब वह ऊपर पहुँचा, तो उसे बस कुछ बिखरी हुई चट्टानें दिखाई दीं। कोई भी नज़र नहीं आ रहा था।

सामने एक मंदिर का खंडहर था। उसने इधर-उधर देखा और अंदर घुस गया। कार से लाया सूटकेस उसने मंदिर के खंडहर के बीच में रख दिया और जेब से रूमाल निकालकर पसीना पोंछने लगा। शायद यही इसका संकेत था। हालाँकि, इस हरकत के बाद वह कुछ सेकंड वहीं खड़ा रहा, फिर बाहर आ गया। उसने सूटकेस ऐसी जगह रखा था जहाँ से वह या उसे उठाने वाला व्यक्ति बाहर से दिखाई दे सके।

बाहर आकर वह कुछ दूर तक पीछे चला गया और फिर जल्दी से एक चट्टान की आड़ में छिप गया।

थोड़ी देर बाद उसे कदमों की आहट सुनाई देने लगी। कोई ज़रूर मंदिर की ओर बढ़ रहा था। खान की नज़र सूटकेस पर टिकी थी। अचानक उसे खंडहर में हल्की सी सरसराहट सुनाई दी और फिर उसने खंडहर की भीतरी दीवार से एक हाथ सूटकेस की ओर बढ़ता देखा। उसने जेब से रिवॉल्वर निकाली और चट्टान की ओट से निकलकर दबे पाँव खंडहर की ओर दौड़ा। साथ ही, खंडहर में घुसते ही उसने सीटी भी बजाई।

"चुपचाप खड़े रहो, वरना गोली मार दूँगा। --खान बाहर आया और भागते हुए आदमी पर अपनी पिस्तौल तान दी। वह अचानक रुक गया। सूटकेस उसके हाथ में था। जब उसने मुड़कर खान को उसके

हाथ में पिस्तौल के साथ देखा, तो वह डरा हुआ लग रहा था। वह एक बूढ़ा लेकिन स्वस्थ आदमी था। उसके कपड़ों से लग रहा था कि वह कोई उपनगर का रहने वाला है।

"तो तुम ये पैसे लेने आए थे। और वो कहाँ हैं?' खान की आवाज़ भारी हो गई थी। तभी उसे दौड़ते हुए कदमों की आहट सुनाई दी और पीछे से डीसीपी भी आ गए। एक सब-इंस्पेक्टर और दो सिपाही दाएँ-बाएँ दौड़ रहे थे।

"अरे... मैं निर्दोष हूँ, साहब, मेरी कोई गलती नहीं है। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ," उसने डरते हुए कहा। लेकिन उसकी बात सुनने के बजाय, खान के कान एक आवाज़ सुनकर खड़े हो गए। यह एक कार के स्टार्ट होने की आवाज़ थी।

ख़ान ने उस आदमी को सब-इंस्पेक्टर की ओर धकेला और खुद मंदिर के पीछे से पहाड़ी की पिछली ढलान की ओर भागा। उसके कदम अचानक रुक गए जब उसने दूसरी तरफ़ खाली, अधपकी सड़क पर एक कार दौड़ती देखी। वह एक लंबी भूरी कैसर थी। ख़ान ने उस पर गोली चला दी। और उसे ऐसा करते देख, डीसीपी भी पीछे नहीं रहे। लेकिन वो निशाने की पहुँच से बाहर थी । वे बेतहाशा भागे और पहाड़ी से पीछे की ओर उतरने लगे। एक कॉन्स्टेबल जोश में उनसे आगे निकल गया था कि अचानक एक धमाका हुआ और कॉन्स्टेबल के पास पड़े पत्थर उड़ने लगे। वह चीखता हुआ पीछे की ओर लुढ़क गया।

फिर दो-तीन धमाके और हुए और उनके कदम थम गए। पहाड़ी के निचले हिस्से में सुरंगें फट रही थीं।

उन्हें उस अजनबी को पहाड़ी से नीचे उतारकर हिरासत में लेना पड़ा। जैसे ही खान अपनी कार में बैठा, उसने वायरलेस चालू कर दिया। उसमें से हवा की आवाज़ आने लगी।

"हैलो , सार्जेंट बाले , खान कालिंग । --खान ने माउथ पिस में कहा। थोड़ी देर बाद, उसे बाले की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

"जी सर, एक कार इस पहाड़ी से आती हुई लग रही थी। अब वह डांडा इलाके से उपनगरीय मुख्य सड़क की ओर मुड़ रही है... ओह, येस... वह मुख्य सड़क की ओर जा रही है।"

"कार का नंबर ?

92

"नंबर... साफ़ दिखाई नहीं दे रहा। अनिल, फिर से गोता लगाओ, उसने किसी और से कहा।
इतनी देर में खान ने अपनी गाड़ी स्टार्ट कर दी थी। डीसीपी उसके बगल में बैठे थे। और बाकी लोग, इस कैदी के साथ, गाड़ी की पिछली सीटों पर बैठ गए थे। खान की गाड़ी मुख्य सड़क की ओर वापस जा रही थी।

" कहां से बोल रहा है ?"डीसीपी बोला

खान ने खिड़की से बाहर उंगली दिखाते हुए कहा, "वह अपने एक पायलट दोस्त के साथ हवाई अड्डे पर एक प्रशिक्षण जेट पर उसी इलाके के ऊपर से उड़ रहा है... वो देखिए ... वो जहाज जो दूर गहराई तक गोता लगा रहा है।" डीसीपी ने बस सिर हिला दिया।

कुछ देर बाद वायरलेस पर फिर घंटी की आवाज़ सुनाई दी। उसकी गाड़ी सड़क पर एक जगह रुक गई थी।
"ओके, ओके" खान ने गाड़ी और तेज़ कर दी।

लेकिन वे मुश्किल से दो मील ही चले थे कि खान को अपनी कार पर ब्रेक लगाने पड़े। वह यह देखकर चौंक गए कि वही कार डांडा इलाके में पुलिस स्टेशन के सामने खड़ी थी।

खान ने अपनी गाड़ी रोक दी। सब लोग गाड़ी से उतर गए और खान तेज़ी से थाने में दाखिल हुआ। उसे देखते ही सिपाही डर के मारे खड़े हो गए। और उसका अभिवादन करने लगे। दफ्तर के अंदर बैठा इंस्पेक्टर भी उसे सामने देखकर डर के मारे खड़ा हो गया। और ध्यान से उसका अभिवादन करने लगा। लेकिन उसकी तरफ देखने के बजाय, खान उस सजे-धजे और खूबसूरत आदमी को घूरता रहा जो किशमिश के रंग का महँगा सूट पहने इंस्पेक्टर के सामने बैठा था।

"ये रिपोर्ट लिखवाने आया है सर, रामेशवारी पहाड़ी के पास से गुज़रते हुए कुछ हथियारबंद बदमाशों ने उसकी गाड़ी पर गोलियाँ चला दीं।

इंस्पेक्टर ने उस आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा.

मास्टर ब्रेन

93

"क्या आपने उन्हें ठीक से देखा, महोदय? खान ने उस आदमी से पूछा।

"मैं डर गया था, इसलिए अपनी गाड़ी में जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भागा। मैंने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।

इसी बीच डीसीपी भी अंदर आ गए और इंस्पेक्टर का चेहरा और भी चिंताग्रस्त हो गया। इतने बड़े अफसरों के इस अप्रत्याशित और अचानक आगमन से वह डर गया था, न जाने क्या हो रहा था। वे पहले कभी इस तरह नहीं आए थे। बाहर सिपाही और दूसरे जूनियर अफसर भी यही बातें कर रहे थे।

“तुम वहाँ क्या कर रहे थे?” खान ने उस आदमी से पूछा।

"मैं अक्सर शाम को मौज-मस्ती के लिए इस सुनहरे रास्ते पर समुद्र तट पर जाता हूं, और आज जब मैं लौट रहा था तो यह घटना घटी।”

"ओह, ठीक है, ठहरिए । --तभी कार ख़ान ने दरवाज़े से बाहर देखा और सब-इंस्पेक्टर को आवाज लगाई

"मिस्टर साने, इस आदमी को यहाँ लाओ।"

बाहर से एक आवाज़ आई और फिर तुरंत सब-इंस्पेक्टर साने उस आदमी को लेकर अंदर दौड़े जिसे उन्होंने पहाड़ी से गिरफ़्तार किया था। वह आदमी उस समय बिल्कुल शांत लग रहा था। जैसे ही उसकी नज़र अजनबी पर पड़ी, खान ने ध्यान से दोनों के चेहरों को देखना शुरू कर दिया। उसने देखा कि रिपोर्ट लिखाने वाले अजनबी के चेहरे पर किसी भी तरह का कोई भाव नहीं था, हालाँकि, गिरफ़्तार आदमी थोड़ा सहमा ज़रूर था, लेकिन उसने बड़ी ही चतुराई से अपनी हालत संभाल ली। डीसीपी उस अजनबी को ध्यान से देख रहे थे।

"तुम्हें इसकी जानकारी तो होगी ही?" खान ने धीमे शब्दों से अजनबी से पूछा।"

.कौन ? ये..? --ये कहते हुए उसने बड़ी मासूमियत से गिरफ़्तार हुए आदमी की तरफ़ देखा और फिर उसने भी सिर हिला दिया।---" नहीं।

" नहीं, मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा, लेकिन क्यों?"

खान ने जवाब देने के बजाय कैदी की ओर रुख किया।

"क्यों..? तुम तो कह रहे थे कि उसने खुद तुम्हें अंदर से सूटकेस लेने भेजा था।" खान ने उसे घूरते हुए पूछा।

"नहीं, नहीं, ये झूठ है... ये झूठ है।" वह आदमी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया। "मैंने खुद सोचा था कि तुम लोग चोर हो।" उसके अजीब जवाब ने उन्हें चौंका दिया।

वह उनके मुँह पर उन्हें संदिग्ध चोर कह रहा था। और अजनबी के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आई और फिर गायब हो गई।

"चुप रहो।" खान ने उसके मुँह पर तमाचा मारा। "तुम्हें लगता है कि पुलिस बेवकूफ़ है।" उसने गुस्से में कहा। "खुद को बचाने के लिए पहले एक सज्जन पर आरोप लगाया और अब, जब उसे उनके सामने लाया गया, तो अपना बयान बदल दिया।"

"मैंने कोई बयान नहीं दिया। --थप्पड़ खाने के बाद भी कैदी निडरता से बोलता रहा।

खान ने साने को इशारा किया और वह कैदी को बांह से पकड़कर बाहर दूर ले गया

"हमें खेद है, मिस्टर .. .. खान ने कहा, और कुछ देर रुककर ऐसा लगा जैसे उनका नाम मालूम करना चाहता हो ।

"महरेश... महरेश देसाई," उसने अपना परिचय दिया।

" देसाई साहब , हमें खेद है कि गलतफहमी के कारण हमें आपका मामला अपने हाथ में लेना पड़ा।

मास्टर ब्रेन

95

"हमने गोली चलाई। हम इसके लिए माफ़ी मांगते हैं। खान ने कहा।

"अच्छा, और अगर एक आध गोली से मेरी मौत हो जाती, तो आप किससे माफ़ी मांगते ?" उसने ऐसे लहजे में पूछा जो अप्रिय और सुखद दोनों था।

खान ने कहा, "पुलिस समझ बूझकर गोली चलाती है, लेकिन अगर आपकी कार को कोई नुकसान हुआ है, तो उसकी मरम्मत करवा दी जाएगी ।"

और महरेश मुस्कुराया---यह ज़रूरी नहीं है, लेकिन आप लोग सावधान रहें।-- यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

खान ने हंसते हुए जवाब दिया, " आगे सावधान रहेंगे ।"

जाते हुए, खान इंस्पेक्टर के रजिस्टर पर झुका। वह अपनी नोटबुक में उस आदमी का नाम और पता लिख रहा था।

"ये सब क्या गड़बड़ हो रहा है?" डीसीपी रूमाल से अपना पसीना पोंछ रहा था।

"क्या आपको अब भी यकीन नहीं है कि इस बार हमारा अतीत बहुत चालाक लोगों के साथ बीता है। ऐसे लोग जो कानून की कुछ कमज़ोरियों का हर संभव तरीके से फ़ायदा उठाना जानते हैं?"

"समझ नहीं आ रहा। मामला बहुत पेचीदा है और पुलिस की हालत इस वक़्त जोकरों जैसी हो गई है।-- डीसीपी का लहजा व्यंग्यात्मक था।

"मेरे 48 घंटे अभी पूरे नहीं हुए हैं, सर। अगर मैं फेल हो गया, तो...मैं इस्तीफ़ा दे दूँगा। ----खान का स्वर विरोध से भरा था।

डीसीपी ने कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप कार्यालय से बाहर चला गया। कैदी के साथ बाहर साने इंतज़ार कर रहा था। उसे देखते ही डीसीपी रुक गया।

"देखो, हम तुम्हें शाही गवाह बनाएँगे और माफ़ी भी दिलवा देंगे, बशर्ते तुम सच बोलो," डीसीपी ने उससे नरम लहजे में कहा। लेकिन उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। खान को उस समय उस पर गुस्सा आ गया।

" ये ऐसे नहीं बताएगा।-- ये कहते हुए खान ने उसके बाल मुट्ठी में भींच लिए। वो कराह उठा। " ये... ये कहाँ का न्याय है साहब? -वो कराह उठा। --आपने ही मुझे ऐसा करने के लिए उकसाया और खुद ये अन्याय कर रहे हैं। वो बोला।

डीसीपी उसकी बात सुनकर चौंक गया और खान को घूरने लगा। और खान की पकड़ भी ढीली पड़ गई। वो खुद भी कैदी के इन शब्दों को सुनकर दंग रह गया।

"इसका क्या मतलब है? डीसीपी ने आगे बढ़कर उससे पूछा।

"हाँ, उसने कहा था कि थोड़ा नाटक करो, बाद में छोड़ दूँगा। उसने मुझे इसके लिए सौ रुपये भी दिए थे और अब वो खुद मुझे जेल भिजवाने की कोशिश कर रहा है।-- उस आदमी ने बड़ी बेबाकी से खान को घूरते हुए बताना शुरू किया। अगर उस वक़्त खान की हालत इतनी नाज़ुक न होती, तो वो उसके फ़रिश्तों का मूड अभी ठीक कर देता, लेकिन डीसीपी वहाँ मौजूद था और शौकत की वजह से उसने खान पर शक ज़ाहिर कर ही दिया था। इतने बेबाक और चालाक लोगों से उसका पहली बार सामना हुआ था। ऐसे लोग जो खुद साफ निकल जाएँगे और पुलिस वालों को ही फँसा देंगे। डीसीपी ने अविश्वास से उसकी तरफ़ देखा, तो उसे एक झटका सा लगा। डीसीपी की आँखें खामोशी से सवाल पूछ रही थीं।

"मैं पहले ही कह चुका हूँ कि यह बहुत चालाक लोग है... खान ने उससे कहा

"आप इन शब्दों को बार-बार दोहराकर अपनी बात सही नहीं कर सकते। "डीसीपी का लहजा अप्रिय था। --क्या यह संभव नहीं है कि ये सच कह रहे हों?"

खान ने चिढ़कर कहा, "अगर आप चाहें तो मुझे 40 घंटे बाद फांसी पर लटका सकते हैं।"

मास्टर ब्रेन

97

"मिस्टर साने, उसे मुख्यालय ले चलो, मैं इन धोखेबाजों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि उनकी सात पुश्तें याद रखेंगी। --खान आगे झुका और बोला, "जेल में कोई भी उससे नहीं मिल सकता। कोई व्यक्ति चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो,

"बहुत अच्छा, सर," साने ने ध्यानपूर्वक कहा।

डीसीपी ने कुछ नहीं कहा.

"क्या मैं जा सकता हूँ? मेरा मतलब, क्या मैं अपनी कार दे दूँ या आपकी मँगवा दूँ ?
या आप मेरे साथ जाना चाहते है?"

"नहीं, मैं अपनी गाड़ी लेकर जाऊंगा , तुम जा सकते हो। --डीसीपी ने सहज स्वर में कहा।

खान को लगा कि वह खुश नहीं है, लेकिन शक थोड़ा कम हो गया था। वह सीढ़ियाँ चढ़ गया। खान ने बताया कि वह नीचे उतरा और अपनी गाड़ी में बैठकर चला गया। रास्ते में उसने वायरलेस पर बाले को फ़ोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। जब उसे जकवाब ना मिला, तो उसे एहसास हुआ कि वह भी जा चुका है।

☆☆☆☆☆☆

मास्टर ब्रेन

98

अँधेरे में तीर

"क्या आप ने अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी से निभाने का नतीजा देखा?" बाले ने खान से गुस्से से कहा। वह अभी-अभी घर लौटा था और उसके चेहरे पर थकान के भाव साफ़ दिखाई दे रहे थे।

"दरअसल, कैदी के झूठे बयान ने डीसीपी को हम पर शक पैदा कर दिया है।-- खान ने ठंडे स्वर में कहा।-- और हालात ऐसे हैं कि हम इस पर ज़्यादा सख्ती भी नहीं कर सकते।

"खैर, वर्षों की उत्कृष्ट सेवा एक झटके में नष्ट हो जाए , और आप इसे बुरे विश्वास के रूप में सहन करते हैं।"

"सच्चाई तभी सामने आएगी, और उसके बाद ही हम सोच पाएंगे कि हमें इस आलोचना का जवाब कैसे देना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने ऊपर लगाए जा रहे संदेहों को गलत साबित करें।"

"और ईश्वर की कृपा से इस बार मुकाबला भी ऐसे गुरुओं से है जो अभी भी खुलेआम हमें तिगनी का नाच नचा रहे हैं। क्या अब भी आप उन्हें मास्टर ब्रेन नहीं मानेंगे?

" बाले साहब , मैं उन सबको 48 घंटे के अंदर सलाखों के पीछे डाल दूँगा। वे अपनी चालाकी में बहुत आगे निकल गए हैं।"

"लेकिन आप अभी भी यह नहीं जानते कि उनका अज्ञात बॉस या मास्टरमाइंड कौन है, जो कानून के दायरे में अंधकार पैदा कर रहा है।"

99

मास्टर ब्रेन

मुझे लगता है कि मैंने इसे देख लिया है और अब बहुत जल्द ही मैं इसे अपने हाथों में ले लूंगा।

"तो फिर हार पर हार क्यों कबूल कर रहे हैं ? बाले तो खान से पूछा ।

"कभी-कभी आपको अपने दुश्मन को हराने के लिए पीछे हटना पड़ता है।"

"तो इस बार तुम सैन्य सिद्धांतों से लड़ रहे हैं ?

"देखते जाओ बेटा, कुछ न कुछ तो हो के रहेगा।"

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि आप ने यह सब चुपचाप सहन कर लिया ।"

"मुझे चुपचाप बैठने की आदत नहीं है।"

"शौकत की हालत खराब है, वह कहता है कि मेरी सारी संपत्ति भले चली जाए, लेकिन मुझे फांसी पर लटकाने से बचा लिया जाए ।

"किस बेवकूफ गधे ने उसे बताया कि उसे फांसी दी जा सकती है?"

"उसे तेज भ्रम हो रहा है कि और वह स्वयं को वेरा की मृत्यु के लिए जिम्मेदार मान रहा है।"

"बाले साहब , हमें 48 घंटों के अंदर वेरा को ढूंढना है।मैंने डीसीपी से केवल 48 घंटे का समय लिया है।"

"क्या मुझे वेरा को ढूँढ़ना होगा? बाले आश्चर्य से घूम गया । लेकिन अभी तक, उसका हिसाब किताब भी हो चुका होगा।"

"गधे हो पूरे "

"अच्छा होगा कि आप मुझे कब्रिस्तान का पता बता दें, मैं उसे ढूंढने की कोशिश करूंगा।"

"क्या तुम को लगता है कि उसने सचमुच आत्महत्या कर ली?"

"तो क्या झूठमूठ है?"

"अबे गधे , वह जिंदा है।"

"और जो शव मिला था?

"यह किसी और लड़की का था.

"आपने यह खुलासा उस समय नहीं किया था, है ना?"

"अगर मैंने उस समय बता दिया होता, तो सारा मामला वहीं सुलझ जाता और हम को पता भी नहीं चलता। मैं इस अनजान धोखेबाज़ सरगना की शख्सियत जानता था,

"आप चाहे जो भी कहें, मास्टर ब्रेन निश्चित रूप से अपना काम बहुत चतुराई से कर रहा है।

"अगर मैं कहूँ कि रत्नचंद खुद उसका हथियार था, तो क्या होगा?

"यानि ...?" लेकिन वह खुद एक इज़्ज़तदार आदमी था।

"वो कुछ भी नहीं था, कलकत्ता का एक ठग, जो धोखाधड़ी से गुज़ारा करता था। उसने खुद को करोड़पति शरणार्थी बताकर ठगी की थी, जिसके बदले में उसे वो घर और रेशम मिल मिली थी, लेकिन उसकी आड़ में उसका मालिक उसके ज़रिए उस मिल और उस घर की हैसियत पर तरह-तरह के लोगों से कर्ज़ वसूल रहा था। उस घर के बारे में बाज़बानी अफ़वाहें फैलाकर उसे रहस्यमय और महत्वपूर्ण बनाकर। दरअसल, वो एक तीर से दो शिकार करना चाहता था। एक तो लाखों के लालच में उसमें किसी बेवकूफ़ लालची अमीर आदमी को फँसाना, जिसका पहला मामला साहूकारों से रत्नचंद के साथ था, और दूसरा रत्नचंद को पागलपन का नाटक करवाकर कर्ज़ की पूरी रकम हजम करवाना।

फाल्कन इस हवेली को महत्वपूर्ण और रहस्यमय बनाने की कोशिश में लगा था, किसी मूर्ख अमीर आदमी की तलाश में जो इसे किसी भी कीमत पर खरीद ले। एक आदमी से खबर मेरे पास पहुँची जिसे फाल्कन इस सिलसिले में फँसाना चाहता था और मैंने शौकत पर एक नाटक रच दिया। लेकिन शायद उस मालिक को शक हो गया था कि बात बहुत दूर तक फैल गई है।

"और अगर पुलिस तक पहुँची तो वो कहीं कुछ बोल न दे , इसलिए रिश्वत के ज़रिए रत्नचंद को पागलखाने से भगाने के बाद, उन्होंने उसे भी बुला लिया और मामले को इस तरह ख़त्म किया कि यह एक पागल की खुद्कशी का मामला बन गया।"

"आपको यह सब कैसे पता चला?"

"मैंने आधिकारिक तौर पर कराची पुलिस को रतन चंद की एक तस्वीर भेजी थी और उनका रिकॉर्ड खंगाला था, लेकिन पता चला कि वहाँ ऐसा कोई व्यक्ति था ही नहीं, न ही किसी ने ऐसी कोई संपत्ति छोड़ी थी। इसी दौरान मेरी मुलाकात कलकत्ता पुलिस के एक अधिकारी से हुई, जो एक मामले में गवाही देने यहाँ आए थे। जब मैंने उन्हें रतन चंद की तस्वीर दिखाई, तो उन्होंने उन्हें पहचान लिया। उन्होंने मुझे बताया कि वह कलकत्ता का एक खतरनाक जालसाज़ है, जो पिछले कई सालों से लापता है। उसका असली नाम चंद्र कान्त था। इसी वजह से मुझे इस मामले में पूरी दिलचस्पी हुई।"

"आखिरकार आपको कैसे पता चला कि वह शव वेरा का नहीं था?"

"फाल्कन और वेरा दोनों मेरी नज़रों में थे, और एक बार मैंने उस लड़की को बहुत पास से देखा। मुझे सिर्फ़ उसके हाथ के नाखूनों से ही पता चला कि वह लाश उसकी नहीं थी। वेरा के नाखून लंबे और अंडाकार थे, और मृत हाथ की तर्जनी उंगलियों पर मैंने जो लाल पॉलिश वाले नाखून देखे थे, वे चपटे और फैले हुए थे। "

"मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा।"

"प्रत्येक खास आदमी का पूरी तरह से जायजा किया जाना चाहिए।"

"किसका क्या लेना चाहिए?" बाले हंस दिया

"बको मत, मुझे बेमतलब की हँसी पसंद नहीं है।"

मास्टर ब्रेन

102

मामला अभी यहीं पहुँचा ही था कि गुलाम रसूल ने कॉल की सूचना दी। खान उठे और दूसरे कमरे में गये । रऊफ़ फ़ोन पर बात कर रहा था।

"तुम इतने घंटों से कहाँ थे?" खान ने कठोर स्वर में पूछा।

"मैं भेष बदलकर उनका पीछा कर रहा हूँ।

"वे अब कहाँ हैं?"

"डांडा बीच पर एक लकड़ी के घर में, जो समुद्र तट पर स्थित है।"

"क्या रिपोर्ट है?

"ऐसा लग रहा है कि वे यहां से भागने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इस समय उनको किसी का इंतजार है।"

खान ने कहा, "तुम वहीं रहो, मैं बाले को भेज रहा हूं।"

"जी बेहतर है.

खान ने फोन काट दिया और उसे देखने के लिए कमरे में वापस आ गया।

"अरे, तुम अभी डांडा बीच पर चलो । वहाँ रऊफ़ तुम्हें बीच पर एक कच्चे से घर के पास मिलेगा ।"

"मुझे क्या करना चाहिए?"

"सिर्फ सीधी कार्रवाई।"

"मैं नहीं समझा ?"

"तो सुनो। यह कहकर उसने उसके कान में कुछ फुसफुसाया और उसकी पीठ थपथपाते हुए उसे दरवाजे की ओर धकेल दिया। बाले के निकल जाने के बाद, वह फ़ोन की ओर मुड़ा।

उसने डायल घुमाया और रिसीवर कान पर लगाया। दूसरी तरफ़ से उसे इंस्पेक्टर शाह की आवाज़ सुनाई दी।

खान ने पूछा, "क्या तुमने उसकी लाइन काट दी?"

"येस सर । --शाह का जवाब मिला और खान ने कॉल काट दिया।

****

इकरारनामे

यह वही समुद्र तट पर झोपड़ी जैसा घर था जहाँ वेरा पिछली बार शौकत को लेकर आई थी और जिसे उसने अपनी सहेली का घर बताया था। यह दरअसल विलासिता का एक गुप्त ठिकाना था जिसके बारे में यहाँ आने वाले ख़ास लोगों को ही पता था, लेकिन शाम के बाद यह इस इलाके में हमेशा चर्चा का विषय बना रहता था। शाम के समय भी समुद्र तट पर घूमने आए लोग यहाँ नहीं आते थे, क्योंकि बीच में एक यूरोपीय बंगले का अहाता समुद्र तट तक जाता था। पीछे की ओर संकरी सड़क थी जिससे गाड़ियाँ गुज़रती थीं। फाल्कन और उसके साथी उस समय एक मेज़ के चारों ओर दम साधे बैठे थे। वे गहरी सोच में डूबे हुए थे और उनमें से कोई भी संतुष्ट नहीं दिख रहा था। उनकी नज़रें दरवाज़े की ओर थीं, मानो वे किसी का बड़ी बेचैनी से इंतज़ार कर रहे हों। वेरा उनमें से नहीं थी, लेकिन फाल्कन के असिस्टंट के अलावा, यहाँ एक नया आदमी आया था, जिसका चेहरा किसी जल्लाद जैसा डरावना और काला था। वह कोई मदरासी लगता था। उसके दाहिने गाल पर एक लंबा निशान भी था, लेकिन उसने भी महंगे कपड़े पहने हुए थे।

"समय हो गया है और बॉस अभी भी नहीं आया है।" फाल्कन खड़ा हुआ और बेचैनी से बोला -

वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा।

अमर नाथ ने कहा, "वह मास्टर ब्रेन है और उसकी हरकतें हमारी समझ से परे हैं। उस ने ही हमें आज तक कानून से बचाए रखा है।"

"वाह, लेकिन फिर हमें इस नगरी को छोड़ने का आदेश क्यों दिया गया है? इस भयानक रूप वाले

आदमी ने पूछा.

"उसे खतरा महसूस हुआ होगा। तुम्हें शायद पता नहीं कि यहाँ का सबसे खतरनाक जासूस हमारे पीछे पड़ा है," फाल्कन ने जवाब दिया।

"तो क्या मास्टर ब्रेन उससे डरता है?" इस बार उस आदमी का स्वर कुछ तिरस्कारपूर्ण था।

"नहीं, वह दुनिया का सबसे बुद्धिमान आदमी है, किसी से नहीं डरता। दस साल से वह क़ानून को बेमानी बनाकर अपना धंधा चला रहा है। उसका हर आदेश उचित है और अब हमें उसमें कोई तर्क नहीं ढूँढ़ना चाहिए।" इस बार अमरनाथ ने जवाब दिया।

"मैं कुछ नहीं जानता, इस शहर को छोड़ने से पहले मुझे अपनी कड़ी मेहनत का इनाम चाहिए," डरावने दिखने वाले आदमी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"वह अपने आदमियों के साथ कभी अन्याय नहीं करता। अगर वह न भी करे, तो भी हममें से कोई उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता। वह हर तरह से सुरक्षित है।" फाल्कन का स्वर चेतावनी भरा था।

यह सुनकर वह आदमी चुप हो गया। लेकिन तभी दरवाज़ा ज़ोर से खुला और वह एक पुलिस अधिकारी को चार मातहतों के साथ अंदर आते देखकर चौंक गया। वह सार्जेंट बाले थे।

"कोई भी भागने की कोशिश न करे। मैं आपमें से ही रतनचंद के हत्यारे को गिरफ्तार करूँगा।

यह कहते हुए उसने एक-एक करके उन पर गहरी नज़र डाली, और वह अंदाज़ा लगाए बिना नहीं रह सका कि उनके चेहरों पर वह डर और दहशत नहीं थी जो किसी हत्यारे के पकड़े जाने पर उसके चेहरे पर दिखाई देती है, लेकिन उसकी नज़र इस खूनी आदमी पर रुक गई। उसने उसकी आँखों में एक तेज़ चमक देखी, मानो कोई चील अपने शिकार पर झपटने के लिए पंख फैलाए हुए हो, लेकिन शिकार जान-बूझकर उससे मुँह मोड़ लेता है और उसी पल उस चील ने शिकार पर हमला कर दिया, लेकिन वह बेखबर नहीं था। अगले ही पल उसने बाले पर हमला कर उसे ज़मीन पर गिरा दिया , लेकिन उसने बाले के हाथ से पिस्तौल ज़रूर गिरा दी थी। बाकी पुलिसवाले निहत्थे थे।

यह देखकर उन चारों ने उन पर हमला कर दिया। पुलिसवाले भी कोई मोम के नहीं थे। लेकिन लड़ाई ज़्यादा दूर तक नहीं गई, क्योंकि बाले ने अपनी पिस्तौल फिर से अपने कब्ज़े में कर ली थी। फाल्कन के दूसरे साथियों के पास शायद हथियार नहीं थे, पर उनका काम अपने उस्ताद दिमाग़ के इशारों पर हैरतअंगेज़ करतब दिखाते रहना था। वो भी उन लोगों से जिनका क़ानून से कोई वास्ता नहीं था। बाले ने सिपाहियों को इशारा किया कि आगे आकर उन्हें गिरफ़्तार करें, लेकिन वे अभी आगे बढ़ भी नहीं पाए थे कि एक आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया।

"खबरदार, जो कोई भी अपनी जगह से हिला, उसके सीने में छेद कर दूँगा।'

पुलिसवाले अचानक रुक गए।

"पिस्तौल गिरा दो, सार्जेंट। क्या तुमने मास्टर ब्रेन को कोई मामूली बदमाश समझ लिया था जो उसके आदमियों को गिरफ्तार करने चले आए ? एक अच्छा-खासा डील डौल वाला आदमी दरवाज़े में घुसते ही अपनी कर्कश आवाज़ में बोला। उसने एक स्मार्ट सूट पहना हुआ था, लेकिन उसका चेहरा एक पतले सफ़ेद कपड़े से पूरी तरह ढका हुआ था। उसके एक हाथ में एक छोटा सा सूटकेस था।

फाल्कन और उसके साथियों के मुँह से निकला "मास्टर ब्रेन"। उनके चेहरों पर खुशी की लहर थी।

"बॉस, मुझे इन सालों के चिथड़े उड़ा देने दो। उस ख़तरनाक आदमी ने बाले आदि को ओर देखते हुये गुस्से वाले अंदाज़ में पास आ रहे आदमी से अपने दाँत पीसते हुये कहा।

"नहीं, मैं अपना काम खुद निपटता हूँ," नवागंतुक ने जवाब दिया। उसकी आवाज़ बिल्कुल वैसी ही थी जैसी खान ने फ़ोन पर सुनी थी।---मुझे बिना वजह खून-खराबा पसंद नहीं। इन लोगों को सामने वाले कमरे में बंद कर दो।

" चलो उधर " मास्टर ब्रेन ने बाले की पिस्तौल उठाकर उसकी जेब में डालते हुए अपने आदमियों को आदेश दिया। "चलो, मूर्खों," उस डरावने आदमी ने बाले की बाँह पकड़कर धक्का देते हुए कहा।

"तुम बहुत बहादुर बन रहे हो, मेरे प्यारे, लेकिन पुलिस तुम्हें जाने नहीं देगी। तुम्हारा बॉस भी पंजे में आएगा," बाले उससे बोला , और वह और भी क्रोधित हो गया।

"अरे, चलो भी। मेरा बॉस तुम्हारे जैसे दस हज़ार लोगों को कठपुतली की तरह नचा सकता है," उसने कहा और उन्हें एक के बाद एक कमरे में धकेल दिया।

"अब ये तब खोले जाएँगे जब तुम इस शहर से बहुत दूर चले जा चुके होगे । --मास्टर ब्रेन ने एक पैर कुर्सी पर रख कर खड़े होते हुए कहा।

"हम तो बस आपके ऑर्डर का इंतज़ार कर रहे थे। --फाल्कन जल्दी से बोला।

"मेरे आदेशों का या अपने मुआवज़े का ?" मास्टर ब्रेन ने कर्कश स्वर में कहा।

इस पर फाल्कन ने अपना सिर झुकाया और धीमे स्वर में कहा।

"सच बात तो यही है, बॉस।"

"मैं समझ गया। मास्टर ब्रेन मुस्कुराया और मैं खुद तुम्हें भिखारियों की तरह दूसरे शहरों में नहीं भेजना चाहता। तुम्हारा हिसाब इस सूटकेस में है, लेकिन उससे पहले मैं तुम लोगों से एक और बात चाहता हूँ।--बास ने आदेश दिया,

"हुक्म फरमाईए बॉस---वे चारों एक ही साथ बोले।

"तुममें से हर एक को मेरे लिए यह लिखकर देना चाहिए कि तुमने मेरे लिए क्या-क्या किया है, ताकि जब तुम मुझे छोड़कर जाओ, तो कोई भी मेरे खिलाफ बोलने की हिम्मत न करे।--- उसका लहजा आदेशात्मक था।

"लेकिन... फाल्कन कहना चाहता था।

"मैं सावधानी बरतने से कभी नहीं कतराता। अगर तुम्हें अपना हिस्सा चाहिए तो लिख दो, वरना मैं तुम्हारा कोई ज़िम्मेदार नहीं रहूँगा।

उसकी बात सुनकर सब डर गए।

"मालिक, तुम्हारा हुक्म न मानने की हिम्मत कौन कर सकता है, मगर ये तो हमारी मौत के वारंट होंगे -- अमरनाथ ने हिम्मत जुटाई और अपनी बात कह दी।

मास्टर ब्रेन

108

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?" मास्टर समरीन का स्वर अचानक भयानक हो गया और उसकी आँखों से चिंगारियाँ फूटने लगीं।
"मुझ पर, तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?" उसने अपनी ओर उँगली उठाकर कहा। ---जिसने तुम्हें कदम-दर-कदम खतरों से बचाया है, जिसके कहने पर तुम्हें जीवन की सर्वोत्तम नेमतों से समृद्ध किया है। तुममें से कौन है जो इससे इनकार करता है?" वह दहाड़ने लगा ।

"कोई नहीं, बॉस। हमें लिखने में खुशी होगी। --उस डरावने चेहरे वाले को छोड़कर सबने कहा.

"तुम चुप क्यों हो?" मास्टर ब्रेन ने उसे चुप देखा और कठोर स्वर में कहा।

"मालिक, मैंने तुम्हारे आदेश पर रत्नचंद को मारा था। मैंने उसे तुम्हारे लिए फाँसी पर लटकाया था और तुम मुझसे कबूलनामा लिखवाना चाहते हो। उसने विरोध भरे स्वर में कहा।

"अरे, तो तुम हो जो अब मुझ पर भरोसा नहीं करते, जबकि मैं तुम्हें जब चाहता, फाँसी पर चढ़वा सकता था। खैर, अपनी मन की शांति के लिए, तुम इस स्वीकारोक्ति में लिख सकते हो कि तुमने मेरे आदेश पर रत्नचंद को मारा, बस।-- इतना कहते हुए मास्टर ब्रेन का स्वर नरम पड़ गया।

"हाँ, मैं आपके लिए ऐसा एक पत्र तो सौ बार लिख सकता हूँ," उन्होंने जल्दी से कहा।

"लो, अपन इकरारनामा चार अलग-अलग कागज़ों पर लिखो। मैं तुम्हें सिर्फ़ दस मिनट देता हूँ। फिर मैं तुम्हारा मुआवज़ा दे कर वापस अपनी यात्रा पर निकल जाऊँगा। --यह कहकर उसने अपनी जेब से तह किए हुए सफ़ेद कागज़ निकाले और उनके सामने मेज़ पर रख दिए।

"फाल्कन, तुम्हारे पास कलम है, जिसके पास नहीं है उसकी मदद करो, --यह कहते हुए वह बड़े कमरे से सटे खाली कमरे में चला गया। वहाँ एक बेंत की एक आराम कुर्सी थी। वह उस पर आधा लेट गया। उसके हाथ में पिस्तौल थी।

मास्टर ब्रेन

109

और वहीं से बड़े कमरे में चल रही कार्यवाही देख रहा था। उसने देखा कि पहले तो वे थोड़ा हिचकिचा रहे थे, लेकिन जब अमरनाथ ने अपना अपराध स्वीकार करना शुरू किया, तो बाकी लोग भी लिखने बैठ गए।

काम दस मिनट से भी कम समय में पूरा हो गया। उसने सूटकेस उसी बड़े कमरे में इस तरह रखा था कि वह उसकी आँखों के सामने था, लेकिन किसी ने भी उसे छूने की हिम्मत नहीं की। जब वह बाहर आया, तो चारों खड़े हो गए। उन्होंने चुपचाप उसे अपने कागज़ थमा दिए। वह कुर्सी पर टेक लगाकर खड़ा हो गया और उन्हें पढ़ने लगा। ये उनके इकबालिया बयान थे जिनमें उन्होंने मास्टर ब्रेन के आदेश पर की गई सभी जालसाजी और अपराधों का सारांश दिया था। नीचे उनके हस्ताक्षर थे, लेकिन उस भयानक...चेहरे वाले आदमी ने अपने कबूलनामे में मास्टर ब्रेन के आदेश पर रत्नचंद को फांसी देने का विस्तृत विवरण दिया।

इसका ज़िक्र करने के बावजूद, उसने नीचे हस्ताक्षर नहीं किए थे। वह डरा हुआ था।

"इस पर दस्तखत कर दो," मास्टर ब्रेन ने उसे बंदूक की नोक पर लेते हुए आज्ञाकारी लहजे में कहा। "यह चालबाजी मुझ पर काम नहीं करेगी।"

उस आदमी को नीचे हस्ताक्षर करने थे, लेकिन ऐसा करते समय उसका हाथ काँप रहा था, हालाँकि वह खुद इतना भयानक लग रहा था कि बदमाश आदमी भी उसकी शक्ल देखकर डर जाते। उसने अपना कबूलनामा भी मास्टर ब्रेन को सौंप दिया, जिसका आखिरी पन्ना उसके हाथ में था। उसने अपना नाम मंगत लिखा।

"ठीक है, अब सब लोग आगे की पंक्ति में खड़े हो जाओ।" मास्टर ब्रेन ने कागज मोड़कर जेबों में रखते हुए उन्हें आदेश दिया। और वे जल्दी से एक पंक्ति में खड़े हो गए, इस उम्मीद में कि अब उन्हें हज़ारों डॉलर मिलने वाले हैं।

"सावधान, कोई हिला तो गोली मार दूँगा। मास्टर ब्रेन ने कहा।

और अपनी दूसरी जेब से एक दूसरी पिस्तौल भी निकाल ली। और वे सब सकते में आ गए।"

"लेकिन बास..." मंगत ने रुंधी हुई आवाज़ में कहना चाहा।

"मैं तुम्हारा बॉस नहीं हूँ, बेवकूफ़। यह तुम्हारी एय्यारी की मौत है।" यह कहते हुए मास्टर ब्रेन सब ने अपना सफ़ेद मुखौटा उतार फेंका और आश्चर्य और डर से पीले पड़ गए।

सुपरिंटेंडेंट ख़ान उनके सामने खड़े थे।

फिर सबको बंदूक की नोक पर रखते हुए, खान ने उस कमरे का दरवाजा खोला जिसमें बाले और उसके साथी एक साथ बंद थे।

"बाहर आओ, सब ," उसने पुकारा, और वे सभी बाहर आ गये।

“येस , मास्टर ब्रेन? बाले खान के सामने अटेन्शगन हो गया । उसके होठों पर एक मुस्कान थी.

"पहले उन सब को हथकड़ियाँ पहनाओ ," खान ने आदेश दिया, और सिपाही आज्ञा मानने के लिए दौड़ पड़े।

फ़ालकन और उसके साथियों ने कोई हरकत नहीं की। उनके सिर नीचे झुके हुए थे, और मंगत की हालत सबसे ज़्यादा खराब थी।

"उस गाँव की देहाती लड़की को वेरा जैसा कपड़ा पहनाकर ट्रेन के आगे किसने फेंका था?

"तुमने ?" उसने मंगत के बाल मुट्ठियों में पकड़कर खींचते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता --मंगत ने इंकार किया ।

"खैर, मुझे पता है कि वो भी तुम ही थे। इस कबूलनामे के अलावा, वो काम भी तुम्हारा ही था। अंगूठे के निशान भी ये साबित कर देंगे। वो तो मद्रास पुलिस के पास जाने के बारे में पहले सोचा ही नहीं था, वरना तुम इतने दिन आज़ाद नहीं घूम पाते। मैंने तुम्हारे सारे रिकॉर्ड मंगवा लिए हैं।"

खान के इन शब्दों से मंगत एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

"एक अपराध सिद्ध हो चुका है और अब दूसरे को छिपाना व्यर्थ है, क्योंकि सजा तो वैसे भी वही होगी।

मास्टर ब्रेन

111

-- खान ने अचानक नरम स्वर अपनाया और देखा कि मंगत सोच में डूबा हुआ है।

"मैंने वह भी उनके आदेश पर किया।

"किसके आदेश पर?

"मास्टर ब्रेन "

"कौन है ये?"

"हममें से किसी को नहीं पता। उसके आदेश या तो फ़ोन पर मिलते हैं या मैसेज के ज़रिए," मंगत ने कहा। अब उसने मुँह खोला था।

"वह लड़की कहाँ से आई?"

मंगत ने कहा, "वीरा उसे लेकर मेरे पास आई थी। मैं उसे मनोरंजन के लिये रेलवे लाइन के उस पार एक झोपड़ी में ले गया था और वहां मैंने उसे बेहोश कर दिया और रात में उसे रेलवे लाइन पर फेंक दिया।"

"सुना, बाले साहब। अब तो आपको यकीन हो गया होगा कि वो वेरा नहीं, बल्कि गोरे बदन और उसी कद-काठी वाली कोई गाँव की लड़की थी। और सबसे पहले, उसके पैरों की उंगलियों पर चांदी के बिच्छुओं के निशान थे, जिन्हें उतार दिया गया था। ये बिच्छूये सिर्फ़ गाँव की लड़कियाँ ही पहनती हैं। इसके अलावा, शहर के किसी भी हिस्से से किसी लड़की के लापता होने की कोई सूचना नहीं मिली, न ही किसी ने शव लेने की बात कही। ज़ाहिर है, कोई गाँव का ही रहा होगा और वहाँ के लोग नदी, नाले या जंगल में उसे ढूँढ़ने के बाद निराश हो गए होंगे। --खान ने बताया।

"लेकिन वेरा इसे कैसे और कहाँ से लाई?" बाले ने पूछा।

"केवल वेरा ही बता सकती है। हाँ, फाल्कन, वेरा कहाँ है? " --खान फाल्कन की तरफ मुड़ा

मास्टर ब्रेन

112

"उसी ने वेरा को बुला लिया था," फाल्कन ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"कहाँ?

“ ये वेरा ने नहीं बताया "

वे अब बाहर खड़ी बड़ी पुलिस स्टाफ कार में बैठे थे, जिसे बाले स्वयं चला रहे थे।

"क्या वेरा ने मास्टर ब्रेन को पहचान लिया?"

"हाँ, शायद। क्योंकि उसकी ज़्यादातर आज्ञाएँ वेरा के ज़रिए हम तक पहुँचती रहीं।"हाँ," फाल्कन ने कहा.

"और अब उसका आदेश कौन लाएगा?"

"कांति लाल। वह बॉस का दाहिना हाथ है।"

"ओह, वही कांतिलाल जिसने लछमन दास को एक लाख का चूना लगाया था?" खान ने कहा, लेकिन जवाब देने के बजाय फाल्कन चुप हो गया।

रास्ते में बाले ने गैराज के सामने स्टाफ कार रोकी। खान की कार वहीं थी, शायद उसके कहने पर यहाँ छोड़ी गई थी। खान स्टाफ कार से उतरकर उसमें बैठ गया।

खान ने कार से बाहर झांकते हुए कहा, "बाले , तुम्हें इन सब को हिरासत में रख कर , बुलार्ड पीटर क्षेत्र में मैंगानिया बिल्डिंग के सामने मुझसे मिलो ।"

"ओके ,- यह कहते हुए, उनके प्रत्येक स्टाफ कार में अपने कर्मचारियों को आगे बढ़ाया।

****

मास्टर ब्रेन

113

मास्टर ब्रेन

खान गाड़ी चला रहा था कि तभी वायरलेस रिसीवर का इंडिकेटर बल्ब चमकने लगा। उसने स्विच चालू किया ।

इंस्पेक्टर शाह की आवाज़ आई--- सुपरिंटेंडेंट ख़ान.... ज़रा जल्दी आइए

"ख़ान, इधर... बोलिए... ओवर --

"सर उसने तीन बार फ़ोन पर किसी मास्टर ब्रेन को काल किया था।

"वो इस समय कहाँ है?"

"मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह अपने घर से कैसे गायब हो गया। निगरानी बहुत कड़ी थी।- ओवर "

"क्या जो नंबर डायल कर रहा था वह दिखाई दिया?"

" जी सर , नंबर 3125 ओवर "

"क्या लाइन काटकर उसकी कॉल रिकॉर्ड कर ली गई है?

"जी हाँ

खान ने कहा, "ठीक है, वहां रुको और जब मैं कहूँगा , तुम उसके घर पर छापा मारोगे और तलाशी लोगे।"

"जी , बेहतर है।"

खान ने स्विच बंद किया , डैशबोर्ड खोला और नई टेलीफोन डायरेक्टरी निकाली।

वह एक हाथ से स्टीयरिंग व्हील पकड़े हुए था। फिर उसने गाड़ी पार्क की और डायरेक्टरी में नंबर ढूँढ़ने लगा। नंबर देखकर वह हैरान रह गया। नंबर , पता कांतिलाल का था,

उसने निर्देशिका बंद की, उसे डैशबोर्ड में रखा और कार की गति बढ़ा दी।

उसने बुलार्ड रोड पर मिंगनिया बिल्डिंग के सामने फुटपाथ पर गाड़ी रोकी और उतरकर बिल्डिंग में दाखिल हुआ। नीचे उसने कई कंपनियों के बोर्ड देखे, लेकिन तीसरी मंजिल के चौथे ब्लॉक में उसे कांतिलाल का नाम नहीं दिखा, न ही वह कोई एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट फर्म थी। फिर भी, वह लिफ्ट के ज़रिए तीसरी मंजिल पर पहुँच गया। जब वह दफ्तर में दाखिल हुआ, तो उसने वहाँ एक अधेड़ उम्र के आदमी को बैठे देखा। उसके बाल सफेद थे और उसने चश्मा पहना हुआ था। जब खान ने उससे कांतिलाल के दफ्तर के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि पहले यहाँ कांतिलाल इम्पोर्ट्स एक्सपोर्ट का दफ्तर था, लेकिन उसकी फर्म कुछ समय पहले दिवालिया हो गई थी। अब वहाँ मगनभाई देसाई का दफ्तर है।

खान को शुरू से ही ऐसी ही उम्मीद थी। वह चुपचाप बाहर आ गया। जो कुछ हुआ था, वह सच था। दूसरे लोगों ने भी उसे बताया था कि कांतिलाल की फर्म दिवालिया हो गई है। वह बाहर आया और बाले के आने और कुछ नया प्रोग्राम बनाने करे लिए इंतज़ार करने लगा।

वह इमारत के सामने फुटपाथ पर अपनी कार से उतरा और एक साधारण से होटल में दाखिल हुआ। यहाँ से फुटपाथ, सड़क और बिल्डिंग का प्रवेश द्वार साफ़ दिखाई दे रहा था। पता नहीं, बाले को इतना समय क्यों लग रहा था।

खान झुँझलाते हुए कार में बैठने ही वाले थे कि विंडस्क्रीन के पास लगे शीशे में उन्होंने बिल्डिंग के प्रवेश द्वार पर एक कार रुकी देखी। उन्होंने मुड़कर देखा। उन्हें ड्राइवर पर शक हुआ, क्योंकि उसकी खिड़कियाँ काली थीं, लेकिन अगले ही पल वे चौंक गए जब उन्होंने एक लड़की को कार से उतरते देखा। पीछे से देखने पर वह बिल्कुल वेरा जैसी लग रही थी। वह काफी घबराई हुई लग रही थी।

संयोगवश, उसी समय कार के ड्राइवर ने वेरा से कुछ कहा, जिससे वह पलटकर उसकी ओर देखने लगी।

खान उसे अच्छी तरह पहचान गया। हालाँकि उसका चेहरा रंग से थोड़ा बदला हुआ लग रहा था। वह कारा वेरा को छोड़कर आगे बढ़ गई। वेरा अब इमारत में दाखिल हो चुकी थी। खान ने जल्दी से एक कागज़ पर कुछ लिखा और उसे अपनी कार की सीट पर रख दिया और जल्दी से सड़क पार करके फिर से इमारत में दाखिल हो गया। इस बार वह लिफ्ट से ऊपर जा रहा था और वेरा उससे पहले ही निकल चुकी थी।

तीसरी मंजिल पर इस दफ़्तर का दरवाजा इस वक़्त बंद नज़र आया , जहां अभी कुछ देर पहले उस ने अंतिलाल की फ़र्म के बार के बारे में पूछा था। इस वक़्त दरवाज़ा ताले से बंद था। ख़ान ने इधर-उधर देखा, शायद कोई अर्दली दिख जाए। लेकिन उस वक़्त वहाँ कोई नहीं था। फिर वो दरवाज़े के पास आकर खड़ा हो गया।

वह सोच रहा था, एक तो इतनी जल्दी यहाँ ताला कैसे लग गया, और दूसरा, वेरा कहीं गायब हो गई, लेकिन उसी समय उसे बंद कमरे से एक हल्की सी आवाज सुनाई दी और वह चौंक गया। आवाज अंदर से आ रही थी, हालाँकि ताला बाहर लगा था। उसने दरवाजे पर कान लगाया और किसी के बहुत धीमी आवाज में बात करने की आवाज सुनी।

खान ने अपनी जेब से तेज स्टील के तार का एक टुकड़ा निकाला और उसे ताले में डालकर घुमाने लगा। ताला सामान्य तालों जैसा ही था, वह कुछ ही देर में खुल गया। अब उसने दरवाजा खोला और अंदर झाँका। इस कमरे में कोई नहीं था। वह जल्दी से अंदर दाखिल हुआ। आवाज अंदर दूसरे कमरे से आ रही थी। वह उस डटवाजे के करेब आया अंदर घुस गया ।

"यकीन मानो, मैं वहीं से आ रही हूँ। मुझे डोरोथी से पता चला है कि हमारे सभी आदमी पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए हैं।"

"ये तो बहुत बुरा हुआ। महरेश कहाँ है? एक भारी मर्दानी आवाज़ आई। यह वही आवाज़ थी।

जो खान ने एक बार फोन पर सुनी थी।

"मैं उसे दो बार फ़ोन करना चाहा , लेकिन उसकी तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया, मुझे नहीं पता वो कहाँ है। --वेरा ने उसे बताया।

"खैर, हमें तुरंत यहाँ से निकल जाना चाहिए। हम महरेश को भी ढूँढ लेंगे। --वही आवाज़ फिर बोली। खान ने न सिर्फ़ उसका टेप रिकॉर्ड कई बार चलाकर अभ्यास किया था, बल्कि उसके कान उससे पूरी तरह परिचित हो गए थे। हज़ारों आवाज़ों के बीच भी वह उसे पहचान सकता था।

"लेकिन मेरे और महरेश के अलावा किसी को नहीं पता कि आप ही मास्टर ब्रेन हैं, इसलिए मेरा आपके साथ जाना ठीक नहीं होगा। --वेरा कहने लगी।

"डार्लिंग, मैं अपनी जान देकर भी तुम्हें नहीं छोड़ सकता। हम साथ जिएंगे और साथ मरेंगे।

"खैर, कानून तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन अगर पुलिस को इस गाँव की लड़की की हत्या का राज़ पता चल गया, तो मैं ज़रूर कानून के शिकंजे में फँस जाऊँगी। मैं ही थी जो इसे काम के बहाने बहला-फुसलाकर करौली से इधर लाई था, और मैंने ही इसे मँगत के हवाले किया था।"-- वेरा कह रही थी, हालाँकि उनमें से किसी ने भी इसकी कल्पना नहीं की थी कि कानून का कठोर हाथ अपना काम कर रहा था और उसकी बातें दरवाजे के पीछे एक पॉकेट रिकॉर्डर पर दर्ज हो रही थीं।

जब खान ने द्वार खुलने की आवाज सुनी, तो उसने जल्दी से रिकार्ड उठाया और उसे अपनी जेब में रख लिया तथा खड़ा हो गया।

"चिंता मत करो, प्रिये, मेरे रहते तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता, कोई आंच नहीं आएगी । -- मास्टर ब्रेन जाते हुए वेरा से कह रहे थे।

" आंच कहाँ ..... ? , अब तो लपटें सिर तक पहुँच गई हैं। अपने हाथ उठाओ --- खान की आवाज़ सुन

वे ज़ोर से उछल पड़े। और खान उनके सामने प्रकट हुआ।

"क... तुम कौन हो?" वेरा हकलाते हुए बोली।

खान ने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारे जैसे लोगों के लिए मुझे मृत्यु के दूत का काम निभाना पड़ता है।"

"ए मिस्टर, आप पिस्तौल लेकर मेरे कार्यालय में कैसे आये?" मास्टर ब्रेन ने मुँह बनाकर कहा.

"ड्रामा खत्म हो गया, मिस्टर कांतिलाल, आपका धोखा बेनकाब हो गया है और सब साफ़ हो गया है। मेरे पास न सिर्फ़ आपके आदमी हैं, बल्कि उनके इक़बालिया बयान भी हैं, बल्कि इकरारनामे भी मेरे साथ हैं और मँगत ने वीरा के बारे में अपना विस्तृत बयान दे दिया है।-------- खान दीवार की तरह उसके सामने खड़ा हो गया और बोला। उसने देखा, वीरा का चेहरा पीला पड़ गया था। वह बेबस होकर कांतिलाल को देख रही थी।

"फिर मुंह की खाओगे। --कांतिलाल हंसा।

लेकिन जवाब देने के बजाय, खान ने चाहा कि उसके हाथ में हथकड़ियाँ डाल दे , लेकिन ठीक उसी समय उसने महसूस किया कि कोई कठोर चीज उसकी पीठ पर दबाव डाल रही है।

"ख़ान साहब, इस झंझट की कोई ज़रूरत नहीं है। मास्टर ब्रेन को गिरफ़्तार करना आपका काम नहीं है।

यह आवाज़ किसकी थी? ख़ान ने पलटकर देखा तो ये मेहरीश था ।

"चलो, यहाँ तुमसे मिलकर अच्छा लगा, मैं भी तुम्हें ही ढूँढ रहा था। --खान ने कहा और कांति ने मुंह टेढ़ा किया ।

"पिस्तौल मुझे सौंप दो और मरने के लिए तैयार हो जाओ। --मेहरेश दहाड़ा। खान को मजबूरन पिस्तौल गिरानी पड़ी। मेहरेश आगे बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि वह खान की छाती पर निशाना साध पाता, एक गोली चली और मेहरेश का हाथ लड़खड़ाने लगा। उसने पलटकर देखा तो सार्जेंट बाले दरवाजे पर खड़े थे। उनके दोनों हाथों में पिस्तौलें थीं। खान मुस्कुराया।

"चलो, अपने सरकारी गहने पहन लो, मास्टर ब्रेन। तुमने अपनी मर्ज़ी से बहुत ऐशो-आराम की ज़िंदगी जी ली है, अब कुछ दिन शाही मेहमानखाने का चक्कर लगा लो। ----यह कहते हुए खान ने खुद अपनी जेब से एक हथकड़ी निकाली और कांतिलाल के हाथ में डाल दी। और महरेश को बाले ने पकड़ लिया । वेरा स्तब्ध खड़ी रही।

" और तुम क्या पहनोगी, डार्लिंग - चूड़ियाँ या स्टील केर गहने ? बाले अब वेरा के पास गया और पूछा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, उसका सिर झुका हुआ था।

"काश उस समय मेरा जागीरदार यहां होता, तो वह इस तरह के अंदाज पर चार सौ लोगों की जान उधार लेकर खुद को कुर्बान हो गया होता ।"

"चलो अब वहीं बकवास करना," खान ने कांतिलाल को दरवाजे की ओर धकेलते हुए बाले से कहा।

बिल्डिंग में मौजूद लोग उन्हें हैरानी से देखने लगे। खान ने जिस अधेड़ उम्र के आदमी को पहले ऑफिस में देखा था, वह गायब हो गया था, शायद डर के मारे भाग गया था। और खान ने उस पर ज़्यादा ध्यान भी नहीं दिया, क्योंकि उसे वे सब लोग मिल चुके थे जिन्हें वह कब से ढूँढ़ रहा था।

****

अगले दिन, पुलिस मुख्यालय के जाँच कक्ष में हुई शिनाख्त परेड में लछमन दास ने मेहरिष को देखकर पुष्टि कर दी कि यही वह दलाल है जो उसे निगम कार्यालय में मिला था और जिसने ठेका दिलाने का वादा किया था और उसे काल्पनिक अधिकारी (कांति लाल) के पास पहुँचाया था। कांतिलाल की कुल संपत्ति और पूँजी लगभग 30 लाख थी, जिसमें से आयकर अधिकारियों को सिर्फ़ 5 लाख की जानकारी थी। मेहरिष भी करोड़पति निकला, यह अलग बात थी। अगले दिन यह भी पता चला कि वीरा मेहरिष की पत्नी थी, जिसके साथ कांतिलाल के अवैध संबंध थे और वह उसके इशारों पर नाचती थी।

मास्टर ब्रेन

119

इस रहस्योद्घाटन के बाद बाले ने आह भरते हुए कहा, "यह बहुत बड़ी खुशकिस्मती है कि भाई मँगत को यह पुरातात्विक कलाकृति नहीं मिली।"

"आपका क्या मतलब है?"

"मैं सभी विवाहित महिलाओं और पुरुषों को आदर्श मानता हूं।"

"अंगूर खट्टे हैं, इसलिए?"

"अगर तुम मुझे ऐसे चैलेंज करोगे तो मैं इस साल चार बार शादी करूंगा।

"पहले एक करो और फिर मुझे दिखाओ।"

"करके दिखाना शरीफों का ढंग नहीं है। वे करते हैं और जेब में रख लेते हैं। --यह कहते हुए, बाले ने अपनी जेब से एक तस्वीर निकाली और सामने मेज़ पर रख दी। और खान बेकाबू होकर हँस पड़ा। तस्वीर में, बाले लेडी रामा राव की मोटी काली बावरचीन के साथ खड़ा था।

"क्या बकवास हे?"

"बेचारी ने बड़े अफ़सोस के साथ ये तस्वीर खिंचवाई थी। वो कहती थी कि मेरा मरा हुआ खस्म बिल्कुल तुम्हारे जैसा दिखता है। बस मुझे तुम्हारे साथ एक तस्वीर लेने दो। --बाले ने मासूमियत से कहा।

"मुझे पता है कम्ब्खत, तुमने यह तस्वीर उन लड़कियों को निराश करने के लिए रखी होगी जो पीछे पड़ जाती हैं ।" खान हँसा।

"आपके मास्टर ब्रेन --बाले ने अपना हाथ उठाया और कहा।

"बस अब चले जाओ, मुझे केस तैयार करना है।"

"शौकत रिहा हो गया है, है ना?"

"वह कल रात अपने घर पहुंच गया ।"

****

एक घंटे बाद, बाले शौकत के कार्यालय में था, और शौकत उसके सामने बैठा था, अपने दोनों कान पकड़े हुए।

" बेटे जागीरदार , अगर अब तुम अपनी इच्छा से ऐसे कभी भी उड़ान भरोगे तो तुम्हें और भी बुरा अंजाम भुगतना पड़ेगा।"--बाले ने कुर्सी पर पैर फैलाकर कहा, - उठक बैठक चालू हो जाये

शौकत की नसें फिर टेढ़ी हो गईं।" और उठक बैठक चालू हो गयी

"मियां खान, शर्म करो, तुम ही तो हो जिसने मुझे इस मुसीबत में डाला था ।--उसने उठक बैठक करते हुये कहा.

"अरे, जाओ, जाओ।-- ऐसे ही उठक बैठक चलते रहने दो , वरना मैं अभी तुम्हारी परी बेगम को बुलाकर सब पोल खोल दूँगा।

हांफते हुए उसने कहा, "अरे, पचास तो हो चुके , बस ।"

"अरे होने दो , पाँच और , पचपन पूरे करो --बाले ने हाथ हिलाते हुये कहा

"अल्लाह तुझे बर्बाद कर दे, कमीने," शौकत बड़बड़ाने लगा, लेकिन उठक बैठक फिर भी जारी रही .

*****खत्म *****

sjeet